Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

(सूरः नूर : 4-5)

(अनुवाद) आप में से जो ईमान लाए हैं और अच्छे कर्म करते हैं उनसे अल्लाह ने पक्का वादा किया है कि वह उन्हे धरती में ख़लीफ़ा ज़रूर बनाएगा जैसा कि उसने उनसे पहले लोगों को खलीफा बनाया।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 8
अंक-20-21

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

27 शावाल 4 जुलकाद 1444 हिज्री कमरी, 18-25 मई अमान 1402 हिज्री शम्सी, 18-25 मई 2023 ई.

ख़िलाफ़त नंबर

तुम्हारे लिए दूसरी कुदरत का भी देखना आवश्यक है। और उसका आना तुम्हारे लिए उत्तम है क्यों कि वह सदैवी है जिस का काल कयामत तक नहीं टूटेगा मैं ख़ुदा की एक साक्षात् क़ुदरत हूं। तथा मेरे बाद कुछ और वजूद होंगे जो दूसरी क़ुदरत के स्वरूप होंगे

इर्शादात-ए-आलीया सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

"अतः हे प्रियो जब कि पुरातन से अल्लाह की पद्धति यही है कि ख़ुदा तआला दो क़ुदरतें दिखलाता है ताकि विरोधियों की दो झूठी ख़ुशियों को मिटा कर दिखलादे। अतः अब सम्भव नहीं है कि ख़ुदा तआला अपनी पुरातन पद्धति को छोड़ देवे। इस लिए तुम मेरी इस बात से जो मैंने तुम्हारे पास वर्णन की दुखी मत हो और तुम्हारे दिल परेशान न हो जाएं क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना आवश्यक है। और उसका आना तुम्हारे लिए उत्तम है क्यों कि वह सदैवी है जिस का काल कयामत तक नहीं टूटेगा और वह दूसरी क़ुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊँ। परन्तु मैं जब जाऊँगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो सदा तुम्हारे साथ रहेगी जैसा कि ख़ुदा का ब्राहीने अहमदिय्या में वचन है जैसा कि ख़ुदा फ़र्माता है कि मैं इस जमाअत को जो तेरे मानने वाले हैं क़यामत तक दूसरों पर विजय दूंगा। अतः आवश्यक है कि तुम पर मेरी जुदाई का दिन आवे ताकि इसके पश्चात् वह दिन आवे जो सदैवी वचन का दिन है वह हमारा ख़ुदा वचनों का सच्चा और निष्ठावान और सच्चा ख़ुदा है वह सब कुछ तुम्हें दिखाएगा जिस का उसने वचन दिया यद्यपि यह दिन दुनिया के आख़री दिन हैं और बहुत बलाएँ हैं जिन के उतरने का समय है पर अवश्य है कि यह दुनिया कामय रहे जब तक वह सारे वचन पूरे न हो जाएँ जिनकी ख़ुदा ने ख़बर दी मैं ख़ुदा की ओर से क़ुदरत के रूप में प्रकट हुआ तथा मैं ख़ुदा की एक साक्षात् क़ुदरत हूं। तथा मेरे बाद कुछ और वजूद होंगे जो दूसरी क़ुदरत के स्वरूप होंगे। अतः तुम ख़ुदा की दूसरी क़ुदरत के इंतेज़ार में एकत्र हो कर दुआ करते रहे। तथा चाहिए कि हर एक नेकों की जमाअत हर एक देश में एकत्र होकर दुआ में लगे रहें। ता दूसरी क़ुदरत आकाश से उतरे। तथा तुम्हें दिखा दे कि तुम्हारा ख़ुदा ऐसा क़ादिर ख़ुदा है। अपनी मौत को निकट समझो तुम नहीं जानते कि किस समय वह घड़ी आ जाएगी।

और चाहिए कि जमाअत के बुज़ुर्ग जो पवित्र आत्मा रखते हैं मेरे नाम पर मेरे बाद लोगों से बैअत (दीक्षित) लें। ख़ुदा तआला चाहता है कि उन समस्त रूहों को जो ज़मीन के विभिन्न आबादियों में बसी हैं। क्या युरोप और क्या एशिया उन सब को जो नेक स्वभाव रखते हैं तौहीद (एकेश्वरवाद) की ओर खींचे और अपने बन्दों को एक धर्म पर एकत्र करे। यही ख़ुदा तआला का उद्देश्य है। जिसके लिए मैं दुनिया में भेजा गया। अतः तुम इस उद्देश्य की पैरवी करो, परंतु नरमी और उच्च आचरण और दुआओं पर ज़ोर देने से। और जब तक कोई ख़ुदा से रूहल क़ुद्स (पवित्र आत्मा) पाकर खड़ा न हो सब मेरे बाद, मिल कर काम करो।"

(अल् वसीयत)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

क्रम	विषय सूची	पृष्ठ
1	इर्शादात-ए-आलीया सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम	1
2	जमाअत से थोड़ा सा भी जुदा होंने वाला व्यक्ति ऐसा है जैसे उसने इस्लाम छोड़ दिया हो (हदीस)	2
3	ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 14 अप्रैल 2023 ई.	3
4	ख़िलाफ़त: एक सुरक्षित क़िला	9
5	हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दुआ की स्वीकृति के विषय में ईमान में बढ़तोरी करने वाली घटनाएँ और दुआओं के बारे में हुज़ूर अनवर की तहरीकात और नसाहे	13
6	तर्बीयत-ए-औलाद और अहमदी माओं की ज़िम्मेदारियाँ, मुहब्बत-ए-इलाही, नमाज़, तिलावत, ख़िलाफ़त से मुहब्बत और उच्च आचार	17
7	रिपोर्ट तर्बियती जलसा	21
8	हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा सितंबर, अक्तूबर 2022 ई. भाग-8	22

مَنْ خَرَجَ مِنَ الْجَمَاعَةِ قِيْدَ شِبْرٍ
فَقَدْ خَلَعَ رِبْقَةَ الْإِسْلَامِ مِنْ عُنُقِهٖ

जमाअत से थोड़ा सा भी जुदा होंने वाला व्यक्ति ऐसा है जैसे उसने इस्लाम छोड़ दिया हो (हदीस)

प्यारे आक़ा सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी थी कि उम्मत मुहम्मदिया में आख़िरी ज़माना में ईमाम महदी-ओ-मसीह मौऊद नाज़िल होंगे। हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने दावा फ़रमाया कि इस ज़माने का मुजद्दिद, मसीह-ओ-महदी, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के मुताबिक़ मैं ही हूँ। आपने उम्मती नबी होने का दावा किया। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मेरा अपना कुछ भी नहीं है जो कुछ भी है मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का है और उम्मती नबी होने का यही मफ़हूम है कि उस का अपना कुछ भी न हो, सब कुछ नबी मतबू का हो। हमारे ग़ैर अहमदी मुस्लमान भाई भी मानते हैंकि हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम जब आसमान से नाज़िल होंगे तो वह एक उम्मती नबी होंगे। इस तरह उम्मती नबी की आमद के वे भी क़ायल हैं। लेकिन मुश्किल यह है कि क़ुरआन-ए-मजीद बार बार उन की वफ़ात का ऐलान करता है इसलिए जिस ईसा के आने की ख़बर दी गई थी वह दरअसल इसी उम्मत में से आना था लेकिन उस ने चूँकि मसीह नासरी की रूप पर आना था इस लिए उस का नाम मसीह रखा गया। हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद-ओ-महदी माहूद अलैहिस्सलाम की वफ़ात बाद 1908 ई. से जमाअत अहमदिया में ख़िलाफ़त क़ायम है। इस ख़िलाफ़त की ख़बर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पहले से दे रखी थी। इस लिए एक लंबी हदीस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस्लाम के मुख़्तलिफ़ अदवार का वर्णन करने के बाद फ़रमाया ثُمَّ تَكُوْنُ خِلَافَةٌ عَلٰى مِنْهَاجِ النُّبُوَّةِ अर्थात फिर ख़िलाफ़त अला मिनहाज-ए-नबुव्वत क़ायम होगी। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ामोश रहे और मज़ीद किसी दौर का वर्णन नहीं फ़रमाया। जिस से यह साबित होता है कि यह ख़िलाफ़त अला मिनहाज नबुव्वत क़ियामत तक रहेगी। अतः जमाअत अहमदिया ख़िलाफ़त 115 वर्षों से क़ायम है। इस ख़िलाफ़त की सदाक़त का यही एक सबूत काफ़ी है कि मुस्लमान ख़िलाफ़त मिट गई। ख़लीफ़तुल मुस्लेमीन बनने के ख़ाहिशमंद मिट गए। लेकिन जो हक़ीक़ी ख़िलाफ़त है वह 115 वर्षों से बग़ैर किसी इख़तेलाफ़ के क़ायम-ओ-दाइम है। इस की शान में दिन-ब-दिन इज़ाफ़ा हो रहा है। इस को मिटाने की तमन्ना रखने वाले मिट गए लेकिन यह न मिटी और न भविष्य में कभी मिटेगी।

अल्लाह तआला ने सूरः नूर में उम्मत मुहम्मदिया में ख़िलाफ़त के क़ियाम का वादा फ़रमाया है। अल्लाह तआला फ़रमाता है :

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا
اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ
وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِىْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِىْ شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ كَفَرَ
بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٥٦﴾

(सूरः नूर आयत : 56)

अनुवाद : अल्लाह ने तुम में से ईमान लाने वालों और मुनासिब-ए-हाल अमल करने वालों से वादा किया है कि वह उनको ज़मीन में ख़लीफ़ा बना देगा। जिस तरह उनसे पहले लोगों को ख़लीफ़ा बना दिया था। और जो दीन उसने उनके लिए पसंद किया है वह उनके लिए उसे मज़बूती से क़ायम कर देगा और उन के ख़ौफ़ की हालत के बाद वह उनके लिए अमन की हालत तबदील कर देगा। वह मेरी इबादत करेंगे (और) किसी चीज़ को मेरा शरीक नहीं बनाएंगे और जो लोग उसके बाद भी इंकार करेंगे वे नाफ़रमानों में से क़रार दिए जाऐंगे

कोई यह ख़्याल न करे कि मिन से मुराद सिर्फ सहाबा हैं, और उन में वादा के मुताबिक़ ख़िलाफ़त क़ायम हो गई। हक़ीक़त यह है कि सहाबा के तवस्सुत से पूरी उम्त-ए-मुहम्मदिया को ख़िताब है। और उम्मत मुहम्मदिया में अल्लाह तालाका दाइमी ख़िलाफ़त का वादा है। और उसने अपने वादा के मुताबिक़ उम्मत मुहम्मदिया में दाइमी ख़िलाफ़त क़ायम कर दी है जैसा कि ऊपर वर्णन हो चुका है। अलहमदु लिल्लाह अलाज़ालिक। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"मिन के लफ़्ज़ से यह इस्तदलाल पैदा करना कि चूँकि ख़िताब सहाबा से है इस लिए यह ख़िलाफ़त सहाबा तक ही महिदूद है अजीब अक्लमंदी है। अगर इसी तरह क़ुरआन की तफ़सीर हो तो फिर यहूदियों से भी आगे बढ़कर क़दम रखना है। अब वाज़ेह हो कि مِنْكُمْ का शब्द क़ुरआन-ए-करीम में संभवतः बयासी जगह आया है और सिवाए दो या तीन जगह के जहां कोई ख़ास क़रीना क़ायम किया गया है बाक़ी समस्त मवाज़े में مِنْكُمْ के ख़िताब से वे समस्त मुस्लमान मुराद हैं जो क़ियामत तक पैदा होते रहेंगे।" (शहादतुल -क़ुरआन रूहानी ख़ज़ायन भाग 6 पृष्ठ 331)

उम्मत-ए-मुहम्मदिया में दायमी ख़िलाफ़त की ख़ुशख़बरी देते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

चूँकि किसी इन्सान के लिए दाइमी तौर पर बक़ा नहीं इसलिए ख़ुदा तआला ने इरादा किया कि रसूलों के वजूद को जो समस्त दुनिया के वजूदों से अशर्फ़-ओ--औला हैं ज़ली तौर पर हमेशा के लिए ताक़यामत क़ायम रखे अतः इसी ग़रज़ से ख़ुदा तआला ने ख़िलाफ़त को तजवीज़ किया ताकि दुनिया कभी और किसी ज़माना में बरकात-ए-रिसालत से महरूम न रहे अतः जो शख़्स ख़िलाफ़त को सिर्फ तीस बरस तक मानता है वह अपनी नादानी से ख़िलाफ़त की इल्लत-ए-ग़ाई को नज़रअंदाज करता है और नहीं जानता कि ख़ुदा तआला का यह इरादा तो हरगिज़ नहीं था कि रसूल-ए-करीम की वफ़ात के बाद सिर्फ तीस बरस तक रिसालत की बरकतों को ख़लीफ़ों के लिबास में क़ायम रखना ज़रूरी है फिर बाद इस के दुनिया तबाह हो जाये तो हो जाएगी कुछ परवाह नहीं।

(शहादतुल क़ुरआन रूहानी ख़ज़ायन भाग 6 पृष्ठ 353)

जैसा कि ऊपर वर्णन हो चुका है जमाअत अहमदिया में 115 साल से ख़िलाफ़त क़ायम है। यही वह ख़िलाफ़त है और यही वह जमाअत है जिससे की आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ताकीद फ़रमाई है और जिससे बाहर रहना जहालत की मौत मरना है। मुस्लमानों के लिए वह अहादीस लम्हा फ़िक्रिया हैं जिन में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें एक जमाअत से जुड़ कर ज़िंदगी गुज़ारने की तलक़ीन फ़रमाई है। दुनिया के पर्दे पर आज एक ही जमाअत है जो जमाअत कहलाने की मुस्तहिक़ है और वह जमाअत अहमदिया है। अतः मुस्लमानों को इस जमाअत से जुड़ जाना चाहिए और इस भेड़ की मानिंद ज़िंदगी नहीं गुज़ारनी चाहिए जो जमाअत से अलग हो गई हो, जिसका कोई निगरान न हो और जो हर समय ख़तरे में हो। इस लिए ऐसी चंद अहादीस का ज़ेल में वर्णन किया जाता है जिन में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जमाअत से मुंसलिक रहने को अज़-बस ज़रूरी क़रार दिया है।

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: مَنْ خَلَعَ يَدًا مِنْ طَاعَةٍ لَقِيَ اللّٰهَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا حُجَّةَ لَهٗ، وَمَنْ
مَاتَ وَلَيْسَ فِيْ عُنُقِهٖ بَيْعَةٌ مَاتَ مِيْتَةً جَاهِلِيَّةً. وَفِيْ رِوَايَةٍ: مَنْ مَاتَ وَهُوَ مُفَارِقٌ
لِلْجَمَاعَةِ فَاِنَّهٗ يَمُوْتُ مِيْتَةً جَاهِلِيَّةً. مسلم كتاب الامارة باب

शेष पृष्ठ 23 पर

ख़ुत्बः जुमअः

"याद रखो जब तक لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ दिल-ओ-जिगर में सरायत न करे और वजूद के ज़र्रे ज़र्रे पर इस्लाम की रोशनी और हुकूमत न हो कभी तरक़्क़ी नहीं होगी (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत के एतबार से लोगों में से सबसे ज़्यादा ख़ुश किस्मत व्यक्ति वह होगा जिसने अपने ख़ालिस दिल या अपने ख़ालिस नफ़्स के साथ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ का इक़रार क्या होगा (अल्हदीस)

हम अहमदी ख़ुश-क़िस्मत हैं कि हमें अल्लाह तआला ने इस ज़माने के इमाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम सादिक़ को मानने की तौफीक अता फ़रमाई
जिन्होंने इस्लामी अहकाम को खोल कर उनकी गहराई और हिक्मत के साथ हमें बताया, जहां لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ की गहराई के बारे में हमें बताया वहां मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान के बारे में भी हमें बताया

"जब से कि इन्सान पैदा हुआ है उस वक़्त तक कि उसका अंत हो जाए ख़ुदा का कानून-ए-क़ुदरत यही है कि वह तौहीद की हमेशा हिमायत करता है" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

फ़तह मक्का के अवसर पर हज़ारों बुत परस्तों ने لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ की बरतरी देखी

"एक बात है जिसमें कोई तग़य्युर नहीं और वह है لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللہ,असल यही बात है और बाक़ी जो कुछ है वह सब उसके मुक-म्मलात हैं" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"कलमा के यह अर्थ हैं कि इन्सान ज़बान से इक़रार करता है और दिल से तसदीक़ कि मेरा माबूद, महबूब और मक़सूद ख़ुदा तआला के सिवा और कोई नहीं" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"जो शख़्स अपने भाई का हक़ मारता है या ख़ियानत करता है या दूसरी किस्म की बदियों से बाज़ नहीं आता, मैं यक़ीन नहीं करता कि वह तौहीद का मानने वाला है

क्योंकि यह एक ऐसी नेअमत है कि उस को पाते ही इन्सान में एक ख़ारिक़ आदत तबदीली पैदा हो जाती है"
(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"तबदीली उसी वक़्त होती है और उसी वक़्त वह सच्चा इबादत करने वाला बनता है जब यह अंदरूनी बुत तकब्बुर, ख़ुद-पसंदी, दिखावा, द्वेष, दुश्मनी, ईर्ष्या और लालच, पाखंड और वादा तौड़ना इत्यादि के दूर हो जावें, जब तक ये बुत अंदर ही हैं उस वक़्त तक لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ कहने में क्योंकर सच्चा ठहर सकता है?" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

लेलतुल कदर तो हक़ीक़त में उस वक़्त मिलती है जब हम अपना सब कुछ अपना हर कथनी और करनी अल्लाह तआला के हुक्मों के मुताबिक़ करने के लिए तैयार हो जाएं और उस पर अमल करने वाले हों
और फिर उसे मुस्तक़िल अपनी ज़िंदगियों का हिस्सा बनालें और यही वह हक़ीक़ी निशानी है जो लेलतुल कदर के पाने का है असल निशानी यह है कि क्या इन्केलाब हमारे दिलों में पैदा हुआ हो

अगर हम अपनी हालतों में इंकेलाबी तबदीलियां पैदा कर लें और لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ की हक़ीक़त को समझते हुए अपना माबूद और मकसूद और महबूब सिर्फ़ अल्लाह तआला की ज़ात को बनालें, दुनिया से ज़्यादा हमें ख़ुदा तआला से मुहब्बत और उसको पाना हमारा उद्देश्य हो तो यह इन्केलाब जल्दी भी हो सकता है
इन आख़िरी दस दिनों से भरपूर फ़ायदा उठाने के लिए, हक़ीक़ी तौर पर लेलतुल कदर करने के लिए
हमें لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللہ के कलमा को अपने दिल-ओ-दिमाग़ की आवाज़ बनाना होगा, अपने हर अमल पर लागू करना होगा जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है
इन दिनों में दुनिया के उमूमी अमन-ओ-इस्तहकाम के लिए भी दुआ करते रहें,अल्लाह तआला इन्सानियत पर रहम और फ़ज़ल फ़रमाए
हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात की रोशनी में कलमा तय्यबा में वर्णित तौहीद-ए-इलाही के कमालात और नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आलीशान रसालत का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 14 अप्रैल 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ वह कलमा है जो तौहीद की बुनियाद है :

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि निसन्देह अल्लाह तआला ने उस शख़्स को आग पर हराम कर दिया जिसने अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल के लिए لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ पढ़ा।

(صحیح البخاری، کتاب الصلاۃ،باب المساجد فی البیوت...الخ حدیث 425)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

अतः जब अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल के लिए उस की तवज्जा चाहते हुए, उसकी तरफ़ झुकते हुए, अपनी तवज्जा को ख़ालिस अल्लाह तआला की तरफ़ करते हुए इन्सान لَا اِلٰهَ اِلَّا اللہ कहता है तो वह अल्लाह तआला के फ़ज़लों का वारिस बनता है। और जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आग को अल्लाह तआला ने उस पर हराम करार दिया।

(सही अल्बख़ारी, किताब उल्रकाक, बाब अल्-अमल العمل الذی یبتغی بہ وجہ اللہ... हदीस : 6423)

एक जगह फ़रमाया कि अल्लाह तआला जहन्नुम की आग पर उस को हराम कर देगा। और यही तालीम थी जो समस्त अंबिया लेकर आए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि सबसे अफ़ज़ल कलमा जो मैंने और मुझसे पहले नबियों ने कहा वह لَا اِلٰهَ اِلَّا اللہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ है। (मोता इमाम मालिक, किताब अल्सलात, बाब मा जाआ-फ़ी दुआ हदीस 501 भाग 1 पृष्ठ 536 प्रकाशित मकतबा अल्बाशरा कराची)

अतः यह तालीम है जो समस्त अंबिया की है लेकिन बदक़िस्मती से उन्ही अंबिया क ी क़ौमों ने जिन्हों ने यह तालीम दी थी इस तालीम को बराह-ए-रस्त या बिलवा-सता भूल कर शिर्क का ज़रीया बना लिया। असल तालीम को भूल गए। हम ख़ुश--क़िस्मत हैं कि हमें अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत में शामिल कर के वह कामिल तालीम दी जिसने शिर्क का पूर्णतः ख़ातमा कर दिया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तौहीद का हक़ीक़ी सबक़ देकर हमारी दुनिया और आक़िबत संवारने के समान फ़रमाए।

अतः अब जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हक़ीक़ी तालीम पर अमल करेगा और ख़ुदा तआला की वहदानियत का इक़रार ख़ालिस हो कर करेगा वही अल्लाह तआला के फ़ज़लों का वारिस भी बनेगा और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत से भी हिस्सा पाएगा जिसके बारे में एक रिवायत में आता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत के एतबार से लोगों में से सबसे ज़्यादा ख़ुश किस्मत व्यक्ति वह होगा जिसने अपने ख़ालिस दिल या अपने ख़ालिस नफ़्स के साथ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ का इक़रार किया होगा।

(सही अल् बुखारी, किताब अल्इलम, बाब الحرص علی الحدیث, हदीस : 99)

अतः आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत के लिए ख़ालिस दिल के साथ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللہ का इक़रार है जिस में दुनिया की मिलावट न हो वही आपकी शफ़ाअत का हिस्सादार होगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वह आख़िरी और कामिल नबी हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने शफ़ाअत का इख़्तेयार दिया। आप पर ईमान भी अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़ ज़रूरी है और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस मुक़ाम का ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यूं वर्णन फ़रमाया है। फ़रमाया : कोई शख़्स ऐसा नहीं जो सिदक़-ए-दिल से لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ की गवाही दे परंतु अल्लाह तआला उसे आग पर हराम कर दे। (सही अल् बुख़ारी किताब العلم باب من خص بالعلم قوماً دون قوم... हदीस : 128) एक जगह ख़ाली مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللہ है दूसरी जगह मुहम्मद रसूलुल्लाह भी शामिल है। अतः अब तौहीद का इक़रार और ऐलान आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अल्लाह तआला के आख़िरी और कामिल नबी होने के इक़रार के बग़ैर मुम्किन नहीं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही हैं जिन्हों ने अपनी उम्मत में शिर्क के मुकम्मल तौर पर ख़त्म करने का ऐलान फ़रमाया और अल्लाह तआला और उस के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस शख़्स से मुकम्मल तौर पर बेज़ारी का ऐलान फ़रमाया जो किसी भी रंग में मामूली से शिर्क का भी इज़हार करने वाला हो। परंतु बावजूद इसके मुस्लमानों में भी ऐसे लोग पैदा हो गए हैं जो इस किस्म के मख़फ़ी शिर्क के मुर्तक़िब हैं जिनकी अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम ने सख़्ती से मनाही की है।

हम अहमदी ख़ुश-क़िस्मत हैं कि हमें अल्लाह तआला ने इस ज़माने के इमाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम सादिक़ के मानने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई जिन्हों ने इस्लामी अहकाम को खोल कर उनकी गहराई और हिक्मत के साथ हमें बताया। जहां لَا اِلٰهَ اِلَّا اللہ की गहराई के बारे में हमें बताया वहां मुह-म्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम के बारे में भी हमें बताया।

इस वक़्त मैं इस सिलसिले में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ इक़-तेबासात पेश करूँगा जो इस मज़मून पर बड़ी ख़ूबसूरती से रोशनी डालते हैं और हमें भी इस तरफ़ मुतवज्जा करते हैं कि इस मज़मून की गहराई को समझते हुए हमें किस तरह अपने जायज़े लेने चाहिऐं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "अल्लाह तआला ने अपने फ़र्मूदा اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ (अल् मायद : 4) की तशरीह आप ही फ़र्मा दी कि इस में तीन निशानियों का होना अज़-बस ज़रूरी है।" आप निशानियां वर्णन कर रहे थे जिसमें पहला था इस اَصْلُهَا ثَابِتٌ (इबराहीम : 25) जिसकी जड़ें मज़बूती से क़ायम हों। दूसरी निशानी है فَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ (इबराहीम : 25) कि इस की शाख़ें आसमान की बुलंदी तक पहुंची हुई हैं। तीसरी निशानी تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍ (इब-राहीम : 26) हर वक़त ताज़ा फल देती है। अतः इस्लाम ही वह दीन है जो इस मयार पर पूरा उतरता है।

बहरहाल اَصْلُهَا ثَابِتٌ की वज़ाहत करते हुए जो पहली निशानी है आप अलैहि-स्सलाम फ़रमाते हैं कि "उसूल-ए-मानिया जो पहली निशानी है जिससे मुराद कलिमा لَا اِلٰهَ اِلَّا اللہ है। "अर्थात इस اَصْلُهَا ثَابِتٌ को अगर साबित करना है तो इस की पहली निशानी لَا اِلٰهَ اِلَّا اللہ है। फ़रमाया कि "इस को इस क़दर बस्त से क़ुरआन शरीफ़ में वर्णन फ़रमाया गया है कि अगर मैं समस्त दलायल लिखूँ तो फिर चंद भागों में भी ख़त्म न होंगे।" किताबें लिखी जाएँगी। "मगर थोड़ा सा उनमें से बतौर नमूना के ज़ेल में लिखता हूँ जैसा कि एक जगह अर्थात सीपारा दूसरे सूरत अल् बकरः में फ़रमाता है

اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَ النَّهَارِ وَ الْفُلْكِ الَّتِيْ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَ بَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ وَّ تَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَ السَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ (البقرۃ : 165) (अल् बकरः : 165)

अर्थात तहक़ीक़ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने और रात और दिन के इख़्तेलाफ़ और उन कश्तीयों के चलने में जो दरिया में लोगों के नफ़ा के लिए चलती हैं और जो कुछ ख़ुदा ने आसमान से पानी उतारा और इस से ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िंदा किया और ज़मीन में प्रत्येक किस्म के जानवर बिखेर दिए और हवाओं को फेरा और बादलों को आसमान और ज़मीन में मुसख़्ख़र किया। ये सब ख़ुदा तआला के वजूद और उसकी तौहीद और उसके इल्हाम और उसके مُدَبِّرٌ بِالْاِرَادَہٗ होने पर निशानात हैं। "फ़रमाया कि "अब देखिए इस आयत में अल्लाह जल्ला शानाहु ने अपने इस उसूल ईमानी पर कैसा इस्त-दलाल अपने इस कानून-ए-क़ुदरत से किया।" لَا اِلٰهَ اِلَّا اللہ को साबित किया है, क़ानून-ए-क़ुदरत से यह दलील दी है। "यानी अपनी इन मसनूआत से जो ज़मीन-ओ-आसमान में पाई जाती हैं जिनके देखने से मुताबिक़ मंशा इस आयत-ए-करीमा के साफ़ साफ़ तौर पर मालूम होता है कि बेशक इस आलम का उकसाना क़दीम और कामिल और وَحْدَہٗ لَا شَرِیْك और مُدَبِّرٌ بِالْاِرَادَہٗ और अपने रसूलों को दुनिया में भेजने वाला है। वजह यह कि ख़ुदा तआला की समस्त यह मसनूआत और यह सिलसिला निज़ाम-ए-आलम का जो हमारी नज़र के सामने मौजूद है यह साफ़ तौर पर बतला रहा है कि यह आलम ख़ुद बख़ुद नहीं बल्कि उस का एक मूजिद और सानी है जिस के लिए यह ज़रूरी सिफ़ात हैं कि वह रहमान भी हो और रहीम भी हो और क़ादिर-ए-मुतलक़ भी हो और वाहिद ला शरीक भी हो और अज़ली अबदी भी हो और مُدَبِّرٌ بِالْاِرَادَہٗ भी हो और मुस्तजमा जमी सिफ़ात कामला भी हो और वह्यी को नाज़िल करने वाला भी हो।"

(जंग-ए-मुक़द्दस, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 123 से 125)

अतः لَا اِلٰهَ اِلَّا اللہ केवल एक माबूद होने का ख़्याल ही दिल में पैदा नहीं करता बल्कि इस बात को भी दिल में रासिख़ करता है और करना चाहिए कि हमारा ख़ुदा वह वाहिद ख़ुदा है जो आरंभ से है और अंत तक रहेगा और हर मख़लूक़ का ख़ालिक़ है और उसके इज़न से ही यह समस्त निज़ाम-ए-कायनात चल रहा है और समस्त हाजात के लिए हमने उसके हुज़ूर ही झुकना है। अतः जब यह ईमान की हालत हो जाये तो वह कामिल ईमान होता है जिसमें शिर्क की मलूनी हो ही नहीं सकती और यही वह ईमान है जिसके बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ख़ालिस हो कर لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰ पर ईमान लाने वालों पर जहन्नुम की आग है।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"इस्तआनत के मुताल्लिक़ यह बात याद रखनी चाहिए कि असल इस्तमदाद का हक अल्लाह तआला ही को हासिल है।"

जिससे मदद तलब की जाती है या कोई मदद देने वाला है तो वह अल्लाह तआला ही उसका हक़ रखता है। केवल अल्लाह तआला ही वह कामिल हस्ती

है जिससे मदद चाही जानी चाहिए। कोई और इस तरह उस का हक़ रख ही नहीं सकता न इस में ताक़त है। "और इसी पर क़ुरआन-ए-करीम ने ज़ोर दिया है। इस लिए फ़रमाया कि- اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ। पहले सिफ़ात-ए-इलाही रब, रहमान, रहीम, مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ का इज़्हार फ़रमाया। फिर सिखाया اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ- अर्थात इबादत भी तेरी करते हैं और इस्तमदाद भी तुझ ही से चाहते हैं। "मदद भी इस इबादत करने के लिए तुझसे ही चाहते हैं। तेरी मदद के बग़ैर हमारी इबादत भी नहीं हो सकती।" इस से मालूम हुआ कि असल हक़ इस्तमदाद का अल्लाह तआला ही के लिए है। किसी इन्सान, हैवान, चरिंद परिंद ग़रज़-कि किसी मख़लूक़ के लिए न आसमान पर न ज़मीन पर यह हक़ नहीं है परंतु हाँ दूसरे दर्जा पर ज़िल्ली तौर से यह हक़ अल्लाह वालों को और मर्दान-ए-ख़ुदा को दिया गया है।" अल्लाह के इज़्न से उनकी दुआओं से मदद भी होती है। फ़रमाया कि "हम को नहीं चाहिए कि कोई बात अपनी तरफ़ से बना लें बल्कि अल्लाह तआला के फ़र्मूदा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इरशाद के अंदर अंदर रहना चाहिए। इसी का नाम स्रात-ए-मुस्तक़ीम है और यह बात لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ से भी बख़ूबी समझ में आ सकती है। इसके पहले हिस्से से मालूम होता है कि इन्सान का महबूब-ओ-माबूद और मतलूब अल्लाह तआला ही होना चाहिए। और दूसरे हिस्से से रिसालत-ए-मुहम्मदिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हक़ीक़त का इज़्हार है।" (मल्फ़ूज़ात, भाग 2 पृष्ठ 53-54 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "जब से कि इन्सान पैदा हुआ है उस वक़्त तक कि नाबूद हो जाएगी ख़ुदा का कानून-ए-क़ुदरत यही है कि वह तौहीद की हमेशा हिमायत करता है

जितने नबी उसने भेजे सब इसी लिए आए थे कि ता इन्सानों और दूसरी मख़लूक़ों की उपासना दूर कर के ख़ुदा की उपासना दुनिया में क़ायम करें और उनकी ख़िदमत यही थी कि لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ का मज़मून ज़मीन पर चमके जैसा कि वह आसमान पर चमकता है। अतः इन सब में से बड़ा वह है जिसने इस मज़मून को बहुत चमकाया। जिसने पहले झूठे उपासना की कमज़ोरी साबित की।" झूटे जो माबूद थे उनकी कमज़ोरी साबित की" और इलम और ताक़त के दृष्टि से उनका तुच्छ होना साबित किया। और जब सब कुछ साबित कर चुका तो फिर उस फ़तह नुमायां की हमेशा के लिए यादगार यह छोड़ी कि لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ- उसने सिर्फ़ बे सबूत दावा के तौर पर لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ नहीं कहा बल्कि उसने पहले सबूत देकर और बातिल का बुतलान दिखला कर फिर लोगों को इस तरफ़ तवज्जा दी कि देखो इस ख़ुदा के सिवा और कोई ख़ुदा नहीं जिसने तुम्हारी समस्त क़ुव्वतें तोड़ दीं और समस्त शैख़ियाँ नाबूद कर दीं। अतः इस साबित शुदा बात को याद दिलाने के लिए हमेशा के लिए यह मुबारक कलिमा सिखलाया कि- 'لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ' (मसीह हिंदुस्तान में, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 15 पृष्ठ 65)

फ़तह मक्का के अवसर पर हज़ारों बुत परस्तों ने لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ की बरतरी देखी।

अबूसुफ़ियान से जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि तुम पर अभी भी لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ की हक़ीक़त रोशन नहीं हुई? तो उसने जवाब दिया कि मैं बिल्कुल समझ चुका हूँ कि अल्लाह के सिवा अगर कोई माबूद होता तो हमारी कुछ तो मदद करता। यह तीन सौ साठ बुत हमने रखे हुए हैं कुछ तो हमारी मदद करते जिनकी हम इबादत करते हैं।

(السیرۃ النبویۃ لابن ہشام، صفحہ739، اسلام ابی سفیان... مطبوعہ دار الکتب العلمیۃ بیروت 2001ء)(सही अलबख़ारी, किताब अलमज़ालम ,बाब हल तकस्सुर अलदनान अलख हदीस2478)

एक मुख़ालिफ़ के एतराज़ का जवाब देते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि :

"आपका यह कहना कि हज़रत मुक़द्दस नबी की तालीम यह है कि لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कहने से गुनाह दूर हो जाते हैं। यह बिल्कुल सच है और यही वास्तव में हक़ीक़त है। "तुम यह कहते हो नाँ गुनाह ख़त्म हो जाते हैं ठीक है बिल्कुल सच है "कि जो महिज़ ख़ुदा को वाहिद ला शरीक जानता है और ईमान लाता है कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उसी क़ादिर यकता ने भेजा है तो बे-शक अगर इस कलिमा पर उस का ख़ातमा हो तो नजात पा जाएगा आसमानों के नीचे किसी की ख़ुदकुशी से नजात नहीं हरगिज़ नहीं। "किसी के मरने से नजात नहीं होती। हाँ कोई तुम्हारी ख़ातिर मर जाए तो इस से भी नजात नहीं होगी। कलमा से नजात पाएगा "और इस से ज़्यादा कौन फ़रमाया कि "इस से ज़्यादा कौन पागल होगा कि ऐसा ख़्याल भी करे" कि कलमा से नजात नहीं पा सकता। परंतु ख़ुदा को वाहिद ला शरीक समझना। यह ग़ौर कर लो। यह सोच लो। यह simpleकह देना, सादा रंग में कह देना नहीं है। "मगर ख़ुदा को वाहिद ला शरीक समझना और ऐसा मेहरबान ख़्याल करना कि उसने निहायत रहम करके दुनिया को ज़लालत से छुड़ाने के लिए अपना रसूल भेजा जिसका नाम मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम है यह एक ऐसा एतक़ाद है कि इस पर यक़ीन करने से रूह की तारीकी दूर होती है और नफ़सानियत दूर हो कर उसकी जगह तौहीद ले लेती है। आख़िर तौहीद का ज़बरदस्त जोश समस्त दिलों पर मुहीत हो कर इसी जहान में बहिश्ती ज़िंदगी शुरू हो जाती है।"

हक़ीक़त जाननी चाहिए कि لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ का मतलब क्या है مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ का मतलब क्या है तो फिर जन्नत इस दुनिया में ही शुरू हो जाती है।

फ़रमाया कि "जैसा तुम देखते हो कि नूर के आने से ज़ुल्मत क़ायम नहीं रह सकती ऐसा ही जब لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ का नूरानी पर्तो दिल पर पड़ता है तो नफ़सानी ज़ुल्मत के जज़बात ख़त्म हो जाते हैं।" ख़त्म हो जाते हैं।" गुनाह की हक़ीक़त इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कि सरकशी की मलूनी से नफ़सानी जज़बात का शोर-ओ-ग़ौग़ा हो जिसके अनुसरण की हालत में एक शख़्स का नाम गुनाह-गार रखा जाता है और لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ के मअनी जो लुग़त-ए-अरब के मोरिदे इस्तमाल से मालूम होते हैं।" शब्दकोश में इसका जो बहुत ज़्यादा मतलब है" वह यह हैं कि لَا مَطْلُوْبَ لِیْ وَلَا مَحْبُوْبَ لِیْ وَلَا مَعْبُوْدَ لِیْ وَلَا مُطَاعَ لِیْ اِلَّا اللّٰہُ- अर्थात बजुज़ अल्लाह के और कोई मेरा मतलूब नहीं और महबूब नहीं और माबूद नहीं और मुता नहीं।" (नूरुल-क़ुरआन नंबर 2 रुहानी ख़ज़ायन, भाग 9 पृष्ठ 418-419) जब यह हालत पैदा हो जाए तो निसन्देह फिर ज़िंदगी भी जन्नत बन जाती है और बख़शिश के सामान इस दुनिया में ही शुरू हो जाते हैं।

फिर कलिमाلَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہकी वज़ाहत करते हुए मज़ीद फ़रमाया कि "असल बात यह है कि अल्लाह तआला ने बहुत से अहकाम दिए हैं। कुछ उनमें से ऐसे हैं कि उनकी बजा आवरी प्रत्येक को मयस्सर नहीं है। उदाहरणतः हज। यह उस आदमी पर फ़र्ज़ है जिसे ताकत हो।" प्रत्येक पर हज फ़र्ज़ नहीं है। "फिर रास्ता में अमन हो। "यह भी ज़रूरी है हज के लिए।" पीछे जो मुताल्लक़ीन हैं उनके गुज़ारा का भी माक़ूल इंतेज़ाम हो।' घर वाले जो पीछे छोड़ के जा रहे हो उनके खाने पीने का भी इंतेज़ाम होना चाहिए। यह नहीं कि उनको भूखा छोड़ के तो हज करने चले जाओ।" और इसी किस्म की ज़रूरी शरायत पूरी हो तो हज कर सकता है। ऐसा ही ज़कात है। यह वही दे सकता है जो साहब-ए-निसाब हो।" जिस पर फ़र्ज़ हो ज़कात वाजिब होती है।" ऐसा ही नमाज़ में भी तग़य्युरात हो जाते हैं।" कभी सफ़र में बीमारी में क़सर भी हो जाती है जमा भी हो जाती है" लेकिन एक बात है जिसमें कोई तग़य्युर नहीं और वह है لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ-

असल यही बात है और बाक़ी जो कुछ है वह सब उसके मुकम्मलअ तहीं।

तौहीद की तकमील नहीं होती जब तक इबादात की बजा आवरी न हो।" इबादात नहीं बजा लाओगे तो तौहीद मुकम्मल नहीं होती। لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ का हक़ अदा नहीं होता।" इसके यही अर्थ हैं कि لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ का कहने वाला उस वक़्त अपने इक़रार में सच्चा होता है कि हक़ीक़ी तौर पर अमली पहलू से भी वह साबित कर दिखाए कि हक़ीक़त में अल्लाह के सिवा कोई दूसरा महबूब-ओ-मतलूब और मक़्सूद नहीं है।" अतः यह शर्त है ईमान की। सिर्फ़ ज़बानी इक़रार नहीं। لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहा है तो फिर अपने अमल से अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल कर के, उसकी इबादात बजा ला कर, हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल-ईबाद अदा कर के साबित करना होगा क्योंकि यह अल्लाह के हुक्म हैं और अपने महबूब की ख़ातिर और जिसको हासिल करना उद्देश्य है उसकी ख़ातिर और जिसकी तलब की जाती है उसकी ख़ातिर उसके हुक्मों पर अमल करना ज़रूरी है तब एक इन्सानلَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہका हक़ीक़ी आमिल बनता है। इस पर अमल करने वाला बनता है। मानने वाला बनता है। फ़रमाया "जब उसकी यह हालत हो और वाक़ई तौर पर इस का ईमानी और अमली रंग इस इक़रार को ज़ाहिर करने वाला हो तो वह ख़ुदा तआला के हुज़ूर इस इक़रार में झूठा नहीं।" यह बात हो जाए तो बड़ी अच्छी बात है फिर झूठा नहीं है।" सारी माद्दी चीज़ें जल गई हैं और एक फ़ना उन पर उसके ईमान में आ गई है।"لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहने से समस्त माद्दी चीज़ें जल गईं सिर्फ़ अल्लाह तआला मतलूब और

मक़सूद और महबूब हो गया। तो यह ईमानी कैफ़ीयत आ गई।" तब वह لَا اِلٰهَ اِلَّا اللہ मुँह से निकालता है और मुहम्मद रसूलुल्लाह जो उसका दूसरा भाग है वह नमूना के लिए है क्योंकि नमूना और नज़ीर से हर बात सहल हो जाती है। अंबिया अलैहिस्सलाम उदाहरणों के लिए आते हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम समस्त कमालात के नमूनों के जामा थे क्योंकि सारे नबियों के उदाहरणों आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में जमा हैं।" (मल्फ़ूज़ात, भाग 3 पृष्ठ 82-83 ऐडीशन 1984 ई.)

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللہका हक़ीक़ी मफ़हूम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने समझा। अल्लाह तआला के जो हुक्म थे उन पर सही अमल और उनकी तशरीह और उनकी तफ़सीर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाई और आप ही वह कामिल नमूना थे जिसने لَا اِلٰهَ اِلَّا اللہको कामिल करके दिखाया, इस पर अमल को कामिल कर दिखाया।

फिर हमें नसीहत करते हुए हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "बैअत रस्मी फ़ायदा नहीं देती। ऐसी बैअत से हिस्सादार होना मुश्किल होता है। उसी वक़्त हिस्सादार होगा जब अपने वजूद को तर्क करके बिल्कुल मुहब्बत और इख़लास के साथ इसके साथ हो जावे।"

जिसकी बैअत की है पूरे मुहब्बत और इख़लास के साथ इसके साथ हो जाओ तब बैअत फ़ायदा देगी। फ़रमाया कि "मुनाफ़िक़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सच्चा ताल्लुक़ न होने की वजह से आख़िर बेईमान रहे। "उन्हों ने भी ज़ाहिरी बैअतें की थीं। "उनको सच्ची मुहब्बत और इख़लास पैदा न हुआ। इस लिए ज़ाहिरी لَا اِلٰهَ اِلَّا اللہ उनके काम न आया।" फ़रमाया" तो उन ताल्लुक़ात को बढ़ाना बड़ा ज़रूरी काम है। अगर इन ताल्लुक़ात को वह" यानी "(तालिब) नहीं बढ़ाता और कोशिश नहीं करता तो उस का शिकवा और अफ़सोस बेफ़ायदा है। मुहब्बत-ओ-इख़लास का ताल्लुक़ बढ़ाना चाहिए। जहां तक मुम्किन हो इस इन्सान अर्थात"(मुर्शिद के हमरंग हो। तरीक़ों में और एतेक़ाद में।" फ़रमाया कि "नफ़स लंबी आयु के वादे देता है।" इन्सान सोचता रहता है कि अभी तो बड़ी लंबी उम्र पड़ी है। अभी तो मैं जवान हूँ।" यह धोखा है। उम्र का एतबार नहीं है। जल्दी रास्तबाज़ी और इबादत की तरफ़ झुकना चाहिए और सुबह से लेकर शाम तक हिसाब करना चाहिए।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 1 पृष्ठ 5 ऐडीशन 1984 ई.)

अपना कि मैं क्या कर रहा हूँ। किस हद तक मैंने لَا اِلٰهَ اِلَّا اللہ पर अमल किया है। यह आप अलैहिस्सलाम ने हमें नसीहत फ़रमाई है

फिर एक जगहلَا اِلٰهَ اِلَّا اللہ को समझने और इस का हक़ अदा करने की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए फ़रमाया कि "मेरा यह मतलब हरगिज़ नहीं कि मुस्लमान सुस्त हो जाए।" कलमा पढ़ लिया तो सुस्त हो जाओ।" इस्लाम किसी को सुस्त नहीं बनाता। अपनी तिजारतों और मुलाज़मतों में भी मसरूफ़ हों परंतु मैं यह नहीं पसंद करता कि ख़ुदा के लिए उनका कोई वक़्त भी ख़ाली न हो।" कह तो रहे हैं اِلٰهَ اِلَّا اللہ। लेकिन अल्लाह का हक़ अदा करना है तो उनको कोई वक़्त ही नहीं मिलता दुनिया में व्यस्त हैं।" हाँ तिजारत के वक़्त पर तिजारत करें और अल्लाह तआला के ख़ौफ़-ओ-ख़शीयत को उस वक़्त भी मद्द-ए-नज़र रखें ताकि वह तिजारत भी उनकी इबादत का रंग इख़तेयार कर ले। नमाज़ों के वक़्त पर नमाज़ों को न छोड़ें। हर मुआमला में कोई हो दीन को मुक़द्दम करें।" दीन मुक़द्दम करना ज़रूरी है। हम अपने अह्द में दुनिया के मुआमलों में यह अह्द भी करते हैं कि दुनिया के मुक़ाबले में हम दीन मुक़द्दम करेंगे। फ़रमाया दुनिया मक़सूद बिज़्ज़ात न हो।"

दुनिया न मक़सूद बिज़्ज़ात हो।" अस्ल-ए-मक़सूद दीन हो। फिर दुनिया के काम भी दीन ही के होंगे। सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हु को देखो कि उन्होंने मुश्किल से मुश्किल वक़्त में भी ख़ुदा को नहीं छोड़ा। लड़ाई और तलवार का वक़्त ऐसा ख़तरनाक होता है कि केवल उसके तसव्वुर से ही इन्सान घबरा उठता है। वह वक़्त जबकि जोश और ग़ज़ब का वक़्त होता है ऐसी हालत में भी वह ख़ुदा से ग़ाफ़िल नहीं हुए। नमाज़ों को नहीं छोड़ा। दुआओं से काम लिया। अब यह बदकिस्मती है कि यूं तो हर तरह से ज़ोर लगाते हैं, बड़ी बड़ी तक़रीरें करते हैं' लोग। لَا اِلٰهَ اِلَّا اللہकी बातें करते हैं "जलसे करते हैं कि मुस्लमान तरक़्क़ी करें मगर ख़ुदा से ऐसे ग़ाफ़िल होते हैं कि भूल कर भी इस की तरफ़ तवज्जा नहीं करते। फिर ऐसी हालत में क्या उम्मीद हो सकती है कि उनकी कोशिशें नतीजा ख़ेज़ हों जबकि वह सबकी सब दुनिया ही के लिए हैं।" कोशिशें दुनिया के लिए कर रहे हैं। नाम मुस्लमानों का इस्तमाल कर रहे हैं। अल्लाह के दीन का इस्तमाल कर रहे हैं।

फ़रमाया "याद रखो जब तकلَا اِلٰهَ اِلَّا اللہ दिल-ओ-जिगर में सरायत न करे और वजूद के ज़र्रे ज़र्रे पर इस्लाम की रोशनी और हुकूमत न हो कभी तरक़्क़ी नहीं होगी (मल्फ़ूज़ात, भाग 2 पृष्ठ 158-159 ऐडीशन 1984 ई.)

तरक़्क़ी करनी है तो फिरلَا اِلٰهَ اِلَّا اللہ के मफ़हूम को समझना होगा। अल्लाह तआला को मक़सूद बिज़्ज़ात बनाना होगा न कि दुनिया को। फिर कलमा तुय्यबा की हक़ीक़त और उसके अर्थ वर्णन करते हुए और किस तरह हमें उसे समझ कर उस पर अमल करना चाहिए आप फ़रमाते हैं कि : "मैं कई बार ज़ाहिर कर चुका हूँ कि तुम्हें सिर्फ़ इतने पर ख़ुश नहीं होना चाहिए कि हम मुस्लमान कहलाते हैं और لَا اِلٰهَ اِلَّا اللہ के क़ायल हैं। जो लोग क़ुरआन पढ़ते हैं वह ख़ूब जानते हैं कि अल्लाह तआला सिर्फ़ ज़बानी कील ओ काल से कभी राज़ी नहीं होता और न केवल ज़बानी बातों से कोई ख़ूबी इन्सान के अंदर पैदा हो सकती है जब तक अमली हालत दरुस्त न हो।" ज़बानी बातें तो कोई चीज़ नहीं हैं असल में अमल चीज़ है।" जब तक अमली हालत दरुस्त न हो कुछ भी नहीं बनता। यहूदियों पर भी एक ज़माना ऐसा आया था कि उनमें निरी ज़बान दराज़ी ही रह" गई थी"और उन्होंने सिर्फ ज़बानों की बातों पर ही किफ़ायत कर ली थी। ज़बान से तो वह बहुत कुछ कहते थे परंतु दिल में तरह तरह के गंदे ख़्यालात और ज़हरीले मवाद भरे होते थे। यही वजह थी जो अल्लाह तआला ने इस क़ौम पर तरह तरह के अज़ाब नाज़िल किए और उनको मुख़्तलिफ़ मुसीबतों में डाला और ज़लील किया यहां तक कि उन्हें सूअर और बंदर बनाया।" फ़रमाया कि "अब ग़ौर का मुक़ाम है। क्या वह तौरात को नहीं मानते थे? वह ज़रूर मानते थे और नबियों के भी मानने वाले थे मगर अल्लाह तआला ने उतनी ही बात को पसंद न किया कि वह निरे ज़बान से मानने वाले हों और उनके दिल ज़बान से मुत्तफ़िक़ न हों।" ज़बान से तो कहते हों लेकिन दिल इस पर अमल न कर रहे हों जो ज़बान कह रही है। फ़रमाया "ख़ूब याद रखना चाहिए अगर कोई शख़्स ज़बान से कहता है कि मैं ख़ुदा कोوَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ मानता हूँ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाता हूँ। और ऐसा ही और ईमानी उमूर का क़ायल हूँ लेकिन अगर यह इक़रार सिर्फ़ ज़बान ही तक है और दिल मोतरिफ़ नहीं तो यह ज़बानी बातें होंगी।" मुँह से कह देना काफ़ी नहीं है जब तक दिल से आवाज़ न उठे।" और नजात इस से नहीं मिल सकेगी जब तक इन्सान का दिल ईमान न लाए। और इस का ईमान लाना यही होगा कि वह अमली हालत में इन उमूर को ज़ाहिर कर दे उस वक़्त तक कोई बात बनती नहीं।" अमली हालत क्या है? यह कि अल्लाह तआला के अहकामात पर अमल जो क़ुरआन-ए-करीम में वज़ाहत से वर्णन हुए हैं।

फ़रमाया कि "मैं सच्च कहता हूँ कि असल मुराद तब ही हासिल होती है जब सब कुछ छोड़ छाड़ कर ख़ुदा तआला की तरफ़ मुतवज्जा हो और दरहक़ीक़त दुनिया पर दीन को मुक़द्दम कर दे।" सिर्फ अह्द करने से नहीं होगा अमली तौर पर दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करना होगा।

फ़रमाया "याद रखो मख़लूक़ को इन्सान धोखा दे सकता है और लोग यह देखकर कि पंज वक़्त नमाज़ पढ़ता है या और नेकी के काम करता है धोखा खा सकते हैं।" लोग देखने वाले हैं किसी के अमल को नमाज़ पढ़ते देख के, मस्जिद में आ के नफ़ल पढ़ते देख के कह सकते हैं बड़ा पांचों समय के नमाज़ी है, मस्जिद में आता है। कोई और नेकी का काम किया है। चंदे दे रहा है। बड़ा नेक आदमी है। लोग धोखा खा सकते हैं "मगर ख़ुदा तआला धोखा नहीं खा सकता। इस लिए आमाल में एक ख़ास इख़लास होना चाहिए।" आमाल जो बजा लाने हैं उनमें भी एक इख़लास होना चाहिए और इख़लास वही होगा जो विशेषता अल्लाह तआला की ख़ातिर हो।" यही एक चीज़ है जो आमाल में सलाहियत और ख़ूबसूरती पैदा करती है।" फ़रमाया "अब याद रखना चाहिए कि कलमा जो हम हर-रोज़ पढ़ते हैं उसके क्या अर्थ हैं? कलिमा के यह मअनी हैं कि इन्सान ज़बान से इक़रार करता है और दिल से तसदीक़ कि मेरा माबूद, महबूब और मक़सूद ख़ुदा तआला के सिवा और कोई नहीं।"

जैसा कि पहले भी वर्णन हो चुका है। आप ने फ़रमाया कि " اِلٰه का शब्द महबूब और अस्ल मक़सूद और माबूद के लिए आता है।" सबसे ज़्यादा मुहब्बत इस से हो और वही उद्देश्य हो जिसको हासिल करने की इन्सान की उद्देश्य हो न कि दुनियावी चीज़ें और इबादत सिर्फ उसी की की जाए कोई मख़फ़ी शिर्क भी न हो। फ़रमाया कि " اِلٰه का शब्द महबूब और अस्ल-ए-मक़सूद और माबूद के लिए आता है। यह कलमा क़ुरआन शरीफ़ की सारी तालीम का ख़ुलासा है जो

मुस्लमानों को सिखाया गया है। चूँकि एक बड़ी और मबसूत किताब का याद करना आसान नहीं।" पूरा क़ुरआन शरीफ़ याद करना तो आसान नहीं है" इस लिए यह कलिमा सिखा दिया गया ताकि हर वक़त इन्सान इस्लामी-ए-तालीम के मग़ज़ को दृष्टिगत रखे।" और मग़ज़ किया है لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ। कोई माबूद नहीं सिवाए अल्लाह के। वही मेरा मतलूब है, वही मेरा मक़सूद है, वही मेरा महबूब है।" और जब तक यह हक़ीक़त इन्सान के अंदर पैदा न हो जाए सच्च यही है कि नजात नहीं। इसी लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया مَنْ قَالَ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہُ دَخَلَ الْجَنَّۃَ जिसने सिदक़ दिल से لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ को मान लिया वह जन्नत में दाख़िल हो गया। लोग धोखा खाते हैं।" इस की वज़ाहत में आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "अगर वह यह समझते हैं कि तोते की तरह शब्द कह देने से इन्सान जन्नत में दाख़िल हो जाता है। अगर उतनी ही हक़ीक़त उसके अंदर होती तो फिर सब आमाल बेकार और निकम्मे हो जाते।" केवल لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ कहने से जन्नत में दाख़िल हो जाओ फिर तो अमल सारे ख़त्म हो गए। क़ुरआन-ए-करीम में जो इतने बड़े अहकामात हैं उनकी ज़रूरत ही क्या थी।" और शरीयत (मआज़-अल्लाह) लगू ठहरती। नहीं। बल्कि उसकी हक़ीक़त यह है कि वह मफ़हूम जो इसी में रखा गया है वह अमली रंग में इन्सान के दिल में दाख़िल हो जाए। जब यह बात पैदा हो जाती है तो ऐसा इन्सान फ़िल-हक़ीक़त जन्नत में दाख़िल हो जाता है।" जब इस हक़ीक़त को इन्सान समझ ले لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ के मफ़हूम को तो फिर जन्नत में दाख़िल होता है। "न केवल मरने के बाद बल्कि उसी ज़िंदगी में वह जन्नत में होताहै।"

एक और जगह दूसरी एक मज्लिस में आप फ़र्मा रहे थे। दूसरे अख़बार ने इस को ज़ायद वज़ाहत से इस तरह भी लिखा है। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "ख़ुदा तआला अलफ़ाज़ से ताल्लुक़ नहीं रखता। वह दिलों से ताल्लुक़ रखता है।

इस का अर्थ यह है कि जो लोग दरहक़ीक़त इस कलमा के मफ़हूम को अपने दिल में दाख़िल कर लेते हैं और ख़ुदा तआला की अज़मत पूरे रंग के साथ उनके दिलों में बैठ जाती है वह जन्नत में दाख़िल हो जाते हैं। जब कोई शख़्स सच्चे तौर पर कलिमा का क़ायल हो जाता है तो बजुज़ ख़ुदा के और कोई उस का प्यारा नहीं रहता।" सच्चे तौर पर कलिमा पढ़ लिया तो फिर अल्लाह तआला के इलावा कोई प्यारा रह ही नहीं सकता" सिवाए ख़ुदा के कोई उसका माबूद नहीं रहता" कोई ऐसा शख़्स हो ही नहीं सकता जिसकी मख़फ़ी तौर पर भी इबादत हो।" और बजुज़ ख़ुदा के कोई उसका मतलूब बाक़ी नहीं रहता।" कोई ऐसी चीज़ रहती नहीं जिसका वह तालिब हो। वह सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ा का तालिब होता है।" वह मुक़ाम जो अबदाल का मुक़ाम है और वह जो क़ुतुब का मुक़ाम है और वह जो ग़ौस का मुक़ाम है वह यही है कि कलिमा لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ पर दिल से ईमान हो और उसके सच्चे मफ़हूम पर अमल हो।"

बहरहाल फिर उसी तसलसुल में आगे फ़रमाया कि "यह सच्ची बात है और जल्द समझ में आ जाती है कि जब अल्लाह तआला के सिवा इन्सान का कोई महबूब और मक़सूद न रहे तो फिर कोई दुख या तकलीफ़ उसे सता ही नहीं सकती।"

अगर इन्सान यह समझ ले कि मेरी तकलीफ़ें भी अल्लाह तआला की ख़ातिर ही हैं तो फिर वह उसे सता नहीं सकतीं। इन तकलीफों से परेशान नहीं होता। इस को पता है कि अल्लाह तआला अपने वली की मदद के लिए फ़ौरन पहुंचता है और इस को कुछ हालात में बल्कि अक्सर औक़ात उस को सुकून-ए-क़लब भी अता फ़रमाता है।

फ़रमाया "यह वह स्थान है जो अबदाल और क़ुत्बों को मिलता है।" अगर उद्देश्य ख़ुदा तआला की ज़ात हो, ज़ात का हुसूल हो, दुनिया की चीज़ें न हों तो फिर फ़िक्र नहीं रहती। साहबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस नुक़्ते को समझा। यह नहीं कि क़ुतुब और अबदाल और ख़ास ख़ास लोग हैं सिर्फ उन्ही को मिलता है। साहबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने, अक्सरियत सहाबा ने इस मुक़ाम को हासिल किया। इस नुक़्ते को समझा इसलिए अल्लाह तआला ने इन सहाबा को हमारे लिए उस्वा भी बना दिया।

फिर आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "आप यह ख़्याल न करें कि हम कब बुतों की प्रसतिश करते हैं।" यह कहने के बाद कि बड़ा मुक़ाम है आम आदमियों के लिए भी फ़र्मा दिया कि तुम सिर्फ यह न कहो कि बस हम बुतों की प्रसतिश नहीं करते इसलिए हमारे लिए यही काफ़ी है" हम भी तो अल्लाह तआला ही की इबादत करते हैं।" यह कह देना काफ़ी है। फ़रमाया "याद रखो यह तो अदना दर्जा की बात है कि इन्सान बुतों की प्रसतिश न करे। हिंदू लोग जिनको हक़ायक़ की कोई ख़बर नहीं अब बुतों की प्रसतिश छोड़ रहे हैं।" अर्थात तौहीद की हक़ीक़त का उनको इलम नहीं है तब भी वह बुतों की प्रसतिश छोड़ रहे हैं।" माबूद का मफ़हूम उसी हद तक नहीं कि इन्सान परसती या बुतपरस्ती तक हो।" यही माबूद नहीं है कि इन्सान इन्सानों को न पूजे या बुतों को न पूजे।" और भी माबूद हैं।" इसके इलावा भी माबूद हैं। सिर्फ यह ज़ाहिरी माबूद नहीं।" और यही अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-मजीद में फ़रमाया है कि हवा-ए--नफ़्स और हवस भी माबूद हैं।" नफ़्स की ख़ाहिशात जो हैं और हवस जो है वह भी माबूद बन जाते हैं जब वह अल्लाह तआला के मुक़ाबले पर खड़े हों, जब لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ से दूर ले जाने वाले हों। फ़रमाया "जो शख़्स नफ़्स परसती करता है या अपनी हवाओ हवस की इताअत कर रहा है और इस के लिए मर रहा है वह भी बुतपरस्त और मुशरिक है।" फ़रमाया "यह لَا नफ़ी जिन्स ही नहीं करता बल्कि हर किस्म के माबूदों की नफ़ी करता है।" अर्थात कि لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ में यह कहना कि केवल ज़ाहिरी माबूद नहीं हैं एक माद्दी चीज़ की नफ़ी नहीं कर रहा बल्कि कोई भी चीज़ जो अल्लाह तआला के मुक़ाबले पर लाओ और वह इस बात का ऐलान कर रही है कि इन्सान अल्लाह तआला को नहीं मानता। अतः फ़रमाया हर किस्म के माबूदों की नफ़ी करता है यह समझना चाहिए لَا اِلٰہَ से। "ख़ाह वह لَا اِلٰہَ हो या आफ़ाक़ी।" अंदरूनी और माद्दी हों या ज़ाहिरी और दुनियावी चीज़ें हों।"ख़ाह वह दिल में छपे हुए बुत हैं या ज़ाहिरी बुत हैं। उदाह-रणतः एक शख़्स बिल्कुल अस्बाब ही पर तवक्कुल करता है तो यह भी एक किस्म का बुत है। इस किस्म की बुत परस्ती तप-ए-दिक़ की तरह होती है।"

टी. बी के मरीज़ की तरह होती है "जो अंदर ही अंदर हलाक कर देता है। मोटी किस्म के बुत तो झटपट पहचाने जाते हैं और उनसे मुखलसी हासिल करना भी सहल है और मैं देखता हूँ कि लाखों हज़ारों इन्सान उनसे अलग हो गए और हो रहे हैं। यह मुल्क जो हिंदूओं से भरा हुआ था क्या सब मुस्लमान उनमें से ही नहीं हुए? यह जो मुस्लमान हुए हैं यह भी तो बुतपरस्त थे जो मुस्ल-मान हुए हैं। "फिर उन्होंने बुत परस्ती को छोड़ा या नहीं छोड़ा? और ख़ुद हिंदूओं में भी ऐसे फ़िरक़े निकलते आते हैं।" पहले भी जैसा कि ज़िक्र फ़रमाया" जो अब बुत परसती नहीं करते लेकिन यहां तक ही बुतपरस्ती का मफ़हूम नहीं है। यह तो सच्च है कि मोटी बुतपरस्ती छोड़ दी है मगर अभी तो हज़ारों बुत इन्सान बग़ल में लिए फिरता है और वे लोग भी जो फ़लसफ़ी और मंतक़ी कहलाते हैं वे भी उनको अंदर से नहीं निकाल सकते।" फ़लसफ़ी और मंतक़ी कहलाते हैं, बड़े फ़लसफ़े झाड़ते हैं, बड़ी दलीलें पेश करते हैं लेकिन उनके दिलों में बुत हैं। अपने इलम के ज़ोअम में हैं, वही उनको बुत बनाए हुए हैं। अपने नज़रियात हैं, वही उनके बुत बने हुए हैं।

वे उन्हें नहीं निकाल सकते। फ़रमाया "असल बात यह है कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल के सिवा ये कीड़े अंदर से निकल नहीं सकते। ये बहुत ही बारीक कीड़े हैं और सबसे ज़्यादा ज़रर और नुक़्सान उनका ही है। जो लोग जज़बात-ए--नफ़्सानी से मुतास्सिर हो कर अल्लाह तआला के हुक़ूक़ और हदूद से बाहर हो जाते हैं और इस तरह पर हुक़ूकुल-ईबाद को भी तलफ़ करते हैं वे ऐसे नहीं कि पढ़े लिखे नहीं बल्कि उनमें हज़ारों को मौलवी फ़ाज़िल और आलिम पाओगे और बहुत होंगे जो फ़क़ीहा और सूफ़ी कहलाते होंगे परंतु बावजूद इन बातों के वे भी इन अमराज़ में मुबतला निकलेंगे।" हुक़ूकुल् ईबाद अगर अदा नहीं कर रहे तब भी لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ का अर्थ भूल जाते हैं। "इन बुतों से बचना ही तो बहादुरी है।" बड़े बड़े लोग तुम समझोगे बहुत नेक लोग हैं लेकिन नहीं, बुत उनके के अंदर भी हैं।

इन बुतों से परहेज़ करना बहादुरी है। मुकम्मल तौर पर अल्लाह का हक़ अदा करना, मुकम्मल तौर पर बंदों के हक़ अदा करना तब لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ का सही मफ़हूम पता लगता है और यही बहादुरी है।

"और उनको शनाख़्त करना ही पूर्ण बुद्धिमता और दानिशमंदी है।"फ़रमा-या" यही बुत हैं जिनकी वजह से आपस में नफ़ाक़ पड़ता है और हज़ारों लड़ाई झगड़े हो जाते हैं। एक भाई दूसरे का हक़ मारता है और इसी तरह हज़ारों हज़ार बदियाँ उनके सबब से होती हैं। हर-रोज़ और हर समय होती हैं और अस्बाब पर इस क़दर भरोसा किया गया है कि ख़ुदा तआला को महिज़ एक व्यर्थ का अंग क़रार दे रखा है। "फ़रमाया" बहुत ही कम लोग हैं जिन्हों ने तौहीद के असल मफ़हूम को समझा है और अगर उन्हें कहा जाए तो झट कह देते हैं क्या हम मुस्लमान नहीं और कलिमा नहीं पढ़ते? मगर अफ़सोस तो यह है कि उन्होंने

इतना ही समझ लिया है कि बस कलिमा मुँह से पढ़ दिया और यह काफ़ी है। मैं निसन्देह कहता हूँ कि अगर इन्सान कलमा तुय्यबा की हक़ीक़त से वाक़िफ़ हो जाए और अमली तौर पर इस पर कारबन्द हो जाए तो वह बहुत बड़ी तरक़्क़ी कर सकता है और ख़ुदा तआला की अजीब दर अजीब क़ुदरतों का मुशाहिदा कर रहा है।

यह अमर ख़ूब समझ लो कि मैं जो इस मुक़ाम पर खड़ा हूँ मैं मामूली वायज़ की हैसियत से नहीं खड़ा हूँ और कोई कहानी सुनाने के लिए नहीं खड़ा हूँ बल्कि मैं तो अदाए शहादत के लिए खड़ा हूँ। मैंने वह पैग़ाम जो अल्लाह तआला ने मुझे दिया है पहुंचा देना है। इस अमर की मुझे पर्वा नहीं कि कोई उसे सुनता है या नहीं सुनता और मानता है या नहीं मानता। इसका जवाब तुम ख़ुद दोगे। मैं ने फ़र्ज़ अदा करना है। मैं जानता हूँ बहुत से लोग मेरी जमात में दाख़िल तो हैं और वह तौहीद का इक़रार भी करते हैं मगर मैं अफ़सोस से कहता हूँ कि वे मानते नहीं।

जो शख़्स अपने भाई का हक़ मारता है या ख़यानत करता है या दूसरी किस्म की बदियों से बाज़ नहीं आता। मैं यक़ीन नहीं करता कि वह तौहीद का मानने वाला है क्योंकि यह एक ऐसी नेअमत है कि उसको पाते ही इन्सान में एक ख़ारिक़ आदत तबदीली हो जाती है।"

तौहीद को मानने वाले में तो एक तबदीली पैदा होनी चाहिए। "इस में बुग़ज़, कीना, हसद, रिया इत्यादि के बुत नहीं रहते और ख़ुदा तआला से इस का क़ुरब होता है।

यह तबदीली उसी वक़्त होती है और उसी वक़्त वह सच्चा आबिद बनता है जब ये अंदरूनी बुत तकब्बुर, ख़ुद-पसंदी, दिखावे, कीना-ओ-अदावत, ईर्ष्या और लालच, पाखंड और वादा तौड़ना इत्यादि के दूर हो जावें। जब तक यह बुत अंदर ही हैं उस वक़्त तक لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहने में क्योंकर सच्चा ठहर सकता है?"

अतः उस रमज़ान में हम में से प्रत्येक को कोशिश करनी चाहिए कि इन बुतों से भी अपने आपको पाक करें ताकि لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه के हक़ीक़ी मफ़हूम को हम समझ सकें और इस पर ईमान लाने वाले हों। फ़रमाया "क्योंकि इस में तवक्कुल की नफ़ी मक़सूद है। अतः यह पक्की बात है कि सिर्फ मुँह से कह देना कि ख़ुदा को वह وَحْدَهٗ لَاشَرِيْك मानता हूँ कोई नफ़ा नहीं दे सकता। अभी मुँह से कलमा पढ़ता है और अभी कोई अमर ज़रा मुख़ालिफ़-ए-मिज़ाज हुआ और ग़ुस्सा और ग़ज़ब को ख़ुदा बना लिया। मैं बार-बार कहता हूँ कि इस अमर को हमेशा याद रखना चाहिए कि जब तक यह मख़फ़ी माबूद मौजूद हूँ हरगिज़ तवक़्क़ो न करो तुम इस मुक़ाम को हासिल कर लोगे जो एक सच्चे इबाद करने वाले को मिलता है जैसे जब तक चूहे ज़मीन में हैं मत ख़्याल करो कि ताऊन से महफ़ूज़ हो। इसी तरह पर जब तक ये चूहे अन्दर हैं "अर्थात कि बुराईयों के चूहे। "इस वक़्त तक ईमान ख़तरा में है। जो कुछ मैं कहता हूँ उसको ख़ूब ग़ौर से सुनो और इस पर अमल करने के लिए क़दम उठाओ।" फ़रमाया "अतः कलमा के मुताल्लिक़ ख़ुलासा तक़रीर का यही है कि अल्लाह तआला ही तुम्हारा माबूद और महबूब और मक़सूद हो और यह मुक़ाम उसी वक़्त मिलेगा जब हर किस्म की अंदरूनी बदियों से पाक हो जाओगे और उन बुतों को जो तुम्हारे दिल में हैं निकाल दोगे।"

(मल् फ़ूज़ात, भाग 9 पृष्ठ 101 से 108 हाशिया के साथ पृष्ठ नंबर 104 ऐडीशन 1984 ई.)

अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ अता फ़रमाए कि रमज़ान के इन बक़ाया दिनों में विशेषतः कोशिश और दुआ से अपने अंदर की समस्त बदियों को निकालने वाले बन जाएं।

हर किस्म के मख़फ़ी से मख़फ़ी शिर्क से भी बचने वाले हों। हर किस्म के बुतों को निकालने वाले हों। अल्लाह तआला ही सिर्फ हमारा माबूद और मक़सूद और महबूब बन जाए। कलमा لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه की हक़ीक़त को हम समझने वाले हों और मुहम्मद रसूलुल्लाह का जब हम इक़रार करें तो हमारे सामने अमली ज़िंदगी गुज़ारने के लिए वह हसीन उस्वा हो जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमारे सामने क़ायम फ़रमाया। और यह सब बातें अल्लाह तआला के फ़ज़ल के बग़ैर नहीं हो सकतीं और अल्लाह तआला के फ़ज़ल को जज़ब करने के लिए हमें एक अमली जिहाद और रुहानी जिहाद करना होगा।

रमज़ान के आख़िरी दस दिनों में हम लेलतुल कदर की बातें करते हैं तो लेलतुल कदर तो हक़ीक़त में उस वक़्त मिलती है जब हम अपना सब कुछ, अपना हर क़ौल और फ़ेअल अल्लाह तआला के हुक्मों के मुताबिक़ करने के लिए तैयार हो जाएं और इस पर अमल करने वाले हों और फिर उसे मुस्तक़िल अपनी ज़िंदगियों का हिस्सा बना लें और यही वे हक़ीक़ी निशानी है जो लेलतुल कदर के पाने की है।

यह आरिज़ी निशानियां कि हमने रोशनी देख ली, हमने अमुक चीज़ देख ली, हमें इस तरह महसूस हुआ, बारिश आ गई और ख़ुशबू आ गई, अमुक चीज़ आ गई यह तो आरिज़ी चीज़ें हैं असल निशानी यह है कि क्या इन्क़लाब हमारे दिलों में पैदा हुआ।

कुछ जमाअतों ने दुआओं के भी ख़ास प्रोग्राम मेरी इस बात को सामने रखते हुए बनाए हैं कि अगर हम ख़ालिस हो कर तीन दिन दुआएं करें तो अल्लाह तआला का ख़ास फ़ज़ल ज़ाहिर हो सकता है। अगर तो हम ने यह तीन दिन खासतौर पर इसलिए मुक़र्रर किए हैं कि यह तीन दिन दुआओं में लगा लो और फिर अपनी पुरानी तर्ज़-ए-ज़िंदगी पर आ जाओ और لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه के हक़ीक़ी उद्देश्य को भूल जाओ तो हमें याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला हमारे दिलों के हाल को जानता है, हमारी नियतों को जानता है। इस से कोई चीज़ छिपी हुई नहीं है। इस का कोई फ़ायदा नहीं होगा।

अतः अगर अल्लाह तआला को राज़ी करने के लिए ये दिन दुआओं में गुज़ारना चाहते हैं तो फिर उस अह्द के साथ गुज़ारने होंगे कि अब ये दिन हमारी ज़िंदगीयों का मुस्तक़िल हिस्सा बन जाऐंगे और फिर ये तकलीफ़ें जो मुख़ालिफ़ हमें पहुंचा रहा है उनको दूर करने के लिए ख़ुदा तआला अपनी ख़ास ताईद-ओ-नुसरत ज़ाहिर फ़रमाएगा। इंशा-ए-अल्लाह। और अपने वादे के मुताबिक़ अल्लाह तआला हमारा वली बन जाएगा जब हम अल्लाह तआला के हो जाऐंगे। बहरहाल मैंने तो यह भी कहा था कि हर फ़र्द-ए-जमात बिना इस्तस्ना अपनी ऐसी हालत पैदा करे फिर यह इन्क़िलाब होगा।

अतः यह भी याद रखें कि अगर ये हालत पैदा नहीं होती तो तीन दिन के बाद यह न समझ लें जिन्हों ने प्रोग्राम बनाए हुए हैं कि नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) अल्लाह तआला हमारी दुआओं को नहीं सुनता या कोई इन्क़लाब पैदा नहीं होना। ये तो अल्लाह तआला का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वादा है कि आपको और आपकी जमाअत को वह जल्द या कुछ अरसा बाद फ़ुतूहात अता फ़रमाएगा। हाँ अगर हम अपनी हालतों में इन्क़लाबी तबदीलीयां पैदा कर लें और لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه की हक़ीक़त को समझते हुए अपना माबूद और मक़सूद और महबूब सिर्फ़ अल्लाह तआला की ज़ात को बना लें, दुनिया से ज़्यादा हमें ख़ुदा तआला से मुहब्बत और इस को पाना हमारा मक़सूद हो तो यह इन्क़लाब जल्दी भी आ सकता है।

अल्लाह तआला बेनयाज़ भी है। इस की बातों में शरायत भी होती हैं। अतः हमें मुस्तक़िल अपनी हालतों में तबदीलीयां पैदा करने का अह्द करना होगा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि रमज़ान के अंतिम दस दिन जहन्नुम से निजात के दस दिन है।

(الجامع لشعب الایمان, भाग 5 पृष्ठ 223-224 फ़ज़ायल शहर रमज़ान, हदीस 3336 मकतब रुश्द अल् रियाज़ 2003 ई.)

और फिर,जैसा कि वर्णन हुआ, यह भी फ़रमाया कि जिसने कलमा لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه दिल से पढ़ा उस पर जहन्नुम की आग भी हराम हो गई। तो ये सब बातें इस तरफ़ तवज्जा दिलाती हैं कि इन्सान के अमल ज़रूरी हैं और मुस्तक़िल अमल ज़रूरी हैं।

जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी फ़रमाया है और इस को तफ़सील से मैंने वर्णन किया है कि لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه कहने के साथ अमल करना बहुत ज़रूरी है।

अतः इस आख़िरी अशरे से भर पूर फ़ायदा उठाने के लिए, हक़ीक़ी तौर पर लेलतुल कदर हासिल करने के लिए हमें لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه के कलमा को अपने दिल-ओ-दिमाग़ की आवाज़ बनाना होगा, अपने हर अमल पर लागू करना होगा जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया है।

अल्लाह तआला हमें इस के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगियां गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

इन दिनों में दुनिया के उमूमी अमन शांति के लिए भी दुआ करते रहें। अल्लाह तआला इन्सानियत पर रहम और फ़ज़ल फ़रमाए।

★ ★ ★

ख़िलाफ़त आफ़ियत का हिसार
(ख़िलाफ़त: एक सुरक्षित क़िला)

(श्रीमान के. तारिक़ अहमद साहिब, सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत व इंचार्ज विभाग नूरुल इस्लाम)

भाषण जलसा सालाना कादियान 2022 ई.

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً قَالُوا أَتَجْعَلُ فِيهَا مَنْ يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَاءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ قَالَ إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ

(सूरः बकरः : 31)

अनुवाद : और (याद रख) जब तेरे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि निसन्देह मैं ज़मीन में एक ख़लीफ़ा बनाने वाला हूँ। उन्होंने कहा क्या तू उस में वह बनाएगा जो उस में फ़साद करे और ख़ून बहाए जबकि हम तेरी हमद के साथ तस्बीह करते हैं और हम तेरी पाकीज़गी वर्णन करते हैं। उस ने कहा निसन्देह मैं वह सब कुछ जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

सिदक़ से मेरी तरफ़ आओ इसी में ख़ैर है
हैं दरिंदे हर तरफ़ मैं आफ़ियत का हूँ हिसार

हज़रात! सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वर्णन फ़रमाते हैं :

"इस ज़माना का हुस्न-ए-हुसैन मैं हूँ। जो मुझ में दाख़िल होता है वे चोरों और क़ज़्ज़ाक़ों और दरिंदों से अपनी जान बचाएगा परंतु जो शख़्स मेरी दीवारों से दूर रहना चाहता है हर तरफ़ से उसको मौत दरपेश है और उसकी लाश भी सलामत नहीं रहेगी। (फ़तह इस्लाम, पृष्ठ : 34)

काबिल-ए-एहतेराम सदर-ए-इज्लास, मुअज़्ज़िज़ हज़रात! अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातहू। मेरी तक़रीर का विषय जैसा कि आप सुन चुके हैं "ख़िलाफ़त आफ़ियत का हिसार" है।

हज़रात! हज़रत-ए-आदम अलैहिस्सलाम की ख़िलाफ़त के आरंभ में ख़ालिक़-ए-हक़ीक़ी और मलायक का यह मुकालमा एक अमर की ख़ूब वज़ाहत करता है कि ख़लीफ़ा के अमन प्रदान करने वाले वजूद के साथ इस क़दर ख़ून-खराबा और फ़साद के बादल घिरे नज़र आते हैं कि मलायक भी इसकी हक़ीक़त को समझने से क़ासिर होते हैं कि दरअसल इस तूफ़ान बेतमीज़ी का मुहर्रिक कौन है और वह कौन सा क़िला सुरक्षा का है जो इस ज़ुलम से धरती को पाक करेगा। इसलिए अल्लाह तआला का मुख़्तसर-सा जवाब मलायका को खामोश करने वाला था कि थी إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ कि निसन्देह मैं वह सब कुछ जानता हूँ जो तुम नहीं जानते हो।

तारीख़-ए-आलम गवाही देते हुए बोलती है कि फिर अल्लाह तआला की तक़दीर ने ख़िलाफ़त आफ़ियत का हिसार के मज़मून को अपनी ग़ालिब क़ुदरत के अजीब दर अजीब ज़हूर से इस क़दर स्पष्ट और रोशन कर दिया कि फिर क्या जिन् और इन्स क्या मलायक सबको अपनी कमी का एतराफ़ करते हुए सजदा करना पड़ा।

यह मज़मून ऐसा नहीं कि एक प्राचीन किस्सा हो बल्कि ऐसा जारी व सारी बहता हुआ है कि जिस का कोई किनारा नहीं और अल्हम्दोलिल्ला हम वे ख़ुश-क़िस्मत जमाअत हैं जो ख़िलाफ़त के फ़्यूज़-ओ-बरकात और इसकी आफ़ियत का हिसार होने के ईमान अफ़रोज़ नज़ारों के आखों देखे गवाह हैं और हर समय उस के निशानात को देख रहे हैं।

एहसान उसके हम पर हैं बे हद व बे-कराँ
जो गिन सके उन्हें नहीं ऐसी कोई ज़बां

ख़िलाफ़त का निज़ाम एक बहुत ही मुबारक निज़ाम है। जिसके द्वारा नबुव्वत का सूरज ज़ाहिरी रूप में डूबने के बाद अल्लाह-तआला नबुव्वत के चाँद की रोशनी के निकलने का इंतेज़ाम फ़रमाता है और ऐसी जमाअत को इस धक्के के असरात से बचा लेता है जो नबी की वफ़ात के बाद नवनिर्मित जमात पर एक भारी मुसीबत के तौर पर अवतरित होती है।

निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त वह बाबरकत आसमानी निज़ाम-ए-क़ियादत है जो अल्लाह-तआला जमाअत मोमिनीन को उनकी रुहानी जीवन और तरक़्क़ी के लिए अता फ़रमाता है। यह एक अज़ीम इनाम है जो ईमान और अमल-ए--सालेह की बुनियादी शरायत से वंचित है। इस ख़ुदाई मोहब्बत की हैसियत एक अल्लाह की रस्सी की है। इस ख़ुदाई रस्सी को मज़बूती से थामे रखना मोमेनीन की जमाअत के लिए उनके ईमान की तसदीक़ भी है और अमन-ओ-अमान और रुहानी प्रगति की भी।

हज़रात! आज हम देखते हैं कि दुनिया ख़तरात-ओ-मसायब से घिरी हुई है। वर्तमान समय का नक़्शा खींचते हुए हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम ने से क़बल अज़ वक़्त ही स्पष्ट शब्दों में ऐलान फ़र्मा दिया कि :

"हे यूरोप तू भी अमन में नहीं और हे एशिया तू भी सुरक्षित नहीं। और हे जज़ायर के रहने वालो कोई बनावटी ख़ुदा तुम्हारी सहायता नहीं करेगा। मैं शहरों को गिरते देखता हूँ और आबादियों को वीरान पाता हूँ। वह वाहिद यगाना एक मुद्दत तक ख़ामोश रहा और उसकी आँखों के सामने मकरूह काम किए गए और वह चुप रहा परंतु अब वह हैबत के साथ अपना चेहरा दिखलाएगा जिसके कान सुनने के हों सुने कि वह वक़्त दूर नहीं। मैंने कोशिश की कि ख़ुदा की अमान के नीचे सबको जमा करूँ पर आवश्यक था कि तक़दीर के नविश्ते पूरे होते। मैं सच्च सच्च कहता हूँ कि इस मुल्क की नौबत भी क़रीब आती जाती है नूह का ज़माना तुम्हारी आँखों के सामने आ जाएगा और लूत की ज़मीन का वाक़िया तुम बचश्म ख़ुद देख लोगे। परंतु ख़ुदा ग़ज़ब में धीमा है तौबा करो ता तुम पर रहम किया जाए जो ख़ुदा को छोड़ता है वह एक कीड़ा है न कि आदमी और जो इस से नहीं डरता वह मुर्दा है न कि ज़िंदा।"

(हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 22 पृष्ठ 268)

आज बनीनौ इन्सान की हालत وكنتم على شفا حفرة من النار का सा है कि दुनिया उस वक़्त एक बहुत बड़ी तबाही के किनारे पर खड़ी है। आज दुनिया में एक बेचैनी और ख़ौफ़ की फ़िज़ा है और जंग के बादल मंडला रहे हैं। आलम--ए-इन्सानियत को इस वक़्त दीगर दुनियावी ज़रूरीयात के साथ साथ अमन--ओ-शांति और ख़ैर-ओ-आफ़ियत की जिस क़दर ज़रूरत है वह शायद इस से क़बल कभी नहीं रही। तीसरी आलमी जंग के ख़तरात पैदा हो चुके हैं। इस सूरत-ए-हाल में दुनिया में इन्सानियत का हमदरद और उसकी बेलौस ख़िदमत और इस की ख़ैर-ओ-आफ़ियत के लिए दुआएं करने वाला एक मुक़द्दस आसमानी निज़ाम ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया है। आज दुनिया में अमन शांति की जिस क़दर कोशिशें ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया ने की हैं इसकी कोई नज़ीर मौजूद नहीं है। हमारे प्यारे इमाम हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का वजूद ही है जो दुनिया को तीसरी आलमी जंग से मुद्दत से मुसलसल ख़बरदार कर रहा है। अमन, सुलह जोई और आश्ती की कोशिशें करने वाला एक ही आलमी राहनुमा है और हमारी ख़ुशक़िसमती कि हम उसके मानने वाले हैं। परंतु वे जो उसे नहीं मानते, वह उन के लिए भी ऐसे ही दर्द रखता और दुआएं करता है और उनके लिए भी ख़ैर चाहता है क्योंकि इस ज़माना में सिर्फ और सिर्फ ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया ही है जो आफ़ियत का किला है।

आज जब नास्तिकता चरम पर है और लोग अपने ख़ालिक़, अपने पैदा करने वाले को भूल रहे हैं और उसकी वजह से इन्फ़रादी-ओ-इजतेमाई बे अमनी और बे-सुकूनी का शिकार हो रहे हैं, हमारे प्यारे इमाम दुनिया को हक़ीक़ी हिसार-ए-आफ़ियत अर्थात ख़ुदा तआला को पहचानने की तरफ़ ध्यान दिलवा रहे हैं। हुज़ूर अनवर ने मुतअद्दिद फ़ोर्मज़ पर क़ुरआनी और तारीख़ी मिसालें देकर साबित फ़रमाया है कि दुनिया में हक़ीक़ी और पायदार अमन का

क़ियाम ख़ुदा तआला की ज़ात को पहचानने और उसके हुक़ूक़ अदा करने, हुक़ूक़ु ल-ईबाद की अदायगी और क़ियाम-ए-इन्साफ़ से मशरूत है। सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने जलसा जर्मनी 2022 ई. के अवसर पर इरशाद फ़रमाया कि :

"अतः हक़ीक़ी अमन दुनिया में लाने के लिए यही अक़ीदा और इस पर अमल कारगर होगा कि दुनिया का एक ख़ुदा है जो यह चाहता है कि सब लोग अमन में रहें। हक़ीक़ी अमन उस वक़्त तक क़ायम नहीं हो सकता जब तक एक बाला हस्ती को तस्लीम न किया जाए, जब तक उसकी मुहब्बत दिल में पैदा न हो और यह अक़ीदा कि अल्लाह तआला अमन देने वाला है सिर्फ इस्लाम ने ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़रीया पेश किया है। अमन उस वक़्त तक क़ायम हो ही नहीं सकता जब तक लोगों के अंदर हक़ीक़ी मुवाख़ात पैदा न हो और हक़ीक़ी मुवाख़ात एक ख़ुदा को माने बग़ैर पैदा नहीं हो सकती।"

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुनिया के मुख़्तलिफ़ सरबराहान मुल्क को भी क़ियाम-ए-अमन की तरफ़ अपने ख़ुतूत के ज़रीया तवज्जा दिलाई है।

तिथि 8 मार्च 2012 ई. को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अमरीका के सदर बाराक ओबामा को मुख़ातब करते हुए फ़रमाया :

"दुनिया में अमन-ओ-अमान की बिगड़ती हुई सूरत-ए-हाल को देखते हुए मैंने यह ज़रूरी महसूस किया कि आपकी तरफ़ यह ख़त रवाना करूँ क्योंकि आप संयुक्त राज्य अमेरिका के सदर के मन्सब पर फ़ायज़ हैं और यह ऐसा मुलक है जो सुपर पावर है .. मेरी आप से बल्कि समस्त आलमी लीडरों से यह दरख़ास्त है कि दुनिया में अमन के क़ियाम के लिए अपना किरदार अदा करें ... अल्लाह तआला आपको और समस्त आलमी लीडरों को यह पैग़ाम समझने और इस पर अमल करने की तौफीक बख़्शे।"

इसी तरह सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने कलीदी ख़िताब, यार्क यूनीवर्सिटी के अवसर पर, ओंटेरियो, कैनेडा, में फ़रमाया :

"यदि हम हक़ीक़ी तौर पर शांति क़ायम करना चाहते हैं तो हमें इन्साफ़ से काम लेना होगा। हमें अदल और मुसावात को एहमियत देनी होगी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क्या ही ख़ूबसूरत फ़रमाया है कि दूसरों के लिए वही पसंद को जो अपने लिए पसंद करते हो। हमें केवल अपने फ़ायदे के लिए नहीं बल्कि बड़े दिल से काम लेते हुए दुनिया के फ़ायदे के लिए काम करना होगा। इस ज़माना में हक़ीक़ी अमन के क़ियाम के यही माध्यम हैं।"

(तिथि 28 अक्तूबर 2016 ई. यार्क यूनीवर्सिटी, ओंटेरियो, कैनेडा)

ख़िलाफ़त के ज़ेरे साया हिसार-ए-आफ़ियत में आने की एक मिसाल यह भी है कि कोरोना महामार के फूटने के बाद दुनिया के अक्सर मज़हबी हलक़े जो इजतेमाई इबादात बजा लाते हैं झिझक का शिकार हो कर इफ़रात-ओ-तफ़रीत में मुबतला नज़र आए। मुस्लमान हलक़ों में मस्जिद की जगह घरों में पांचों समय नमाज़ और नमाज़-ए-जुमा की अदायगी से मुताल्लिक़ बहसें छिड़ गईं और कई जगह तो नौबत झगड़ों तक पहुंची। कुछ ने ऐसी ज़्यादती की कि बावजूद रुख़स्त के मस्जिद में हाज़िर हो कर बिना एहतेयात बाजमाअत नमाज़ अदा करना ज़रूरी क़रार दिया और नतीजतन नुक़्सान उठाया और कुछ ऐसे थे कि एहतियात के नाम पर इबादात को ही तर्क कर बैठे। लेकिन इमाम जमाअत अहमदिया ने 27 मार्च 2020 ई. को अपने दफ़्तर से नशर किए जाने वाले ख़ुसूसी पैग़ाम में दुनिया-भर के अहमदियों को वबाई हालात में घरों में नमाज़ें और जुमे अदा करने की तलक़ीन फ़रमाई। इस पर ख़लीफ़-ए-वक़्त का दस्त--ओ-बाज़ू, निज़ाम-ए-सिलसिला हरकत में आया और हर मुम्किन ज़रीये से अहमदियों को घरों में इबादात बजा लाने के मसायल सिखा दिए गए। नतीजन हर अहमदी घर बिना देरी किए घरों में इबादात बजा लाने लगा। अल-ग़र्ज़ जहां इमाम-ए-वक़्त को न मानने वाले परेशानी का शिकार हुए वहीं ख़िलाफ़त की बरकत से न ख़ौफ़ और परेशानी पैदा हुई और न ही फ़रायज़ की अंजाम दही में कोताही हुई। ऐसा भला क्यों न होता वे आफ़ियत के हिसार में जो थे।

अतः निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त की अगर एक तरफ़ बुनियादें ईमान की मुस्तह-कम चट्टान पर क़ायम हैं तो दूसरी तरफ़ उसकी फ़सीलें अर्श के रब को छू रही हैं। जहां ख़ुदा तआला की ताईद-ओ-नुसरत और हिफ़्ज़-ओ-अमान के जल्वे हर वक़त प्रकट होते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दुआओं के नतीजा में और आपके तसल्ली और हौसला देने वाले अल्फ़ाज़ के ज़रीया से अफ़राद-ए-जमाअत को इतमेनान-ए-क़लब हासिल होता है और उनको अमन-ओ-अमान की ज़मानत मिलती है। श्रीमान मुनीर जावेद साहिब प्राईवेट सेक्रेटरी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"4 मई 2006 ई. गुरुवार का दिन था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने फ़ार ईस्ट देशों के दौरान नांदी फिजी में थे। रात क़रीबन अढ़ाई बजे का वक़्त था कि रबवाह ,लंदन और दुनिया के विभिन्न देशों से फ़ोन आने शुरू हो गए कि इस वक़्त टीवी पर जो ख़बरें आ रही हैं उनके मुताबिक़ एक बहुत बड़ा सूनामी तूफ़ान फिजी के साथ जज़ाइर TONGA में आया है और यह तूफ़ान ताक़त के लिहाज़ से इंडोनेशिया वाले सूनामी से बड़ा है जिसने लाखों लोगों को खत्म कर दिया था। और दुनिया के कई देशों में तबाही मचाई थी। जब TV ऑन किया तो ये ख़बरें आ रही थीं कि यह सूनामी मुस-लसल अपनी शिद्दत और ताक़त में बढ़ रहा है और सुबह के वक़्त नांदी फिजी का सारा इलाक़ा ग़र्क़ कर देगा। सुबह साढ़े चार बजे जब हुज़ूर अनवर अय्य-दहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ नमाज़-ए-फ़ज्र की अदायगी के लिए तशरीफ़ लाए तो हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में इस तूफ़ान के बारे में रिपोर्ट पेश हुई और जो पैग़ामात ख़ैरीयत दरयाफ़त करने के लिए फ़ोन पर मौसूल हो रहे थे उनके मुताल्लिक़ बताया गया। हुज़ूर अनवर ने नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई और बड़े लंबे सज्दे किए और ख़ुदा के हुज़ूर मुनाजात कीं। नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर मसीह के ख़लीफ़ा ने अहबाब-ए-जमाअत को संबोधित हो कर फ़रमाया कि फ़िक्र न करें अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाएगा कुछ नहीं होगा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वापस तशरीफ़ ले आए। वापस आकर जब हम ने TV ऑन किया तो TVपर यह ख़बरें आना शुरू हो गईं कि इस सूनामी का ज़ोर टूट रहा है और आहिस्ता-आहिस्ता उसकी शिद्दत ख़त्म हो रही है। फिर क़रीबन दो अढ़ाई घंटे के बाद यह ख़बरें आ गईं कि इस तूफ़ान का वजूद ही मिट गया है। अतः इस दुनिया ने अजीब नज़ारा देखा कि वह सूनामी जिसने अगले चंद घंटों में लाखों लोगों को ग़र्क़ करते हुए सारे इलाक़ा को सफ़ा हस्ती से मिटा देना था ख़लीफ़-ए-वक़्त की दुआ से चंद घंटों मैं ख़ुद ने उसका वजूद मिट गया। उस रोज़ फिजी के अख़बारात ने यह ख़बरें लगाईं कि सूनामी का टल जाना किसी चमत्कार से कम नहीं।"

सूरत अल-नूर आयत नम्बर 56 आयत इस्तख़लाफ़ में अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त की जिन नेअमतों का वर्णन किया है इस में ये भी वर्णन फ़रमाया है कि और उन की ख़ौफ़ की हालत के बाद ज़रूर उन्हें अमन की हालत में बदल देगा। अर्थात अल्लाह तआला का यह भी वादा है कि इन अज़ीमुश्शान नेअमतों की बरकत से एक तीसरा इनाम उस जमाअत मोमिनीन को यह अता होगा कि जब भी उन्हें किसी वजह से हालत-ए-ख़ौफ़ से गुज़रना पड़ेगा तो अल्लाह तआला उसको हालत अमन में बदल देगा। इसलिए इस ज़िमन में हॉलैंड का एक वाक़िया है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने ख़ुतबा जुमा 9 दिसंबर 2011 ई. में फ़रमाते हैं

"पिछले दिनों जब मैं यूरोप के दौरे पर गया था तो वापसी पर एक जुमा हॉलैंड में भी पढ़ाया था और वहां मैंने वहां के एक सियास्तदान, मैंबर आफ़ पार्लीमैंट और एक पार्टी के लीडर जिन का नाम ख़ैरत विल्डर है, को यह पैग़ाम ख़ुतबा में दिया था कि तुम लोग इस्लाम के ख़िलाफ़ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ जो बुरी भाषा के प्रयोग में बढ़े हुए हो, घटिया किस्म की बातें कर रहे हो, दुश्मनी में इंतेहा की हुई है। इस चीज़ से बाज़ आओ, नहीं तो उस ख़ुदा की लाठी से डरो जो बे-आवाज़ है जो अपने वक़्त पर फिर तुम जैसों को तबाह-ओ-बर्बाद भी कर दिया करती है। वह ख़ुदा यह ताक़त रखता है कि तुम जैसों की पकड़ करे। मैं ने यह भी कहा था कि हमारे पास ताक़त तो कोई नहीं, हम दुआओं से तुम जैसों का मुक़ाबला करेंगे। इस ख़ुतबा के खुलासे पर मुश्तमिल प्रैस रीलीज़ जो हमारा प्रैस सैक्शन भेजता है, उनके इंचार्ज जब यह रीलीज़ बना कर मेरे पास लाए तो बाक़ी चीज़ें तो उन्होंने लिखी हुई थीं लेकिन यह फ़िक़रा नहीं लिखा था। फिर उनको मैं ने कहा कि यह फ़िक़रा भी ज़रूर लिखें कि हमारे पास कोई दुनियावी हथियार नहीं है। यही मैं ने कहा था। लेकिन हम दुआ करते हैं कि तुम और तुम जैसे जितने हैं वह फ़ना हो जाएं। और

हक़ीक़त भी यही है कि हमारा अपने समस्त मुख़ालेफ़ीन और दुश्मनों से मुक़ाबला या तो दलायल के साथ है या फिर सबसे बढ़कर दुआओं के साथ। बहर हाल यह प्रैस रीलीज़ जो थी, यह ख़ैरत विल्डर जो सियास्तदान है उसने भी पढ़ी और उन्होंने अपनी हुकूमत को ख़त लिखा और हुकूमत से, होम मिनिस्टर से चंद सवाल किए। जब यह वहां प्रैस में आए तो वहां की जमात ने मुझे लिखा कि इस तरह इस ने सवाल किए हैं। लगता था कि जमात वालों को थोड़ी सी घबराहट है। इस पर मैं ने उन्हें कहा था कि अगर होम ऑफ़िस वाले पूछते हैं तो डरने की ज़रूरत नहीं है, परेशान भी होने की ज़रूरत नहीं, खुल कर अपना मत वर्णन करें। बुनियाद तो इस शख़्स ने ख़ुद क़ायम की थी जो ग़लत किस्म की हरकतें कर रहा है। जिसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ग़लत फिल्में भी बनाई हैं। इंतेहाई सख़्त ज़बान इस ने प्रयोग की थी। इस्लाम को बदनाम किया था। हमने तो उसका जवाब दिया था और यह कहा था कि ख़ुदा तआला अपने नबी की ग़ैरत रखने वाला है और वह पकड़ सकता है। ख़ुदा तआला से डरना चाहिए।

बहर हाल उस ने यह सवाल जो अपनी हुकूमत को भेजे थे, उसके सवालों का कुछ दिनों के बाद हुकूमत ने जवाब भी दिया और यह वहां अख़बार में भी आ गया।

विल्डर ने पहला सवाल यह किया था कि क्या यह आर्टीकल कि World muslim leader sends warning to Dutch politician Geert Wilders आलमी मुस्लमान रहनुमा की हॉलैंड के सियास्तदान ख़ैरत विल्डर को चेतावनी आप अर्थात वज़ारात-ए-दाख़िला हॉलैंड के इलम में है? तो वज़ीर--ए-दाख़िला ने उस को जवाब दिया कि हाँ मुझे इल्म है। यह आर्टीकल मैं ने पढ़ा है।

फिर अगला प्रशन उस का यह था, (मेरा नाम लिया था) कि मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने यह कहा है कि तुम सुन लो कि तुम्हारी पार्टी और तुम्हारे जैसा हर शख़्स अंततः फ़ना होगा। यह विल्डर ने मिनिस्टर को लिखा। फिर आगे उस की तशरीह ख़ुद करते हुए वह लिखता है कि इस मुफ़सिदाना वर्णन पर वज़ारात--ए-दाख़िला इस्लामी तंज़ीम के ख़िलाफ़ क्या क़दम उठाने का इरादा रखती है? डच वज़ीर-ए-दाख़िला ने उत्तर दिया कि प्रैस रीलीज़ के मुताबिक़ मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने कहा है कि ऐसे अफ़राद और गिरोह किसी फ़साद या अन्य सैकूलर हर्बों से नहीं बल्कि सिर्फ़ दुआ के ज़रीये हलाक होंगे। इस वर्णन पर में कोई ऐसी बात नहीं देखता जो कि फ़साद को हुवा देती हो या बायस-ए-फ़साद हो। इस लिए मुझे कोई वजह नज़र नहीं आती कि मैं अहमदिया मुस्लिम जमात के ख़िलाफ़ कोई क़दम उठाऊँ। फिर तीसरा सवाल उस ने किया था कि अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी हॉलैंड का आलमगीर जमात अहमदिया मुसलमा और मसरूर अहमद से क्या ताल्लुक़ है? इसका डच वज़ीर ने जवाब दिया कि अह-मदिया मुस्लिम जमात हॉलैंड आलमगीर जमाअत अहमदिया मुसलमा का ही एक भाग है।"

अतः ख़िलाफ़त वह क़िला है जिसकी फ़सीलें डर के हस्तक्षेप से ऊंची र हैं। वह ख़ौफ़ ख़ाह मुनाफ़क़त का हो या अदावत का। जंग का हो या सियासत का। किसी गिरोह की तरफ़ से हो या बादशाहत की तरफ़ से। हर हाल में ख़िलाफ़त अमन का हिसार का निशान है। बड़ी से बड़ी हुकूमत भी इस को नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती बल्कि तारीख़ शाहिद है कि जो हुकूमत भी ख़िलाफ़त हक़्क़ा से टकराई, टुकड़े टुकड़े हो गई।

ख़िलाफ़त एक ऐसा ज़िंदा वृक्ष है कि जो इस से जुड़ा रहता है ख़ाह वह ख़ुतूत के ज़रीया ही हो ख़ाह वह हुज़ूर के लिए दुआएं कर के अपने आपको हुज़ूर की मज्लिस में रखे तो अल्लाह तआला उस को आफ़ियत के हिसार में रखता है।

एवरी कोस्ट के एक नौजवान पायलट एक साल के कोर्स के लिए बेलजीयम आए हुए थे। यहां हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से शरफ़-ए-मुलाक़ात हासिल किया और उन्हों ने बताया कि उन्हें जो पायलट बनने के लिए मुंतख़ब किया गया है वह हुज़ूर अनवर की दुआओं के तुफ़ैल है।

वाक़िया इस तरह हुआ कि वह कुछ वर्ष पूर्व जब जलसा सालाना आवरी कोस्ट में शामिल हुए तो वहां उनके दोस्त ने उनसे कहा कि मैंने एक विज्ञापन देखा कि एवरी कोस्ट लोगों को अपनी सर्विस में लेने के लिए मुक़ाबला करवा रही है। लेकिन फाईल जमा करवाने की तारीख़ गुज़र गई है। मौसूफ़ बताते हैं कि बावजूद उस के कि तारीख़ गुज़र गई थी। मैंने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में दुआ के लिए लिखा और साथ ही अपनी फाईल जमा करवा दी। कुछ दिनों बाद उनको जवाब मिला कि जबकि आपने फाईल देरी से जमा करवाई है। लेकिन हम आपको इजाज़त देते हैं कि आप इस मुक़ाबला में हिस्सा लें। इसके बाद उन्होंने इस मुक़ाबला के लिए तहरीरी इमतेहान दिया और एक हज़ार उम्मीदवा-रों में से सिर्फ पंद्रह उम्मीदवार मुंतख़ब हुए। जिनमें उनका नाम भी शामिल था। उन्हों ने कहा यह सब कुछ हुज़ूर अनवर की दुआओं के तुफ़ैल हुआ। (उद्धृत अल् फ़ज़ल इंटरनैशनल 25 अक्तूबर 2019 पृष्ठ 20)

जर्मनी से एक तिफ़्ल ने इस बात का इज़हार किया है। कहते हैं मैंने अपने प्यारे हुज़ूर की ख़िदमत में एक दुआ की दरख़ास्त की कि अल्लाह तआला मेरे ख़ानदान को हर किस्म के मसायल से निकाले और किसी को किसी किस्म की परेशानी न रहे। तो कहते हैं उस वक़्त मेरे एक अंकल अकेले पाकिस्तान में रहते थे, सारे रिश्तेदार बाहर थे और बड़े मसायल में घिरे हुए थे। कोई जानने वाला पास न होने की वजह से हर वक़्त परेशान भी रहते थे तो मैंने उस वक़्त हुज़ूर की ख़िदमत में उनकी ख़ातिर एक दुआ का ख़त लिखा तो हालात ने अजीब पल्टा खाया। चंद दिनों के अंदर अंदर अंकल का नार्वे से रिश्ता आया। वह रिश्ता तै पाया और वह अंकल अल्लाह के फ़ज़ल से नार्वे आए और अब वहां अपने बीवी बच्चों और फ़ैमिली के साथ हंसी ख़ुशी ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। यह ख़िलाफ़त की बरकतें हैं, यह तस्कीन-ए-जान के समान हैं।

कैनेडा की डरहम (Durham) जमात से एक महिला ने एक मुरब्बी साहिब को अपना वाक़िया सुनाया। यह वाक़िया भी बहुत दिलचस्प है। इस में वह कहती हैं कि चंद साल पहले हमारी घरेलू ज़िंदगी में बहुत उतार चढ़ाओ आए और आपस में इस क़दर शदीद इख़तेलाफ़ात पैदा हो गए कि मैं ने यह फ़ैसला कर लिया कि मैंने इस बंदे के साथ नहीं रहना और मैंने अब अलैहदा होना है। इसी दौरान हुज़ूर का कैनेडा का दौरा आ गया। हुज़ूर तशरीफ़ लाए। मैंने भी मुलाक़ात की दरख़ास्त की और मुलाक़ात में हाज़िर हुए तो मैंने यह सारी सूरत--ए-हाल, कैफ़ीयत वर्णन की और बच्चों के लिए दुआ की दरख़ास्त की और हुज़ूर की ख़िदमत में फ़ैसला भी सुना दिया कि मैंने तो अलैहदगी का फ़ैसला कर लिया है। हुज़ूर ने फ़रमाया तुम्हारा पति क्या कहता है? तो महिला कहती हैं मैंने कहा वह तो सुलह की तरफ़ मायल है लेकिन मैंने बस अब आख़िरी फ़ैसला कर लिया है, कोई सुलह नहीं, कोई वापसी नहीं। हुज़ूर ने उस वक़्त फ़रमाया अगर वह सुलह की तरफ़ मायल है तो सुलह कर लो। सब ठीक हो जाएगा इन शा अल्लाह। कहती हैं कि यह अजीब है कि मैंने अर्ज़ किया कि मैंने फ़ैसला कर लिया है, सब कुछ ख़त्म हो गया है और हुज़ूर फ़र्मा रहे हैं कि नहीं सुलह कर लो सब ठीक हो जाएगा इन शा अल्लाह। तो कहती हैं अब मेरे सामने सिवाए स्वीकार करने के कोई चारा नहीं था। मैंने मुलाक़ात से निकल कर ख़ुद ही ख़ावंद को फ़ोन किया और उससे सुलह कर ली। अल्लाह तआला ने हुज़ूर के इन शब्दों में ऐसी तसकीन रखी और उन अलफ़ाज़ को ऐसी बरकत बख़शी कि इस सुलह के बाद हमारी ज़िंदगी ही बदल गई है। अब हमारे मध्य एक ऐसे प्यार और मुहब्बत और के ताल्लुक़ की बुनियाद पड़ गई है कि ऐसे लगता है जैसे हर-रोज़ हमारी शादी हो रही है। काश वे लोग जो ख़िलाफ़त की इस नेअमत से वंचित हैं वे ये समझ सकें कि ऐसे मवाक़े पर जब उन्हें समझाने वाला, उन के लिए दुआएं करने वाला और उनको तसकीन के कलिमात अता करने वाला कोई नहीं होता तो अहमदियों के पास उनका ख़लीफ़ा होता है जो एक अज़ीमुश्शान नेअमत की तरह मयस्सर है और यह ख़िलाफ़त-ए-हक़्क़ा इस्लामिया अहमदिया की नेअमत है और यही नेअमत वजह-ए-तस्कीन है।

हज़रात! हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुनिया

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

के बेशुमार मुल्कों के ऐवानों मैं ख़ुद जा कर इस्लाम की शांति की तालीमात के बारे में बहुत प्रभावी खुत्बात फ़रमाए। उनकी वजह से आपको "अमन के सफ़ीर" का ख़िताब दिया गया है। असंख्य लोगों ने स्वीकार किया है कि हुज़ूर की ज़बान-ए-मुबारक से इस्लाम का परिचय सुन कर आपकी आवाज़ हमारे दिल में घर कर गई है और हमारे दिल-ओ-दिमाग़ इस्लाम की तालीम से सरशार हो गए हैं। सिर्फ एक एतराफ़ पेश करता हूँ:

2012 ई. में हुज़ूर अनवर ने बरसल्ज़ में यूरोपीयन पार्लीमैंट से ख़िताब फ़रमाया। इस अवसर पर Bishop Dr Amen Howard जिनेवा (स्विट्ज़रलैंड) से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला के ख़िताब में शमूलियत के लिए आए थे, उन्होंने अपने ख़्यालात का इज़हार जिन शब्दों में क्या वे ध्यान से सुनने वाले हैं। उन्होंने कहा :

"यह व्यक्ति जादूगर नहीं लेकिन इनके शब्द जादू का सा असर रखते हैं। लहजा धीमा है लेकिन उनके मुँह से निकलने वाले शब्द ग़ैरमामूली ताक़त, शौकत और असर अपने अंदर रखते हैं। इस तरह का जुर्रत मंद इन्सान मैंने अपने ज़िंदगी में कभी नहीं देखा। आपकी तरह के सिर्फ तीन इन्सान इस दुनिया को मिल जाएं तो अमन शांति के हवाले से इस दुनिया में हैरत-अंगेज़ इन्क़िलाब महीनों नहीं बल्कि दिनों के अंदर बरपा हो सकता है और यह दुनिया अमन और भाई चारा का गहवारा बन सकती है।"

(अहमदिया गज़्ट कैनेडा मई 2018 ई., पृष्ठ 20)

ख़िलाफ़त की महान बरकात में से चंद एक का वर्णन ही संभ है। ख़िलाफ़त की महान नेअमत के शुक्राने और इस अज़ीमुश्शान हिसार-ए-आफ़ियत से फ़ैज़ पाने के लिए हम सबको अपनी अपनी जगहों पर छोटे छोटे अमन के गहवारे पैदा करने होंगे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला अपने ख़ुतबात--ओ-खिताबात में हमें बहैसियत हर दो इन्फ़रादी-ओ-इजतेमाई अल्लाह तआला के हुक़ूक़ अदा करने, अल्लाह के बंदों के हुक़ूक़ अदा करने, ख़ुदा तआला पर तवक्कुल करने, दुआओं की तरफ़ ख़ास तवज्जा करने, हज़रत-ए--अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत के तक़ाज़ों को पूरा करने, अपने अंदर पाकीज़ा अमली तबदीली पैदा करने, अपने घरवालों से हुस्न-ए--सुलूक करने, अपनी आने वाली नसल की उम्दा तर्बीयत करने के साथ साथ हर अमल सालेह बजा लाने की तरफ़ बार-बार तवज्जा दिलाते हैं। अगर हम सब सिदक़-ए-नीयत से उन नसाएह पर अमल करने की कोशिश करें तो अल्लाह तआला ज़रूर हमारी कोशिशों पर प्यार की नज़र डालते हुए हमें उन पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएगा और हम सब अपने अपने दायरा, अपने अपने यूनिट में हक़ीक़ी अमन-ओ-आफ़ियत के सफ़ीर बन जाऐंगे और जिस समाज की बुनियादी इकाई यानी फ़र्दे वाहिद अपनी ज़िम्मेदारियों को समझते हुए उच्च आचरण अपना ले वह समाज अख़लाक़ी बुलंदियों को छूते हुए हक़ीक़ी इन्क़िलाब का पेश-ख़ेमा साबित होता है। वह समाज बजा-ए-ख़ुद आफ़ियत का हिसार बन जाता है जिसमें बसने वाला हर फ़र्द दरिंदों से महफ़ूज़ शुमार किया है।

अल्लाह तआला हमें ख़िलाफ़त की लाज़वाल नेअमत का शुक्राना अदा करने और ख़लीफ़-ए-वक़्त का हक़ीक़ी आज्ञाकारी बनने की तौफ़ीक़ अता करें आमीन।

हमारी जां ख़िलाफ़त पर फ़िदा है
यह रुहानी मरीज़ों की दवा है
अंधेरा दिल का इस से मिट गया है
यही ज़ुलमात में शमे हुदा है
हिसार-ए-अमन-ओ-ईमान-ओ-यक़ीं है
किनार-ए-आफ़ियत हबलुल मती है
(وآخر دعوانا عن الحمد للہ رب العالمین)

★ ★ ★

128वां जलसा सालाना क़ादियान 29, 30, और 31 दिसम्बर 2023 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 29,30,31 दिसंबर 2023 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन॥

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान)

★ ★ ★

हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दुआ की स्वीकृति के विषय में ईमान में बढ़तोरी करने वाली घटनाएँ और दुआओं के बारे में हुज़ूर अनवर की तह-रीकात और नसाहे

(श्रीमान अताउल-मुजीब लोन साहिब ,सदर मज्लिस अंसारुल्लाह भारत व प्रिंसिपल जामिआ अहमदिया कादियान)

भाषण जलसा सालाना कादियान 2022 ई.

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱسۡتَجِيبُواْ لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمۡ لِمَا يُحۡيِيكُمۡۖ وَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ يَحُولُ بَيۡنَ ٱلۡمَرۡءِ وَقَلۡبِهِۦ وَأَنَّهُۥٓ إِلَيۡهِ تُحۡشَرُونَ

(सूरः अन्फ़ाल आयत : 25)

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अल्लाह और रसूल की आवाज़ पर लब्बैक कहा करो जब वह तुम्हें बुलाए ताकि वह तुम्हें ज़िंदा करे और जान लो कि अल्लाह इन्सान और उसके दिल के मध्य हायल होता है और यह भी जान लो कि तुम उसी की तरफ़ इकट्ठे किए जाओगे

अत्यधिक सम्माननीय सदर-ए-इज्लास और प्रिय श्रोताओं विनीत की तक़रीर का विषय है "हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दुआ की स्वीकृति के विषय में ईमान में बढ़तोरी करने वाली घटनाएँ और दुआओं के बारे में हुज़ूर अनवर की तहरीकात और नसाहे"

क़ुरआन-ए-मजीद की जो आयत विनीत ने तिलावत की है इस में अल्लाह तआला ने अपने फ़रिस्तादा के आने की ग़रज़ रुहानी तौर पर मुर्दा लोगों को ज़िंदा करना बताया है। अल्लाह तआला की तरफ़ से अवतरित रसूल जिन ज़राए से अपने मानने वालों को रुहानी तौर पर ज़िंदा करता है इन में से एक अहम ज़रीया वे दुआएं हैं जो वे अपने मानने वालों के लिए करता है और अल्लाह तआला उनको शरफ़-ए--क़बूलियत बख़श कर लोगों की रुहानी ज़िंदगी के सामान करता है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि ما كانت النبوة قط الا تبعتها خلافة (कंजुल् अम्माल, भाग 1) कि जब भी कोई नबी दुनिया में अव-तरित होता है इसके बाद उसके काम को जारी रखने के लिए ख़िलाफ़त का निज़ाम जारी होता है।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद-व-महदी माहूद अलैहि-स्सलाम की वफ़ात के बाद भी अल्लाह तआला के वादों और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बशारात के मुताबिक़ ख़िलाफ़त का निज़ाम जमात अहमदिया में क़ायम है और ख़िलाफ़त की आज्ञाकारिता करने वाले इन समस्त बरकात से ला-भान्वित हो रहे हैं जो ख़िलाफ़त से अल्लाह तआला ने जोड़ कर रखी हैं। और रुहानी तौर पर इन ज़िंदा लोगों में शामिल हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद अब ख़िलाफ़त के ज़रीया ज़िंदा हो रहे हैं। दुआ की स्वीकृति के ज़रीया जिस तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने मानने वालों को रुहानी तौर पर ज़िंदा करते रहे इसी तरह आप बाद आप की जानशीनी में हर ख़लीफ़-ए-वक़्त भी ज़िंदा करता रहा और अब भी यह सिलसिला-ए-ख़िलाफ़त ख़ामिसा में अपनी पूरी शान के साथ जारी है।

पूर्व इसके कि मैं हज़रत हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दुआ की स्वीकृति के कुछ वाक़ियात आपकी ख़िदमत में पेश करूँ। दुआ की इफ़ादीयत, एहमीयत और इस की बरकात के ताल्लुक़ से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ इक़तेबासात पेश करूँगा। क्योंकि इस ज़माना में आप ही वह वाहिद वजूद हैं जिन्हों ने दुआ के ताल्लुक़ से हर मज़मून को न सिर्फ तफ़सील के साथ वर्णन फ़रमाया है बल्कि हर अहमदी के दिल में इस मज़मून को इस रंग में डाल दिया है कि अब हर अहमदी की ज़िंदगी सिर्फ़ दुआ है और यही वह आहार है जिस से वे अपनी रुहानी ज़िंदगी के सामान करता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"दुआ एक ज़बरदस्त ताक़त है जिससे बड़े बड़े मुश्किल मुक़ाम हल हो जाते हैं और अत्यधिक कठिन मंज़िलों को इन्सान बड़ी आसानी से तै कर लेता है क्योंकि दुआ उस फ़ैज़ और क़ुव्वत को जज़ब करने वाली नाली है जो अल्लाह तआला से आता है। जो शख़्स कसरत से दुआओं में लगा रहता है वह आख़िर इस फ़ैज़ को खींच लेता है और ख़ुदा तआला से ताईद याफताह हो कर अपने मक़ासिद को पा लेता है .. यक़ीनन समझो कि दुआ बड़ी दौलत है। जो शख़्स दुआ को नहीं छोड़ता उस के दीन और दुनिया पर आफ़त नहीं आएगी। वह एक ऐसे क़िला में महफ़ूज़ है जिसके इर्द-गिर्द मुसल्लह सिपाही हर समय हिफ़ाज़त करते हैं लेकिन जो दुआओं से लापरवा है वह उस शख़्स की तरह है जो ख़ुद बे हथियार है और उस पर कमज़ोर भी है और फिर ऐसे जंगल में है जो दरिंदों और भयानक जानवरों से भरा हुआ है। वह समझ सकता है कि उस की ख़ैर हरगिज़ नहीं है। एक लम्हे में वह भयानक जानवरों का शिकार हो जाएगा और उस की हड्डी बोटी नज़र न आएगी। इस लिए याद रखो कि इन्सान की बड़ी सआदत और उसकी हिफ़ाज़त का असल ज़रीया ही यही दुआ है। यही दुआ उसके लिए पनाह है अगर वह हर समय उस में लगा रहे।" (मल्फ़ूज़ात भाग नंबर 7 पृष्ठ 192 प्रकाशित लंदन ऐडीशन 1984 ई.)

दुआ की स्वीकृति की कैफ़ीयत वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्स-लाम फ़रमाते हैं कि

"दुआ की वास्तविकता यह है कि एक सईद बंदा और उसके रब में एक ताल्लुक़ आकर्षण शक्ति है। अर्थात पहले ख़ुदा तआला की रहमानियत बंदा को अपनी तरफ़ खींचती है फिर बंदा के सिदक़ की कशिशों से ख़ुदा तआला उस से नज़दीक हो जाता है और दुआ की हालत में वह ताल्लुक़ एक ख़ास मुक़ाम पर पहुंच कर अपने ख़वास अजीबा पैदा करता है। अतः जिस वक़्त बंदा किसी सख़्त मुश्किल में मुबतला हो कर ख़ुदा तआला की तरफ़ कामिल यक़ीन और कामिल उम्मीद और कामिल मुहब्बत और कामिल वफ़ादारी और कामिल हिम्मत के साथ झुकता है और निहायत दर्जा का बेदार हो कर ग़फ़लत के पर्दों को चीरता हुआ फ़ना के मैदानों में आगे से आगे निकल जाता है फिर आगे क्या देखता है कि बारगाह उलूहियत है और उसके साथ कोई शरीक नहीं। तब उसकी रूह उस आस्ताना पर सिर रख देती है और क़ुव्वत जज़ब में जो उसके अंदर रखी गई है वह ख़ुदा तआला की इनायात को अपनी तरफ़ खींचती है। तब अल्लाह जल्लाशाना इस काम के पूरा करने की तरफ़ मुतवज्जा होता है और इस दुआ का असर इन समस्त मूल अस्बाब पर पड़ता है जिन से ऐसे अस्बाब पैदा होते हैं जो इस मतलब के हासिल होने के लिए ज़रूरी हैं। उदाहरणतः अगर बारिश के लिए दुआ है तो बाद इस्तेजाबत दुआ के वे स्वभाविक अस्बाब जो बारिश के लिए ज़रूरी होते हैं इस दुआ के असर से पैदा किए जाते हैं औरा यदि सूखे के लिए बददुआ है तो क़ादिर-ए-मुतलक़ मुख़ालिफ़ाना अस्बाब को पैदा कर देता है। इसी वजह से यह बात अरबाब-ए-कशफ़ और कमाल के नज़दीक बड़े बड़े अनुभव से साबित हो चुकी है कि कामिल की दुआ में एक क़ुव्वत तकवीन पैदा हो जाती है अर्थात अल्लाह तआला की इच्छा से वह दुआ आलम-ए-सिफ़्ली और उलवी में तसर्रुफ़ करती है और अनासिर और अजराम-ए-फल्की और इन्सानों के दिलों को इस तरफ़ ले आती है जो समर्थन चाहता है।"

(बरकातुद दुआ, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 9 से 10)

प्रिय पाठकों !अब ख़ाकसार हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दुआ की स्वीकृति के बेशुमार वाक़ियात में से सिर्फ चंद एक वाक़ियात वक़्त की रियाइत से पेश करेगा।

(1) ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया ऐसी नेअमत है जो जहां प्यासी रूहों को सेराब करती है वहां बंजर ज़मीनों की आबयारी के सामान भी करती है। जलसा सालाना 2012 ई. की दूसरे दिन की तक़रीर के दौरान हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने बर्र-ए-आज़म अफ़्रीक़ा में ज़ाहिर होने वाले सदहा निशानात में से एक निशान का वर्णन इस तरह फ़रमाया :

"अमीर साहिब माली लिखते हैं कि पिछले वर्ष बहुत कम बारिश हुई जिसकी वजह से शदीद मुश्किलात थीं। उन्होंने मुझे भी दुआ के लिए लिखा तो मैंने उनको कहा था कि नमाज़ इस्तस्क़ा पढ़ें। अल्लाह तआला ने फ़ज़ल फ़रमाया। हमारे एक मुअल्लिम वर्णन करते हैं कि एक स्कूल टीचर मुहम्मद तोरे साहिब उनके पास आए और बताया कि वह बाक़ायदगी से रेडीयो अहमदिया सुनते थे लेकिन जमात से कोई संपर्क नहीं था। एक दिन सुना कि जमाअत के ख़लीफ़ा ने इस इलाक़े के लिए बारिश की ख़ुसूसी दुआ की है। फिर उसने सुना कि माली जमात का अमीर उनके इलाक़े में आ रहा है तो दिल में ख़्याल पैदा हुआ कि वह ख़ुद जा कर उसे मिले। इस लिए फ़िराको (Farako) गांव जहां प्रोग्राम था वह वहां पहुंच गया। वहां भी उसने अमीर से सुना कि इस इलाक़े में बारिशों के लिए ख़लीफ़तुल -मसीह ने दुआ की है और फिर ख़ुसूसी नमाज़ पढ़ाई। उसने अपने दिल में रख लिया कि अगर इस साल ग़ैरमामूली

बारिश होती है तो सिर्फ दुआ का नतीजा होगी। क्योंकि कई साल से अच्छी बारिशें नहीं हुई थीं। जब बारिश का मौसम आया तो उसने देखा कि हर दूसरे तीसरे दिन बहुत बारिश हो जाती है। वह इस चीज़ का गवाह है कि पिछले दस सालों से ऐसी बारिशें नहीं हुईं। आज वह इसलिए आया है कि अहमदीयत में दाख़िल हो क्योंकि ख़ुदा ख़लीफ़ा के साथ है। अलहमदो लिल्लाह। अब इस गांव में कसरत से लोग बैअत कर हैं।"

(अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 3 अगस्त 2018 ई. पृष्ठ 18)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इम साल रिव्यू आफ़ रीलीजंज़ की तरफ़ से मुनाक़िदा God Summit के अवसर पर अपने ख़ुसूसी पैग़ाम में कुछ वाक़ियात का वर्णन फ़रमाया। उनमें से चंद एक का वर्णन करता हूँ।

(2) हुज़ूर ने फ़रमाया एवरी कोस्ट का एक वाक़िया हमारे मुअल्लिम ने लिखा। एक मुख़लिस अहमदी हैं वहां अब्दुल्लाह साहिब उनके बारे में लिखा कि मेरे भाई को इस तरह पुलिस पकड़ कर ले गई है और अदालत ने इस को नशा बेचने के जुर्म में बीस साल क़ैद की सज़ा सुना दी। कहते हैं मैं बड़ा परेशान था कि मेरे भाई को इस तरह पुलिस पकड़ के ले गई है। मुजरिम नहीं है। कहते हैं इस परेशानी की हालत में उन्होंने मुझे यहां लंदन में ख़त लिखा। कहते हैं ख़लीफ़तुल मसीह को मैंने ख़त लिखा दुआ के लिए और ख़ुद भी अपने भाई की रिहाई के लिए दुआ शुरू कर दी। कहते हैं लेकिन इस के बावजूद रिहाई की कोई सूरत नज़र नहीं आ रही थी। कहते हैं एक दिन ख़ाब में मैं ने देखा, मुझे लिख रहे हैं वह कि ख़लीफ़तुल मसीह को देखा, आपको देखा और आपने फ़रमाया कि परेशान न हो और सब्र करो तुम्हारा भाई जल्दी रिहा हो जाएगा। सुबह जब मैं उठा तो मुझे बड़ी तसल्ली थी और यक़ीन था कि इन शा अल्लाह तआला, अल्लाह कोई चमत्कार दिखाएगा और मेरा भाई रिहा हो के आ जाएगा लेकिन भाई ने क्या रिहा होना था उल्टा कुछ दिन के बाद उनकी वालदा की तबीयत ख़राब हो गई। उनको शहर के बड़े हस्पताल में ले जाना पड़ा और वहां उन्होंने दाख़िल कर लिया। कहते हैं मैं बड़ा परेशान कि पहले एक मुसीबत थी अब दूसरी मुश्किल भी आगई। माता बीमार हो गई हैं, बड़ी करब की हालत थी, बड़ी बेबसी की हालत थी, बहुत परेशान था कि मसायल बढ़ते जा रहे हैं। फिर मैं ने दुआ की तो कहते हैं रात को सोया तो फिर उन्होंने मुझे ख़ाब में देखा और मैंने उनको कहा कि उट्ठो और जा के दरवाज़ा खोलो। कहते हैं मैं बेदार हो गया। एक दम मैं जागा, आँख खुली मेरी तो देखा दरवाज़े कोई knockकर रहा था। जा के मैंने दरवाज़ा खोला तो कहते हैं वहां मेरा बड़ा भाई मौजूद था। उसने कहा कि पुलिस ने मुझे आज रिहा कर दिया है और कहते हैं यह सब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से दुआओं की बरकत का चमत्कार है और ख़लीफ़ा वक़्त से ताल्लुक़ का चमत्कार है। (सह रोज़ा इंटरनैशनल 27 मई 2022 ई.)

(3) फिर गेम्बयाका एक वाक़िया वर्णन करते हुए हुज़ूर फ़रमाते हैं एक दोस्त हैं उम्र साहिब उन्होंने 2017 ई. में फ़ैमिली के साथ बैअत की थी। उनकी बीवी को यूट्रस (uterus) का कैंसर, रहम का कैंसर था। सात साल क़बल बच्चे की पैदाइश हुई थी और इस के बाद कैंसर हो गया। डाक्टरों ने कह दिया कि इस का कोई ईलाज नहीं और तुम्हारे औलाद पैदा होना मुम्किन ही नहीं है। उनकी बीवी इस वजह से बड़ी परेशान रहती थी। एक बिमारी भी है औलाद भी नहीं और हो सकती। ज़िंदगी मौत का सवाल है। पता नहीं ज़िंदगी रहती है कि नहीं। छोटा बचा है इस की भी ख़ुशियां देखेंगी कि नहीं। बहरहाल बैअत करने के बाद कहते हैं उनकी बीवी ने एक लीफ़ लेट लिया इस पर तस्वीर मेरी थी। कहती हैं वह तस्वीर देख कर पता नहीं मेरे दिल में ख़्याल पैदा हुआ और सुकून पैदा हुआ तो मैं दुआ भी करती रही और अल्लाह तआला से मज़ीद तसकीन की दुआ माँगती रही। फिर उन्हों ने मुझे ख़त लिखा और अपनी दुआ की दरख़ास्त के साथ बीमारी और औलाद की ख़ाहिश का भी वर्णन किया। अल्लाह का फ़ज़ल ऐसा हुआ कि कुछ देर के बाद वह हामिला हो गईं और जब डाक्टरों और नर्सों ने चैक किया तो हैरान थे। वह उनको कह रहे थे कि हम ने तो जवाब दे दिया था और यह मेडीकली संभव नहीं था कि अब इस औरत का बच्चा पैदा हो। फिर जब उन्होंने pregnancy टैस्ट के बाद दुबारा कैंसर का टैस्ट किया और देखा तो वह भी बिल्कुल नेगेटिव (negative) आया। इस पर डाक्टर बड़े हैरान थे। डाक्टर ने इस नौ मुबाईं ख़ातून से पूछा तुमने कौन सी दवाई प्रयोग की है कि जिस से यह कैंसर भी ख़त्म हो गया और तुम्हारी यह मुश्किल और इस तरह की तकलीफ़ दूर हो गई जिस पर मेडीकली तो हमें यक़ीन था कि नहीं हो सकती। कहने लगी मैंने कोई दवा नहीं इस्तमाल की। मैं ने तो ख़लीफ़-ए-वक़्त को दुआ के लिए लिखा था और ख़ुद भी दुआ कर रही थी और यह दुआ की बरकतें हैं और यही मेरा ईलाज है जिस से अल्लाह तआला ने इस की वजह से फ़ज़ल फ़रमाया है। (सह रोज़ा अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 27 मई 2022 ई.)

(4) हुज़ूर फ़रमाते हैं : मालदा सूबा बंगाल इंडिया के एक मुअल्लिम साहिब हैं उनके गुर्दे ख़राब हो गए। यह 2005 ई. की बात है। और डाक्टरों ने ईलाज करने की कोशिश की। कोई सूरत पैदा नहीं हो रही थी। डाक्टरों ने जवाब दे दिया कि अब कुछ नहीं हो सकता।2005 ई. में जब मैं कादियान गया हूँ तो वहां उनकी फ़ैमिली मुलाक़ात थी उन्होंने अपनी बीमारी का वर्णन किया। मुअल्लिम साहिब ने दुआ की दरख़ास्त की और इस के कुछ अरसा के बाद वह दुबारा चैक अप कराने हस्पताल गए तो डाक्टर हैरान रह गए कि गुर्दे ग़ैरमामूली तौर पर ठीक हो गए हैं और अल्लाह के फ़ज़ल से इस के बाद वह बिल्कुल सेहत याब हैं। तो यह अल्लाह तआला का फ़ज़ल है दुआ के बारे में कि ग़ैर मुम्किन को यह मुम्किन में बदल देती है। (सह रोज़ा अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 27 मई 2022 ई.)

हुज़ूर अनवर के दुआ की स्वीकृति के बाअज़ वाक़यात जो विनीत को वकालत तिबशीर् लंदन से बज़रीया वकालत तामील-ओ-तनफ़ीज़ बराए भारत, नेपाल, भूटान मौसूल हुए हैं। इन में से कुछ पेश करता हूँ।

(मौसूल अज़ वकालत तबशीर् लंदन बज़रीया ख़त T-9313-19R/14-9-22 बहवाला WTT-46797/25-9-22)

(5) मुबल्लिग़ इंचार्ज साहिब ज़िला "चन्द्रपूर" महाराष्ट्र लिखते हैं कि

जमाअत अहमदिया "बलारपुर" के एक मुख़लिस नौजवान मुनव्वर अली साहिब जो कि अंजीनियर हैं कई दिनों से नौकरी के लिए मुख़्तलिफ़ कंपनियों में इंटरवियू इत्यादि दे रहे थे परंतु कहीं भी कामयाबी नहीं मिल रही थी। उसी दौरान हुज़ूर ने मस्जिद बैतुल फ़तूह की (renovation) के लिए तहरीक फ़रमाई उन्होंने एक भारी रक़म वादा के तौर पर लिखवा दी हालाँकि उनके पास नौकरी भी नहीं थी। इस के साथ साथ वह हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में दुआ के लिए भी लिखते रहे। वह कहते हैं कि मुझे ख़ुदा पर यक़ीन था कि अल्लाह तआला ज़रूर मदद फ़रमाएगा। इसलिए अल्लाह तआला ने फ़ज़ल फ़रमाया और उन्हें क़तर में नौकरी मिल गई और जितनी रक़म का वादा लिखवाया था उतनी ही रक़म तनख़्वाह के तौर पर निर्धरित हुई।

(6) अमीर साहिब बुर्कीना फासो लिखते हैं :

जियालो अबदुर्रहमान साहिब अफ़्सर जलसा सालाना बुर्कीना फासो की इस वर्ष मार्च में हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने दरख़ास्त की कि हमारा जलसा मुनाक़िद होने वाला है लेकिन वहां शदीद गर्मी है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया "अच्छा आप क्या चाहते हैं कि बारिश हो जाएगी?" इस पर उन्होंने अर्ज़ किया कि जी हुज़ूर! इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया "अच्छा"। इसलिए जब जलसा मुनाक़िद हुआ पहले रोज़ 42 डिग्री दर्जा हरारत था लेकिन अस्र के बाद मौसम ख़ुशगवार हुआ और हल्की सी फुवार भी पड़ी। फिर रात आठ बजे के क़रीब मूसलाधार बारिश शुरू हो गई और रात ग्यारह बजे के बाद बारिश थम गई और हवा चलने से समस्त जगह ख़ुशक होना शुरू हो गई और सुबह प्रोग्राम के मुताबिक़ तहज्जुद अदा की गई। ख़ाकसार को बीस साल से ज़ायद अरसा हो गया है और जमात के क़दीमी अहबाब से भी पूछा सबने बताया कि कभी भी जलसा में बारिश नहीं हुई और इस महीने में इस तरह बारिश का होना इंतेहाई ग़ैरमामूली वाक़िया था। फिर अफ़्सर साहिब जलसा सालाना ने समस्त हाज़ेरीन को हुज़ूर से मुलाक़ात और जलसा में बारिश की दरख़ास्त का बताया तो कैफ़ीयत ही मुख़्तलिफ़ हो गई सब के दिल दुआ की स्वीकृति और ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया से मुहब्बत और खलूस से भर गए और फ़िज़ा देर तक नाराए तकबीर से गूँजती रही।

(7) कांगोबर अज़ अवील में शहर प्वाईंट नवार के मुबल्लिग लिखते हैं : कांगोबर अज़ावील शहर के प्वाईंट नवार में 2015 ई. में अहमदिया मिशन के क़ियाम के बाद एक दिन बाज़ार में पाकिस्तानी दोस्त मुहम्मद इक़बाल साहिब से मुलाक़ात हुई। पहले तो बहुत ख़ुशी से मिले और फ़ोन नंबर भी लिया। लेकिन जब मैंने अपने अहमदी होने का बताया तो अचानक रवैय्या में तबदीली आ गई

वक़्त गुज़रने के साथ साथ ख़ाकसार जब भी संपर्क करके मिशन हाऊस आने की दावत देता तो कोई न कोई उज़्र कर देते। 2017 ई. में अचानक उनकी मुलाज़मत ख़त्म हो गई और अच्छी ख़ासी बड़ी रक़म भी फंस गई। साथ ही पासपोर्ट भी ख़त्म हो गया। वह बहुत ही परेशान हुए और हर जगह कोशिश की परंतु कोई हल न निकल सका।

फिर जनवरी 2018 ई. में एक दिन अचानक इंतेहाई परेशानी में उनका फ़ोन आया कि मैं आपसे मिलने मिशन हाऊस आना चाहता हूँ। यहां पहुंच कर अपनी परेशानी का इज़हार किया और कहा कि आप मुझे पासपोर्ट बनवा दें। कहने लगे कि मुझे सब ने यही कहा है कि जमात अहमदिया ही तुम्हारी मदद कर सकती है।

इसलिए उनका ऑनलाइन पासपोर्ट अप्लाई किया गया तो चंद दिनों में उनका पासपोर्ट बन कर आ गया। पासपोर्ट का बनना था कि उनकी तबीयत में जमाअत के लिए नरमी आने लगी। वह अक्सर मिशन हाऊस आने लगे और खाना भी साथ खाने लगे। फिर जलसा कांगो 2018 ई. में भी शरीक हुए। चूँकि उनकी मुलाज़मत ख़त्म हो गई थी और एक बड़ी रक़म भी फंस गई थी। जिसके हुसूल की कोई सूरत नहीं निकलती थी। इसी तग-ओ-दो में 15 महीने गुज़र गए। और उनकी परेशानी थी कि बढ़ती जाती थी।

एक दिन मिशन हाऊस में बैठे हुए बहुत ही रंजीदा हो गए और कहने लगे कि आप अपनी जमाअत के ख़लीफ़ा साहिब को मेरी तरफ़ से दुआइया ख़त लिखें। और बार-बार इसरार करने लगे। मैंने कहा कि हम अभी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत में दुआइया ख़त लिख लेते हैं परंतु याद रखें कि आप अहमदी हो या न हो मगर इस दुआ का क़बूल होना आप के लिए ख़ुदा तआला की तरफ़ से अहमदीयत की सदाक़त का निशान होगा क्योंकि आपको अपनी रक़म मिलने की ज़र्रा भी उम्मीद नहीं। इस लिए उसी रात दुआइया ख़त फैक्स कर दिया और इंतेज़ार करने लगा कि अल्लाह तआला जलद अपना फ़ज़ल फ़रमाए।

ख़ुदा तआला भी बहुत शान वाला है और उसे भी अपने ख़लीफ़ा से शदीद मुहब्बत है। ख़ुदा तआला का फ़ज़ल हुआ और आख़िर चार दिन बाद वह मु-स्कुराते हुए मिशन हाऊस आए और कहने लगे कि जिस रात को हमने ख़लीफ़ा साहिब को ख़त फैक्स किया था, इस से अगले दिन ही मुझे दफ़्तर से काल आ गई थी कि आप आ जाएं और फिर से मुलाज़मत करें और उन्होंने रक़म मिलने की भी यक़ीन दहानी है।

मैंने अलहमदो लिल्लाह पढ़ा और कहा कि देखें अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़ल और प्यारे ख़लीफ़ा की दुआओं से आपके लिए अहमदीयत की सदाक़त का कैसा चमत्कार दिखाया है। वह अहमदीयत के काफ़ी क़रीब आ गए हैं। अल्लाह तआला उनके हिदायत के सामान पैदा फ़रमाए। (वकालत तिबशीर् लंदन)

(8) जर्मनी से अबरार अहमद साहिब तहरीर करते हैं मैंने जर्मनी आने के बाद Burgerking (फास्टफूड रैस्टोरैंट) मे काम शुरू कर दिया एक दिन उन्होंने बलीटेन में हुज़ूर अनवर का इरशाद पढ़ा कि "ऐसे अफ़राद जो सूअर के गोश्त और एल् कोहल वाली जगह पर काम करते हैं उनसे चंदा नहीं लेना"

यह तहरीर करते हैं कि हुज़ूर अनवर का यह इरशाद पढ़ा तो होश उड़ गए। सारी रात बेक़रारी और नफ़ल पढ़ कर गुज़ारी कि हे अल्लाह तो मेरी हालत को जानता है उसी दौरान हुज़ूर अनवर को भी दुआ के लिए ख़ुतूत बा क़ाएदगी से लिखता रहा। यह सोचता रहा कि इस छोटे शहर में और कौन मुझे काम देगा? और इसी दौरान जमात के लोगों ने कहना शुरू कर दिया कि हमें वसीयत का कहता है अब अपनी वसीयत कैसे बचाएगा।

इसी दौरान हुज़ूर अनवर की तरफ़ से ख़त का जवाब मौसूल हुआ जिस में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया "कि अल्लाह तआला आपको ज़रूर बाबरकत काम देगा। दुआ बहुत करी"

इस लिए तुरंत उठा और काम वालों को काम से जवाब दे दिया और कहा कि यह मेरा आख़िरी दिन है। काम वालों ने डराया कि पैसे नहीं मिलेंगे, बहुत मुश्किल होगी लेकिन मैं वहां से अपना अस्तीफ़ा देकर वापस घर आ गया। घर आकर अपना लेटर बाक्स खोला तो POST के महिकमा की तरफ़ से ख़त आया हुआ था कि कल से काम पर आ जाओ। फ़ौरन सिर ख़ुदा के हुज़ूर झुक गया कि एक दिन पहले काम ख़त्म हुआ और अगले दिन नया काम मिल गया। अब अल्लाह तआला ने गाड़ी भी दे दी और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बतौर सैक्रेटरी वसाया नई वसाया का टार्गेट भी मुकम्मल करने की तौफ़ीक़ मिली। अलहमदो लिल्लाह।

सामईन हज़रात ये वाक़ियात सुन कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अलफ़ाज़ में यही आवाज़ दिल से निकलती है कि

क़ुदरत से अपनी ज़ात का देता है हक़ सबूत
इस बे-निशाँ की चेहरा-नुमाई यही तो है
जिस बात को कहे कि करूँगा मैं यह ज़रूर
टलती नहीं वह बात ख़ुदाई यही तो है
ग़ैर मुम्किन को यह मुम्किन में बदल देती है
हे मेरे फ़लसफ़ी ज़ोर-ए-दुआ देखो तो

जमाअत-ए-अहमदिया अल्लाह तआला केफज़ल से दुनिया में वाहिद जमाअत है जिसे माँ बाप से ज़्यादा बढ़कर दर्द रखने वाला और दुआएं करने वाला वजूद हासिल है। जब रात को सब सो जाते हैं तो वह जागता है समस्त दुनिया में बसने वाले इन्सानों के लिए अपने रब के हुज़ूर मुनाजात करता है। अपने तो अपने ग़ैर भी इस बात को महसूस किए बग़ैर नहीं रहते।

प्रिय श्रोताओ!अब ख़ाकसार हज़रत अमीरुल-मोमनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की तरफ़ से दुआ के बारे में तहरीकात और नसाएह के हवाला से कुछ इक़तेबासात पेश करेगा।

ख़ुतबा जुमा फ़र्मूदा 21 मई 2004 ई. में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"याद रखें कि वह सच्चे वादों वाला ख़ुदा है। वह आज भी अपने प्यारे मसीह की इस प्यारी जमात पर हाथ रखे हुए है। वह हमें कभी नहीं छोड़ेगा और कभी नहीं छोड़ेगा और कभी नहीं छोड़ेगा।

वह आज भी अपने मसीह से किए हुए वादों को उसी तरह पूरा कर रहा है जिस तरह वह पहली ख़िलाफ़तों में करता रहा है। वह आज भी इसी तरह अपनी रहमतों और फ़ज़लों से नवाज़ रहा है। जिस तरह पहले वह नवाज़ता रहा है और इन शाअल्लाह नवाज़ता रहेगा अतः दुआएं करते हुए और उसकी तरफ़ झुकते हुए और उसका फ़ज़ल मांगते हुए हमेशा उसके आस्ताना पर पड़े रहें और इस मज़बूत कड़े को हाथ डाले रखें तो फिर कोई भी आपका बाल भी बाका नहीं कर सकता। अल्लाह तआला सबको इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।" (ख़ुतबा-ए-जुमा फ़र्मूदा 21 मई 2004 ई., प्रकाशित अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 4 जून 2004 पृष्ठ : 9)

हुज़ूर अनवर फ़रमाते हैं : "जहां-जहां भी अहमदी ज़ुलम का निशाना बन रहे हैं वह याद रखें कि यह शैतान के साथ आख़िरी जंग है और अल्लाह तआला की रज़ा की ख़ातिर आप इस फ़ौज में दाख़िल हुए हैं जो इस ज़माने के इमाम ने बनाई। इस लिए अपने ईमानों को मज़बूत करते हुए, अल्लाह तआला से सबात क़दम और इस्तक़ामत मांगते हुए हमेशा और हर वक़त सब्र और हौसले का मुज़ाहरा करें। अल्लाह तआला के आगे मज़ीद झुकें। आख़िरी फ़तह इन शा अल्लाह तआला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत की ही है। जैसा कि आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि इन शैतानी और तागूती कुव्वतों को शिकस्त देने के लिए अल्लाह तआला ने यह सिलसिला क़ायम फ़रमाया है लेकिन एक बात हमें हमेशा याद रखनी चाहिए कि बैरूनी शैतान को शिकस्त देने के लिए जो अंदरूनी शैतान है इस को भी निरस्त करना होगा। क्योंकि हमारी

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT

AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

फ़तह मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ जुड़ने की वजह से ज़ाहिरी अस्बाब से नहीं होनी बल्कि दुआओं से होनी है और दुआओं की क़बूलियत के लिए अपने आपको ख़ुदा तआला की रज़ा के मुताबिक़ चलने वाला बनाने की ज़रूरत है और इस के लिए नफ़्स का जिहाद भी बहुत है।"

(ख़ुतबा जुमा फ़र्मूदा तिथि 06 मार्च 2009 ई.)

हुज़ूर अनवर फ़रमाते हैं : "जब ख़ुदा तआला अपने बंदे के इस क़दर नज़दीक हो जाए कि वह और बंदा एक दूसरे में जज़ब हो जाएं। फिर जब बंदा दुआ करता है तो ऐसी हालत में की गई दुआ ऐसे ऐसे अजीब मोजज़े दिखाती है जो एक आदमी के तसव्वुर में भी नहीं आ सकते। अतः यह हालत पैदा करने की ज़रूरत है। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वर्णन फ़रमाया है। आम दुनिया में भी मुशाहिदा करके देख लें कि जब तकलीफ़ के वक़्त ख़ालिस हो कर कोई अल्लाह तआला के हुज़ूर झुकता है तो उस वक़्त क्योंकि दुनिया की हर चीज़ से बे र्गुबती होती है, दुनिया की तरफ़ कोई तवज्जा नहीं होती, मुश्किल में फंसा होता है, मुसीबत में गिरफ़्तार होता है, अल्लाह तआला की तरफ़ ही झुक रहा होता है, सिर्फ और सिर्फ अल्लाह की ज़ात सामने होती है, तकलीफों ने इस शख़्स के अंदर एक कैफ़ीयत पैदा की होती है। इस लिए अक्सर लोग जो ऐसी हालत में दुआएं कर रहे होते हैं वे दुआ की स्वीकृति का मुशाहिदा भी हैं।

अतः अगर इन्सान अल्लाह तआला की रहमानियत को हर समय सामने रखते हुए उसके क़रीब-तर होने की कोशिश करता रहे, एक काम होने के बाद, एक तकलीफ़ दूर होने के बाद उसके क़रीब होने की कोशिश को तर्क न कर दे तो फिर मुस्तक़िल अल्लाह तआला इस्तजाबत दुआ के नज़्ज़ारे दिखाता है, दुआ की स्वीकृति के नज़्ज़ारे दिखाता है। अतः अल्लाह तआला की इनायात को हर वक़्त अपने ऊपर बरसता रखने के लिए ज़रूरी है कि अल्लाह तआला के नज़-दीक-तर रहने की कोशिश की जाए। फिर ऐसी सूरत में अल्लाह तआला तमाम-तर दुनियावी अस्बाब को और दुनिया की जो भी चीज़ें हैं उनको इस बंदे की दुआ मांगने की सूरत में इस की ज़रूरियात पूरी करने के काम में लगा देता है। समस्त ज़मीनी और आसमानी ज़राए अपने बंदे की मदद के लिए खड़े कर देता है। कभी अल्लाह तआला बंदे की दुआ क़बूल करते हुए बादलों से बारिश बरसाता है तो कभी दुश्मन के हक़ में अपने बंदे की बददुआ सुनते हुए सूखा और आफ़ात के सामान पैदा कर देता है। अतः ये हालत जो एक मोमिन के दिल में दुआ की स्वीकृति के लिए पैदा होनी चाहिए, यही वह हालत है जो हर अहमदी को अपने दिल में पैदा करनी चाहिए।" (ख़ुतबा जुमा : 22 सितंबर 2006 ई.)

हुज़ूर अनवर फ़रमाते हैं : "आज हमने न सिर्फ अपनी बक़ा के लिए, अपनी ज़ात की बक़ा के लिए, अपने ख़ानदान की बक़ा के लिए, जमात अहमदिया की प्रगति के लिए दुआओं की तरफ़ तवज्जा देनी है बल्कि उम्मत-ए-मुस्लिमा और इस से भी आगे बढ़कर पूरी इन्सानियत की बक़ा के लिए दुआओं की तरफ़ तवज्जा करनी है जिसकी आज बहुत ज़रूरत है। अतः हर अहमदी को इन दिनों में (इन दिनों से मेरी मुराद है) और आजकल खासतौर पर जब हालात बड़े बिगड़ रहे हैं, बहुत ज़्यादा अपने रब के हुज़ूर झुक कर दुआएं करनी चाहिऐं। बेचैन की तरह उसे पुकारें। बेक़रार हो कर उसे पुकारें। आज उम्मत-ए-मुस्लि-मा जिस दौर से गुज़र रही है और मुस्लमान देश जिन परेशानियों में मुबतला हैं इसका हल सिवाए दुआ के और कुछ नहीं और दुआ के इस महफ़ूज़ क़िले में जिसका हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ज़िक्र फ़रमाया आज अहमदी के सिवा और कोई नहीं। अतः उम्मत-ए-मुस्लिमा के लिए दुआ करें कि अल्लाह तआला उन्हें अंदरूनी और बैरूनी फ़ित्नों से निजात दे। उनको इस पैग़ाम को समझने की तौफ़ीक़ दे जो आज से चौदह सौ साल पहले आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुस्लिम उम्मत को दिया था। यह भी दुआ करें कि अल्लाह तआला इस दुनिया से ज़ुलम ख़त्म करे। इन्सान अपने पैदा करने वाले ख़ुदा की तरफ़ रुजू करे। उसे पहचान कर अपनी ज़िदों और अनाओं के जाल से बाहर निकले। ख़ुदा तआला की नाराज़गी और ग़ज़ब को आवाज़ न दे बल्कि उस की तरफ़ झुके। अल्लाह तआला के इस पैग़ाम को समझने वाला हो, इस बात को समझने वाला हो कि मेरी तरफ़ आओ, ख़ालिस हो कर मुझे पुकारो ताकि मैं तुम्हारी दुआओं को सुनकर इस दुनिया को जिसको तुम सब कुछ समझते हो, जो कि हक़ीक़त में आरिज़ी और चंद रोज़ा है, तुम्हारे लिए अमन का गहवारा बना दूं ताकि फिर नेक-आमाल की वजह से तुम लोग मेरी दाइमी जन्नत के वारिस बनू .. फिर जैसा कि मैं ने कहा इस दुनिया के लिए, इन्सानियत के लिए भी दुआ करें। दुनिया बड़ी तेज़ी से अपनी अनाओं और ज़िदों की वजह से तबाही के गढ़े की तरफ़ जा रही है। अपने ख़ुदा को भुला चुकी है और परिणाम अल्लाह तआला के ग़ज़ब को आवाज़ दे रही है। ज़ुलम इतना बढ़ चुका है कि उसे इन्साफ़ का नाम दिया जा रहा है, अल्लाह ही उन लोगों पर रहम करे।

पहले भी मैं ने कहा है अपने लिए भी और जमात के लिए भी बहुत दुआ करें। अल्लाह तआला अहमदियत के मुख़ालेफ़ीन और दुश्मनों को नाकाम--ओ-ना-मुराद कर दे। जैसा कि हमेशा से इलाही जमातों से होता आया है कि मुख़ालफ़तों का सामना करना पड़ता है, यह तो चलता चला जाएगा और यह होता रहा है तभी प्रगति भी होती हैं। यह भी एक सच्चाई की दलील है कि जब दलील दूसरे के पास न हो तो फिर वह सख़्तियां करता है। तो उन मुख़ालफ़तों से न तो अहमदी डरते हैं और न इन शा अल्लाह डरेंगे। यही चीज़ ईमान में तरक़्क़ी और जमात की तरक़्क़ी का बायस बनती है और यह मुख़ालेफ़तें हमेशा खाद का काम देती हैं लेकिन इस मुख़ालिफ़त की वजह से मुख़ालेफ़ीन का जो बद-अंजाम होना है, इन्सानी हमदर्दी के नाते हम ऐसे लोगों के लिए भी दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला उनको अक़्ल दे और यह अपने बद-अंजाम से पहले अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल करते हुए इस से बच सकें। और अपने लिए भी यह दुआ करनी चाहिए कि हमारी कोताहियों और ग़लतियों की वजह से हम अल्लाह तआला के इन इनामों से महरूम न रह जाएं जो अल्लाह तआला ने हमारे लिए मुक़द्दर फ़रमाए हुए हैं। दुश्मन का हर शर और हर कोशिश हमारे ईमान में तरक़्क़ी और ख़ैर के सामान लाने वाली हो। हम में से प्रत्येक इस्तक़ामत दिखाने वाला हो। हमारी नेक तमन्नाएं हमेशा अल्लाह तआला से क़बूलियत का दर्जा पाने वाली हों और इस की वजह से हम अल्लाह तआला का प्यार हासिल करने वाले हों। अल्लाह तआला हमें अपनी समस्त उन नेक सिफ़ात की पनाह में ले-ले जिनका हमें इलम है या नहीं और अपनी मख़लूक़ के हर उपद्रव से हमें बचाए। आमीन"

(ख़ुतबा जुमा 11 अगस्त 2006 ई.)

وآخر دعوانا ان الحمد للہ رب العالمین

★ ★ ★

नज़ारत नश्र-व-इशाअत की ओर से प्रकाशित होने वाली पुस्तक का परिचय

ख़िलाफ़त का महत्त्व तथा इसके लाभ

यह पुस्तक 2008 ई. में ख़िलाफ़त के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर लिखी गई थी, इस पुस्तक की यह विशेषता है कि लेखक ने इस में ख़िलाफ़त से जुड़े हर पहलू को बहुत अच्छी तरह से वर्णन किया है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद जो ख़िलाफ़त चली (अर्थात ख़िलाफ़त ए राशिदा) के दौर का भी संक्षेप में वर्णन किया है फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के बाद जो ख़िलाफ़त ए अहमदिया का निज़ाम जारी हुआ उसका बहुत विस्तार से और सुंदर शैली में वर्णन किया है। सभी ख़लीफाओं की जीवनी और उनके दौर में होने वाली जमात की उन्नति का वर्णन किया गया है। हर ख़लीफा के दौर में जो जमाती उन्नति हुई, घटनाएं घटीं, मस्जिदें बनीं, जो स्कीम लागू हुईं, कबूलियत ए दुआ के लिए वृतांत इत्यादि का उल्लेख किया गया है। खिलाफत के बारे में इतने विस्तार से लिखी यह पहली पुस्तक है जो पाठकों को बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

तर्बीयत-ए-औलाद और अहमदी माओं की ज़िम्मेदारियाँ, मुहब्बत-ए-इलाही, नमाज़, तिलावत, ख़िलाफ़त से मुहब्बत और उच्च आचार

(श्रीमती डाक्टर मंसूरा अलाहदीन साहिबा, सदर लजना इमाइल्लाह कादियान)

भाषण जलसा सालाना कादियान 2022 ई.महिलाओं के इज्लास से

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا

(सूरः फ़ुरकान आयत : 75)

निकलें तुम्हारी गोद से पल कर वह हक़ परसत
हाथों से जिनके दीन को नुसरत नसीब हो
ऐसी तुम्हारे घर के चराग़ों की हो ज़या
आलम को जिन से नूर-ए-हिदायत नसीब हो

श्रीमती सदर साहिबा और प्यारी बहनों और बच्चियों!! मेरी तक़रीर का शीर्षक है तर्बीयत औलाद और अहमदी माओं की ज़िम्मेदारियाँ, मुहब्बत-ए-इलाही, नमाज़, तिलावत, ख़िलाफ़त से मुहब्बत और उच्च आचार" है

जो आयत-ए-करीमा आपने सुनी उसका अनुवाद यह है कि हे रब! हमें अपने जीवन साथियों और अपनी औलाद से आँखों की ठंडक अता कर और हमें मुत्तक़ियों का इमाम बना दे

प्यारी बहनों! हम अल्लाह तआला का जिस क़दर भी शुक्र बजा लाएंगे वह कम है कि उस ने हमें इस दौर के इमाम को पहचानने और उस पर ईमान लाने की तौफ़ीक़ बख़शी। आज से एक सदी क़बल जब चारों तरफ़ अंधकार का दौर दौरा था और इस्लाम की कश्ती भंवर में फंसी हुई हचकोले खा रही थी तो उस वक़्त अल्लाह तआला ने सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दुनिया में अवतरित फ़रमाया। आप अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की मदद से मुख़ालफ़तों की तेज़--ओ-तुद आंधियों का मुक़ाबला करते हुए इस्लाम की कश्ती को डूबने से बचाया और ख़ुदा के दीन की ख़ातिर अपने माल, इज़्ज़त और औलाद को क़ुर्बान कर देने वाली एक ऐसी जमात क़ायम कर दी जिसका आज दुश्मन भी मोतरिफ़ है कि हाँ इस्लाम की ख़िदमत पर कमर-बस्ता अगर कोई जमात इस दौर में है तो वह जमात अहम-दिया है।

प्यारी बहनों इस जमात के अफ़राद होने का सौभाग्य हम पर जो ज़िम्मेदारियाँ डालता है उन की तरफ़ में अपनी बहनों को तवज्जा दिलाना चाहती हूँ

यह एक हक़ीक़त है और तारीख़-ए-आलम शाहिद है कि किसी भी क़ौम का बुलंदी पर पहुंच जाने का राज़ औरत की अक़ल-ओ-हिम्मत और बुलंद किरदारी ही में छिपा है और इसी तरह अगर किसी क़ौम के पतन के कारण तलाश किए जाएं तो इस में भी हमें औरत ही का हाथ नज़र आता है। सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने ईसी हक़ीक़त के पेश-ए-नज़र जमात की महिलाओं की दीनी और इलमी तरक़्क़ी के लिए लजना इमाइल्लाह का क़ियाम फ़रमाया था। आप रज़ियल्लाहु अन्हो के दिल में महिलाओं की तर्बीयत के लिए बे-इंतेहा तड़प थी। आपकी दूरबीन निगाह ने यह देख लिया था कि जब तक जमात की औरतों की इस्लाह नहीं होगी उस वक़्त तक जमात तरक़्क़ी नहीं कर सकती। आप अलैहिस्स-लाम फ़रमाते हैं :

"असल ज़िम्मेदारी औरतों पर बच्चों की तालीम-ओ-तर्बीयत की है और यह ज़िम्मे-दारी जिहाद की ज़िम्मेदारी से कुछ कम नहीं। अगर बच्चों की तर्बीयत अच्छी हो तो क़ौम की बुनियाद मज़बूत होती है और क़ौम तरक़्क़ी करती है और अगर उन की तर्बीयत अच्छी न हो तो क़ौम ज़रूर एक न एक दिन तबाह हो जाती है। अतः किसी क़ौम की तरक़्क़ी और तबाही की निर्भरता उस क़ौम की औरतों पर ही है। अगर आजकल की माएं अपनी औलाद की तर्बीयत इसी तरह करतीं जिस तरह सहाबि-यात ने की तो क्या यह संभव नहीं था कि उनके बच्चे भी वैसे ही क़ौम के जांनिसार सिपाही होते जैसे कि सहाबियात की औलादें थीं। अगर आज भी ख़ुदा न ख़ास्ता जमात अहमदिया में कोई ख़राबी वाक़्य हुई तो उसकी औरतें ही ज़िम्मेदार होंगी।"

(अल्-अज़हार, पृष्ठ : 327)

तर्बीयत-ए-औलाद में सबसे ज़्यादा एहमीयत जिस चीज़ को हासिल है वह माता पिता की दुआएं हैं । अल्लाह तआला ने जन्म से पहले से ले कर अंतिम समय तक औलाद के लिए दुआएं करने का हुक्म दिया है। जन्म से पूर्व नेक और सालेह औलाद के लिए अल्लाह तआला ने दुआ सिखाई رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ (सूरः आल-ए-इमरान : 39) अर्थात हे मेरे रब अपनी जनाब से मुझे नेक और तय्यब औलाद अता फ़र्मा। निसन्देह तू ही दुआओं को सुनने वाला है।

फिर बाद में औलाद को नेक और आँखों की ठंडक बनाने के लिए भी दुआ सिखाई। رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا۔ (सूरः अल् फ़ुर्कान : 75) हे हमारे रब हम को हमारे अज़्वाज की तरफ़ से और औलाद की तरफ़ से आँखों की ठंडक अता फ़र्मा और हमें मुत्तक़ियों का इमाम बना।

अतः माओं का अव्वलीन फ़र्ज़ है कि वह अपना पूरा ज़ोर दुआ पर लगा दें। जन्म से पहले से दुआ को अपना ओढ़ना बिछौना बना लें कि हे अल्लाह यह औलाद जो तूने अता की है हम ताक़त नहीं रखते कि उनकी सही परवरिश और सही तर्बीयत कर सकें तू हमें तौफ़ीक़ अता फ़र्मा कि हम उनकी उम्दा रंग में तर्बीयत कर सकें और उनको तेरे दीन के फ़िदाई बना सकें और यह औलाद हमारे लिए भी आँखों की ठंडक बने और तेरी रज़ा भी हासिल करें। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी बच्चों की तर्बीयत के लिए दुआओं पर-ज़ोर देने के लिए तलक़ीन फ़रमाई है। आप अलैहिस्सलाम बच्चों को बदनी सज़ा देने और ज़्यादा डाँट डपट करने को नापसंद फ़रमाते थे और अक्सर यही फ़रमाते थे कि बच्चों के लिए दुआ को अपना मामूल बना लो। आपकी अमली ज़िंदगी का नमूना हमारे सामने है। आप अपनी औलाद के लिए दुआ करते हुए अपने मंजूम कलाम में फ़रमाते हैं।

कर उन को नेक क़िस्मत दे उनको दीन-ओ-दौलत
कर उनकी ख़ुद हिफ़ाज़त हो उन पर तेरी रहमत
दे रुश्द और हिदायत और उम्र और इज़्ज़त
ये रोज़ कर मुबारक सुबहा नमयरानी
शैताँ से दूर रखियो अपने हुज़ूर रखियो
जान पर्ज़-ए-नूर रखियो दिल पर सरूर रखियो
इन पर मैं तेरे क़ुरबाँ रहमत ज़रूर रखियो
ये रोज़ कर मुबारक सुबहा नमयरानी

दुआओं के साथ बच्चों को अच्छी बातों की तलक़ीन और नसीहत और उसके साथ अपना अमली नमूना दिखाना भी निहायत ज़रूरी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है :

أَكْرِمُوا أَوْلَادَكُمْ

इस में भी वही फ़लसफ़ा वर्णन किया गया है कि अपनी औलाद की इज़्ज़त करो ताकि उनके अंदर इज़्ज़त-ए-नफ़स पैदा हो। जब हम अपने बच्चों की इज़्ज़त करते हुए मुहब्बत से उन को नेक बातों की तरग़ीब दिलाएंगे तो वे भी हमें अपना सच्चा ख़ैर--ख़्वाह समझेंगे और माता पिता की इताअत करेंगे।

हज़रत उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हा ने जिस रंग में अपने बच्चों की तर्बीयत की, उसके बारे में हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं :

"बच्चे पर हमेशा एतबार और पुख़्ता एतबार ज़ाहिर करके उसकी माता पिता के एतबार की शर्म और लाज डाल देना यह आपका बड़ा उसूल तर्बीयत है तो बच्चे पर एतबार करो और उस को शक से न देखा करें। झूठ से नफ़रत, ग़ैरत और सादगी आपका अव्वल सबक़ होता था। हम लोगों से भी आप हमेशा यही फ़रमातीं कि बच्चे में यह आदत डाल लो कि वे कहना मान ले। फिर बे-शक बचपन की शरारत भी आए तो कोई डर नहीं। जिस वक़्त भी रोका जाएगा बाज़ आजाएगा और इस्लाह हो जाएगी। फ़रमातीं कि अगर एक-बार तुमने कहना मानने की आदत डाल दी तो फिर हमेशा इस्लाह की उम्मीद है। यही आपने हम लोगों को सिखा रखा था और कभी हमारे वहम-ओ-गुमान में भी नहीं आ सकता था कि हम माता पिता की अदमे मौजूदगी की हालत में भी उनके मंशा के ख़िलाफ़ कर सकते हैं।"

हज़रत उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हा हमेशा फ़रमाती थीं कि मेरे बच्चे झूठ नहीं बोलते और यही एतबार था जो हमको झूठ से बचाता बल्कि ज़्यादा दूर करता था।

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो को जमात की महिलाओं और बच्चियों की तर्बीयत की इस क़दर फ़िक्र थी कि आपने बेशुमार लैक्चर औरतों में इस ताल्लुक़ से दिए जो हमारे लिए मशअले-राह हैं। इन को बार-बार पढ़ना और उन पर

अमल करना हमारा फ़र्ज़ है। आप फ़रमाते हैं :

क़ौम में जन्नत माओं के ज़रीया से ही आती है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि माँ के क़दमों के नीचे जन्नत है यह कितना लतीफ़ फ़िक़रा है । आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने माँ की किस क़दर एहमियत वर्णन फ़रमाई है। आम तौर पर लोग इसके ये अर्थ करते हैं कि माँ की इताअत और फ़रमांबर्दारी में जन्नत मिलती है। यह भी दरुस्त है लेकिन इसके असल अर्थ ये हैं कि वास्तव में क़ौम में जन्नत तभी आती है जब माएं अच्छी हों और औलाद की सही तर्बीयत करने वाली हों अगर माएं अच्छी न हों तो औलाद भी कभी अच्छी नहीं होगी और जिस क़ौम की औलाद अच्छी नहीं होगी इस क़ौम में जन्नत भी नहीं आएगी।

हुज़ूर अनवर फ़रमाते हैं : "अतः हमेशा औलाद की फ़िक्र के साथ तर्बीयत करनी चाहिए और उनकी राहनुमाई करनी चाहिए। औरतों को अपने घरों में वक़्त गुज़ारना चाहिए। मजबूरी के इलावा जब तक बच्चों की तर्बीयत की उम्र है ज़रूरत नहीं है कि मुलाज़मतें की जाएं। करनी हैं तो बाद में करें। कुछ माएं ऐसी हैं जो बच्चों की ख़ातिर क़ुर्बानियां करती हैं हालाँकि प्रोफ़ैशनल हैं, डाक्टर हैं और अच्छी पढ़ी लिखी हैं लेकिन बच्चों की ख़ातिर घरों में रहती हैं और जब बच्चे उस उम्र को चले जाते हैं जहां उनको माँ की फ़ौरी ज़रूरत नहीं होती, अच्छी तर्बीयत हो चुकी होती है तो फिर वे काम भी कर लेती हैं। तो बहर हाल इस के लिए औरतों को क़ुर्बानी करनी चाहिए। अल्लाह तआला ने औरत को जो सम्मान बख़्शा है कि उसके पांव के नीचे जन्नत है वह इसी लिए है कि वे क़ुर्बानी करती है। औरत में क़ुर्बानी का माद्दा बहुत ज़्यादा होता है। जो औरतें अपनी ख़ाहिशात की क़ुर्बानी करती हैं उनके पांव के नीचे जन्नत है।" (अल्फ़ज़ल इंटरनैशन 15 मई 2015 ई.)

हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 2004 ई. में नाईजेरिया में मुनाक़िद होने वाले जलसा सालाना के अवसर पर अपने ख़िताब में अहमदी महिलाओं को संबोधित करते हुए फ़रमाया :

"औरतें याद रखें कि उनका इस्लामी मुआशरे में एक बुलंद मुक़ाम है। अगर उन्होंने अपने इस बुलंद मुक़ाम को न पहचाना तो इस बात की कोई ज़मानत नहीं दी जा सकती कि उनकी आइन्दा नसलें ईमान पर क़ायम रहेंगी। महिलाओं को अपने इस मुक़ाम को पहचाने जो उनका समाज में है। नहीं तो वे अपने खाविंदों और आइन्दा नसलों की नाफ़रमान और उनका हक़ अदा न करने वाली समझी जाएँगी और सबसे बढ़कर वे अपने पैदा करने वाले से बेवफ़ाई कर रही होंगी। अतः यह इंतेहाई अहम है कि हर अहमदी औरत अपनी इस्लाह की तरफ़ तवज्जा देती रहे और हमेशा यह दुआ करती रहे कि अल्लाह तआला उस की राहनुमाई करे और इस को इस काबिल बनाए कि वे अपनी आइन्दा नसलों की इस्लामी तालीमात के मुताबिक़ परवरिश कर सके।"

तर्बीयत-ए-औलाद के हवाले से एक माँ की ज़िम्मेदारियों के जो चंद पहलू मेरी तक़रीर का हिस्सा हैं वह पेश करती हूँ

ख़ुदा तआला से मुहब्बत

तर्बीयत औलाद के लिए सबसे अव्वल ख़ुदा तआला की मुहब्बत और इस से कामिल ताल्लुक़ पैदा करना है। इस लिए एक माँ के लिए ज़रूरी है कि अपने उद्देश्य पैदाइश को समझते हुए ख़ुदा तआला के आगे झुकने वाली और अपनी औलाद की इस तौर पर तर्बीयत करने वाली हो। बच्चे के दिल में शुरू से ही मुहब्बत इलाही पैदा करे।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बच्चों को पहली बात जो सिखानी है वह لا الہ الا اللہ है सबसे पहला दरस बच्चे के कान में ख़ुदा की बड़ाई और किबरियाई का हो। नौ मौलूद बच्चे की तर्बीयत इस क़दर अहम और ज़रूरी है कि सबसे पहले बच्चे के कान में अज़ान देने का हुक्म आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दिया

जैसे जैसे बच्चे बड़े होते जाएं माओं का फ़र्ज़ है कि वह अवसर की मुनासबत से बच्चों को अल्लाह तआला की नेअमतों और एहसानों के बारे में बता कर उस का शुक्र अदा करने वाले बनाएँ और इस हवाला से अल्लाह तआला की मुहब्बत बच्चों के दिलों में पैदा करें। उदाहरणतः खाने पीने के वक़्त उसे समझाएँ कि यह रिज़्क़ हमें अल्लाह तआला ने दिया है जो किस क़दर मेहनत के बाद हम तक पहुंचा है इस पर हमें अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना चाहिए। इसी तरह सोते वक़्त सितारे, चांद और आसमान, दिन के दूसरे नज़ारों की तरफ़ मुतवज्जा करते हुए ख़ुदा तआला की तरफ़ तवज्जा दिला सकती हैं। हमारे प्यारे इमाम हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"बचपन से अल्लाह तआला की मुहब्बत दिलों में पैदा करें जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अबदुर रहमान बनाएँ। बचपन से अल्लाह तआला की मुहब्बत दिलों में पैदा करें। जब ज़रा बात समझने लग जाएं तो जब भी कोई चीज़ दें तो यह कह कर दें कि यह तुम्हें अल्लाह मियां ने दी है। शुक्र की आदत डालें फिर आहिस्ता-आहिस्ता समझाएँ कि जो चीज़ मांगनी है अल्लाह मियां से माँगो।" (ख़िताब जलसा सालाना बर्तानिया 2003 ई.)

एक माँ की ज़िम्मेदारियों में दूसरी अहम ज़िम्मेदारी अदायगी नमाज़ की मुहब्बत बच्चों के दिलों में पैदा करना है :

मेरी प्यारी बहनों यह एक हक़ीक़त है कि तर्बीयत अमल से शुरू होती है उदाहरणतः जब हम फ़रायज़ की पाबंदी करेंगी और मुनकिरात से परहेज़ करेंगी तो ला-मुहाला हमारी औलाद भी ऐसा ही करेगी। हम नमाज़ पढ़ने मस्जिद में जाएँगी तो हमारे बच्चे दौड़ कर साथ जाऐंगे। माँ घर में नमाज़ पड़ेगी तो छोटे बच्चे उस की नकल में सज्दे बजा लाएँगे। लेकिन अगर हम ख़ुद नमाज़ की पाबंद न होंगी और बच्चों को नमाज़ की तलक़ीन करेंगी और तवक़्क़ो रखेंगी कि वे नमाज़ी बन जाऐंगे तो यह केवल एक ख़ामख़याली होगी।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने फ़रमाया : "नमाज़ तो इन्सानी ज़िंदगी की जान है। नमाज़ न हो तो कुछ भी रिश्ता ख़ुदा से बाक़ी नहीं रहता। तो इस की आदत डालने के लिए भी बचपन से तर्बीयत की ज़रूरत पड़ती है। अचानक यह आदत बच्चों में नहीं पड़ा करती। इस का तरीक़ा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह सिखाया है कि सात साल की उम्र से उन को साथ नमाज़ पढ़ाना शुरू करो और प्यार से ऐसा करो। कोई सख़्ती करने की ज़रूरत नहीं। कोई मारने की ज़रूरत नहीं। उस के बाद वे बच्चा अगर दस साल की उम्र तक प्यार और मुहब्बत से सीखता रहे फिर 10 और 12 वर्ष के दरमयान इस पर कुछ सख़्ती करो क्योंकि वह खेलने की उम्र ऐसी है कि इस में कुछ मामूली सज़ा कुछ सख़्त अलफ़ाज़ कहना यह ज़रूरी हुआ करता है बच्चों की तर्बीयत के लिए।" (ख़ुतबा जुमा तिथि 11 फ़रवरी 2000 ई.)

हज़रत उम्मुल मोमिनीन नुसरत जहां बेगम साहिबा नमाज़ों की बड़ी पाबंदी किया करती थीं। रोज़ाना सिर्फ़ नमाज़ों की अदायगी ही नहीं बल्कि वक़्त पर अदायगी की पाबंदी फ़रमाती थीं और दूसरों को भी इस की तलक़ीन करती थीं। आप का यह हाल था कि नमाज़ का वक़्त होने पर वुज़ू करके अज़ान का इंतेज़ार कर रही होती थीं और अज़ान के बाद अपने इर्द-गिर्द के बच्चों को कहतीं कि मैं नमाज़ पढ़ने लगी हूँ लड़कियो तुम भी नमाज़ पढ़ो।

इस तरह अपने अमली नमूना से नसीहत फ़रमाती थीं तो देखें यही नसीहत का सबसे बेहतर ज़रीया है।

माँ बाप का फ़र्ज़ है कि वह अपने बच्चों को नमाज़ का अनुवाद भी बचपन में सिखाएँ। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्ला फ़रमाते हैं।

"इबादत का ताल्लुक़ मुहब्बत से है और केवल रस्मी तौर पर अनुवाद सिखाने के नतीजे में इबादत आएगी किसी को नहीं, वह माँ बाप जिनका दिल इबादत में हो जिनको नमाज़ से प्यार हो जब वह अनुवाद सिखाते हैं बच्चे से ज़ाती ताल्लुक़ रखते हुए। बच्चा अपने माँ बाप की आँखों में आँखें डाल कर देख रहा होता है उनके दिल की गर्मी को महसूस कर रहा होता है उनकी भावनाओं से इस के अंदर भी एक पैदा हो रहा होता है वे अगर नमाज़ सिखाएँ तो उनका नमाज़ सिखाने का अंदाज़ और होगा .. हर अहमदी को नमाज़ के मुआमले में काम करना पड़ेगा। मेहनत करनी पड़ेगी। अपने नफ़्स को शामिल करना पड़ेगा। अपने सारे वजूद को इस में दाख़िल करना पड़ेगा तब वे नसलें पैदा होंगी जो नमाज़ी नसलें होंगी ख़ुदा की नज़र में।" (ख़ुतबा जुमा 8 नवंबर 1985 ई.)

क़ुरआन-ए-करीम

इसी तरह तर्बीयत का एक और पहलू तिलावत क़ुरआन-ए-करीम है इस में भी बा-क़ायदगी होनी चाहिए। प्रतिदिन सुबह के वक़्त हर अहमदी घर से तिलावत की आवाज़ उठनी और सुनाई देनी चाहिए। अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में न केवल तिलावत करने का हुक्म दिया है बल्कि तिलावत क़ुरआन-ए-करीम के लिए सब से मौज़ूं वक़्त भी बता दिया है इस लिए अल्लाह तआला फ़रमाता है إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا۔ (सूरः बनीइसराईल आयत : 79)

यक़ीनन फ़ज्र को क़ुरआन पढ़ना ऐसा है कि इस की गवाही दी जाती है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं हमारी नसलों को अगर सँभालना है तो क़ुरआन-ए-करीम ने सँभालना है। तिलावत क़ुरआन-ए-करीम की आदत डालना और उसके अर्थों पर ग़ौर करना यह हमारी तर्बीयत की बुनियादी ज़रूरत है और तर्बीयत की चाबी है। कोई बच्चा न हो जिसे तिलावत की आदत न हो उस को कहें कि तुम नाशता छोड़ दिया करो मगर स्कूल से पहले तिलावत ज़रूर

करनी है और तिलावत के वक़्त कुछ अनुवाद ज़रूर पढ़ो ख़ाली तिलावत न करो।
(ख़ुत्बा जुमा फ़र्मूदा 7 जुलाई 1997 ई.)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"इसी तरह अहमदी माओं और बच्चियों को में यह भी कहना चाहूँगा कि जब आप नमाज़ों की तरफ़ तवज्जा करें तो क़ुरआन-ए-करीम के पढ़ने और इस को समझने की तरफ़ भी तवज्जा करें इस से आपको अल्लाह तआला के अहकामात का पता चलेगा और इस से आपको अपनी औलाद की सही तर्बीयत करने के रास्ते मिलेंगे। अतः क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत करना और उसका अनुवाद पढ़ना भी अल्लाह तआला के हुक्मों को समझने के लिए बहुत ज़रूरी है।"
(जलसा सालाना मारीशस 2005 ई., अल् अज़हार हिस्सा अव्वल भाग 3 पृष्ठ 354-355)

अतः हम माओं की अहम ज़िम्मेदारी है कि ख़ुद बाक़ायदगी से तिलावत क़ुरआन-ए--करीम करें। इसके मअनी और मुतालिब को सीखीं, समझें, इस पर अमल करें और अपने बच्चों को भी इस की आदत डालें। अल्लाह जितनी तौफीक दे।

ख़िलाफ़त से मुहब्बत

इसी तरह तर्बीयत-ए-औलाद के सिलसिला में एक अहम पहलू अपने और अपने बच्चों के अंदर ख़िलाफ़त से मुहब्बत की रूह पैदा करना है। आज समस्त ज़मीन पर बसने वाले समस्त लोगों में केवल जमात अहमदिया ही है जो निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त से वाबस्ता हो कर आफ़ियत के हिसार में है और इस की बरकात-ओ-फ़्यूज़ से फ़ैज़याब हो रही है। अगर हम चाहते हैं कि ये बरकात हमारे अंदर नसलन बाद नसलन जारी रहें तो हम पर यह अज़ीम ज़िम्मेदारी आयद है कि हम मुकम्मल इख़-लास-ओ-वफ़ा के साथ ख़लीफ़-ए-वक़्त की इताअत करने वाली हों और हमारा उठना, बैठना, ओढ़ना, बिछौना सब इमाम-ए-वक़्त के इशारों पर हो। यही ख़िलाफ़त का क़ुरब पाने और उसकी बरकात हासिल करने का ज़रीया है। इस के लिए ज़रूरी है कि हम बाक़ायदगी से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के समस्त ख़ुतबात और प्रोग्राम सुनें और बाक़ायदगी से हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में दुआइया ख़ुतूत लिखें और अपने बच्चों में भी यह आदत डालें और बच्चों को तलक़ीन करें कि कोई भी अहम फ़ैसला लेने से पहले अपने प्यारे इमाम वक़्त से ज़रूर राहनु-माई हासिल करें तथा यह भी कोशिश करते रहें कि ख़लीफ़-ए-वक़्त के मिलने की ख़ाहिश और अगर मुलाक़ात का अवसर मिले तो उसे ज़रूर फ़ौक़ियत दें और एम.टी-.ए. से अपने बच्चों को जोड़े रखें और ख़ुद भी उसके प्रोग्रामज़ उनके साथ मिलकर देखें। अपने और अपने बच्चों में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के लिए खासतौर पर दुआ करने की आदत पैदा करें इस से हुज़ूर अनवर से वफ़ा-ओ-मुहब्बत का ताल्लुक़ मज़बूत से मज़बूत होता चला जाएगा। इन शा अल्लाह

ख़िलाफ़त से मुहब्बत के ताल्लुक़ से जलसा सालाना तनज़ानिया 2005 ई. के अवसर पर एक ख़िताब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया

"यूगांडा में भी जब हम उतरे हैं और गाड़ी से बाहर निकले तो एक औरत अपने बच्चे को उठाते हुए जो दो अढ़ाई साल का बच्चा था साथ साथ दौड़ती जा रही थी। उसकी अपनी नज़र में भी पहचान थी, ख़िलाफ़त और जमात से एक ताल्लुक़ नज़र आ रहा था। वफ़ा का ताल्लुक़ ज़ाहिर हो रहा था और बच्चे की मेरी तरफ़ तवज्जा नहीं थी थोड़ी थोड़ी देर बाद उस का मुँह इस तरफ़ फेरती थी कि देखो और काफ़ी दूर तक दौड़ती गई। इतनी भीड़ थी कि उसको धक्के भी लगते रहे लेकिन उसने परवाह नहीं की। आख़िर जब बच्चे की नज़र मुझ पर पड़ गई तो बचा देखकर मुस्कुराया हाथ हिलाया तब माँ को चैन आया तो बच्चे के चेहरा की जो रौनक और मुस्कुराहट थी वह भी इस तरह थी जैसे बरसों से पहचानता हो तो जब तक ऐसी माएं पैदा होती रहेंगी जिनकी गोद में ख़िलाफ़त से मुहब्बत करने वाले बच्चे प्रवान चढ़ेंगे उस वक़्त तक ख़िलाफ़त अहमदिया को कोई ख़तरा नहीं।"

उच्च आचार

तर्बीयत औलाद में माओं की यह भी ज़िम्मेदारी है कि वे अपने बच्चों को आला अख़लाक़ से आरास्ता करें। झूठ से पूर्णतः इजतेनाब बल्कि नफ़रत होनी चाहिए। ज़बानी नसीहत काफ़ी नहीं बल्कि ख़ुद भी सच्च बोलने का अमली मुज़ाहरा करें। खेल और मज़ाक़ में भी कभी झूठ न बोलें। बच्चों में वक़ार होना चाहिए। आपस में एक दूसरे से मुहब्बत, ख़ुशख़ुलक़ी से पेश आना, नरम और पाक ज़बान प्रयोग करना। सब्र-ओ-क़नाअत का माद्दा पैदा करना, वुसअत हौसला, ग़रीब की हमदर्दी और दुख दूर करने की आदत, बड़ों का अदब, इताअत और फ़र्माबरदारी यह सब ख़ुलक बचपन में कोशिश कर के पैदा किए जा सकते हैं और उनका सफ़र भी घरों से शुरू होना चाहिए क्योंकि अक्सर लोगों के अख़लाक़ बिगाड़ने वाले उनके माता पिता हैं। बदअख़्लाकी बहुत ही बड़ा गुनाह बन जाती है क्योंकि बदअख़लाक़ लोगों के मुताल्लिक़ जन्नत का तसव्वुर नहीं किया सकता।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं : "ख़ाह माँ बाप कितनी ही कोशिश करें कि उनका बच्चा बद अख़लाक़ियों के बद असरात से महफ़ूज़ रहे जब तक बच्चे की सोहबत और मजलिस नेक नहीं होगी उस वक़्त तक माँ बाप की कोशिश बच्चों के अख़लाक़ दरुस्त करने में कारगर और मुफ़ीद साबित नहीं हो सकती। बे-शक एक हद तक उन की अच्छी तर्बीयत से बच्चों में नेक ख़्यालात पैदा होते हैं लेकिन अगर बच्चे की उम्दा तर्बीयत के साथ उसकी सोहबत भी अच्छी न हो तो बद सोहबत का असर तर्बीयत के असर को इतना कमज़ोर कर देता है कि इस तर्बीयत का होना न होना क़रीबन मुसावी हो जाता है। बचपन की बद सोहबत ऐसी आदात बच्चे के अंदर पैदा कर देती हैं कि आइन्दा उम्र में उनका अज़ाला नामुमकिन हो जाता है।"
(अल्इज़हार भाग प्रथम पृष्ठ : 161-160)

इस लिए हम माओं का फ़र्ज़ है कि हम अपने अमली नमूनों को पेश करने के साथ साथ अपने बच्चों की निगरानी भी रखें कि वह कहीं बुरी सोहबत तो इख़तेयार नहीं कर रहे हैं या फिर कोई बदअख़्लाकी वाले प्रोग्राम तो नहीं देख रहे हैं। हज़रत ख़ली-फ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं कि :

"अतः अगर अहमदी बच्चों की माएं अपनी ज़िम्मेदारियों को समझने वाली बनी रहीं। आज अगर आप अपनी ज़िम्मेदारियों को सही रंग में अदा करती रहीं, आपके क़ौल और फ़ेअल में कोई मतभेद न हो। आपकी हर बात सच्च और सिर्फ सच्च पर बुनियाद रखने वाली बनी रही तो जमात अहमदिया की आइन्दा नसलें इन शा अल्लाह, अल्लाह से ताल्लुक़ जोड़ने वाली नसलें रहेंगी। अतः हर वक़त अपने ज़हनों में अपने इस मुक़ाम को बिठाए रखें और अपनी इबादतों और अपने अमली नमूने के आला मयार हासिल करने की कोशिश करती रहें। क़ुरआन-ए-करीम के जितने हुक्म हैं उन पर अमल करने की कोशिश करती रहें। समस्त आला अख़लाक़ जिनकी तरफ़ हमें अल्लाह तआला ने तवज्जा दिलाई है उन्हें हासिल करने की कोशिश करें। हमेशा नेकियां बजा लाने के साथ साथ नेकियों की तलक़ीन भी करती रहें। बुराईयों को तर्क करने वाली बनें और फिर अपने माहौल में बुराईयों को रोकने वाली बनें। मुआशरे में भी बुराईयां फैलने न दें। आपस में एक दूसरे से हुस्न-ए-सुलूक से पेश आएं। अपनी रंजिशों और अपनी नाराज़गियों को भुला दें। आम तौर पर देखा गया है कि औरतें ज़्यादा देर तक अपनी रंजिशों को दिलों में बिठाए रखती हैं। अगर आपके दिल में बुग़ज़-ओ-कीना पलते रहे तो फिर ख़ुदा तआला तो ऐसे दिलों में नहीं उतरता। ऐसे दिलों की इबादत के मयार वह नहीं होते जो ख़ुदा तआला फ़रमाता है।"
(जलसा सालाना अस्ट्रेलिया 2006 ई. ख़िताब महिलाओं से प्रकाशित अल् फ़ज़ल इंटरनैशनल 12 जून 2015 ई.)

अतः मेरी प्यारी बहू हम सबको अपनी ज़िम्मेदारियों को समझते हुए कमरबस्ता होना चाहिए और अपनी पूरी ताक़तों और पूरी सलाहीयतों को बरू-ए-कार ला कर दुआओं के साथ तर्बीयत के काम में लग जाना चाहिए। सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्लाबा रहमाहु ल्लाह फ़रमाते हैं :

"आज अगर आप माएं बन चुकी हैं तो आपको आज भी ख़ुदा तआला ने यह ताकत बख़शी है कि अपने आस पास, अपने माहौल में ख़ुदा की मुहब्बत के रंग भरने की कोशिश करें। अगर आप माएं नहीं बनें तो आज वह पाक तबदीलियां पैदा करें ताकि जब आप माएं बनें तो इस से पहले ही ख़ुदा से मुहब्बत करने वाली वजूद बन चुकी हूँ। वह छोटी बच्चियां और वे छोटे बच्चे जो आपकी गोदों में पलते हैं, आपके हाथों में खेलते हैं आपके दूध पी कर जवान होते हैं या आपके हाथों से दूध पी कर जवान होते हैं इसी ज़माना में इबतेदाई दौर में उनको ख़ुदा के प्यार की लोरियाँ दें। ख़ुदा की मुहब्बत की उनसे बातें करें फिर बाद की सारी मनाज़िल आसान हो जाएँगी .. आपके तबदील हुए बग़ैर आपकी औलाद तबदील नहीं हो सकती, जब तक आपकी ज़ात ख़ुदा के नूर से न भर जाए आपकी औलाद के सीने ख़ुदा के नूर से नहीं भर सकते देखें आप एक नई सदी के सिर पर खड़ी हैं। इस सदी की आप मुजद्दिद बनाई गई हैं। बहैसीयत क़ौम आपको खलिफ़ा फ़रमाया गया। आपने आइन्दा ज़मानों में तर्बीयत औलाद की ज़रूरतें पूरी करनी हैं। यही वह तरीक़ है जिससे आप आइन्दा ज़मानों में औलाद की बेहतरीन तर्बीयत कर सकती हैं। अल्लाह तआला आपको उस की तौफ़ीक़ फ़रमाए।"

(ख़िताब जलसा सालाना महिलाओं से बर्तानिया 27 जुलाई 1991 ई.)

आख़िर में अपने प्यारे इमाम हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का एक इक़्तेबास पढ़ कर अपनी तक़रीर को ख़त्म करती हूँ । आप फ़रमाते हैं :

"अतः हे अहमदी माओं, वे ख़ुशनसीब माओं जिन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म पर लब्बैक कहते हुए इस ज़माने के इमाम को पहचाना उसकी इताअत का जुआ अपनी गर्दनों पर रखा, दुनिया की मुख़ालेफ़त मोल ली और यह अह्द किया कि हम हमेशा दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखेंगे अपना अपना जायज़ा लें और देखें कहीं हम इस अह्द से दूर तो नहीं जा रहे। हमारा दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखना सिर्फ अपनी ज़ात तक ही महिदूद हो कर तो नहीं रह गया। क्या हम इसको आगे भी बढ़ा रहे हैं, क्या हमने इस अह्द को आगे नसलों में मुंतक़िल कर दिया है। क्या हमारी गोदों में पलने वाले इबादुर रहमान और सालेहीन के गिरोह में शामिल होने वाले कहलाने के हक़दार हैं? क्या अल्लाह तआला ने जो अमानत हमारे सपुर्द की थी, वह अमानत जो अल्लाह तआला ने हमारी कोखों से इस लिए जन्म दिलवाई थी कि हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत में शामिल कर के अल्लाह तआला के हुज़ूर तोहफ़ा के तौर पर पेश कर सकें, उनकी तर्बीयत की है। क्या हम और हमारे बच्चे ख़ैरुल उम्मत कहलाने के मुस्तहिक़ हैं? अगर हाँ में जवाब है तो मुबारक हो। अगर नहीं तो यह सब कुछ हासिल करने के लिए आपको अपनी भी इस्लाह करनी होगी। जहां ज़रूरत हो वहां अपने खाविंदों को भी दीन की तरफ़ मायल करने के लिए कोशिश करनी होगी। अपने घरों के माहौल को भी ऐसा पाकीज़ा बनाना होगा जहां मियां बीवी का माहौल एक नेक और पाकीज़ा माहौल को जन्म दे और यूं हर अहमदी घराना एक नेक और पाकीज़ा समाज क़ायम करने वाला बन जाए जिससे जो बच्चा पैदा हो, जो बच्चा प्रवान चढ़े, वह सालेहीन में से हो। अतः अपनी क़दर-ओ-मंजिलत पहचानें। कोई अहमदी औरत समाज की आम औरत की तरह नहीं है। आप तो वे माएं हैं जिनके बारे में ख़ुदा के रसूल ने यह बशारत दी है कि जन्नत तुम्हारे पांव के नीचे है और कौन माँ चाहती है कि उसकी औलाद दुनिया-ओ--आख़िरत की जन्नतों की वारिस न बने। अतः एक नए अज़्म के साथ हिम्मत और दुआ से काम लेते हुए अपने बच्चों की तर्बीयत की तरफ़ तवज्जा दें। आप तो ख़ुश--क़िस्मत हैं कि ख़ुदा के मुक़द्दस रसूल और मसीह पाक अलैहिस्सलाम की दुआएं भी आप के साथ हैं। हे अल्लाह तू हमारी मदद कर और हमारी नसलों को भी इस्लाम पर क़ायम रख। अल्लाह करे कि आप सब अपनी औलादों की सही तर्बीयत करने वाली और उनके हुक़ूक़ अदा करने वाली आमीन।"

(अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 29 अगस्त 4 सितंबर 2003 ई.)

وَآخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

★ ★ ★

पृष्ठ 23 का शेष

एक वाक़िफ़ नौ अज़ीज़म सुलतान ख़लीलुल रहमान साहिब ने सवाल किया कि मुफ़ीद हुनर क्या हैं जो जमाअत के नौजवान मुम्किना जंग की तैयारी के लिए सीख सकते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया नौ जवान हों या बूढ़े। सबसे पहले आपको दुआ करनी चाहिए कि आपकी ज़िंदगी में जंग का कोई ऐसा वाक़िया न हो, कम से कम इस में देरी हो जाए। दूसरी बात यह कि आप अपने आपको इस्लाम की तब्लीग़ के लिए तैयार करें। और यह अह्द करें कि जब आप बड़े हो जाऐंगे तो इस्लाम का पैग़ाम फैलाएंगे। तथा अगर आप लोगों को यह समझा दें कि उनकी ज़िंदगी का उद्देश्य क्या है और उन्हें ज़िंदगी कैसे गुज़ारनी चाहिए और अल्लाह की मुहब्बत हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए तो फिर कम से कम अगर जंग के इमकान से मुकम्मल तौर पर छुटकारा हासिल न भी किया जा सके तो इस में कुछ वक़्त के लिए ताख़ीर हो सकती है। मैं पहले ही कह चुका हूँ कि प्रत्येक ख़ानदान को अपने घर में कुछ महीनों के लिए राशन भी महफ़ूज़ रखना चाहिए। नौजवान भी अपने घर वालों की मदद करें और अल्लाह से दुआ भी करें। अगर आपका मतलब है कि हम दुनिया को जंग से कैसे बचा सकते हैं तो अल्लाह से दुआ करें क्योंकि उसके इलावा हम और कुछ नहीं कर सकते। अगर दुनिया ख़ुद को तबाह करने के लिए कोशिश कर रही है और लीडर समझदार बनने की कोशिश नहीं कर रहे तो आप कुछ नहीं कर सकते। केवल दुआ ही कर सकते हैं।

एक वाक़िफ़ नौ इब्राहीम सय्यद अहमद साहिब ने यह सवाल पूछा कि जब हमारे दोस्त और क्लास फ़ैलो हमारे अक़ायद और अख़लाक़ को न पसंद करते हैं और फिर हमें ताना भी देते हैं तो हम उनके सामने अपनी शनाख़्त कैसे बरक़रार रख सकते हैं और अपने मज़हब का दिफ़ा कैसे कर सकते हैं?

इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर फ़रमाया : बात यह है कि ख़ुद-एतेमादी होनी चाहिए। अपने आपको क्या समझते हैं। हम ठीक हैं या ग़लत हैं। उनके मज़ाक़ को कुछ न समझो बल्कि उलटा तुम उनको कहो कि हम तो ठीक हैं तुम अपने आपको क्यों तबाह या बर्बाद कर रहे हो। आप में एतमाद होना चाहिए। जब हम ठीक हैं हमारा claim है कि हमने दुनिया को फ़तह करना है तो फिर क्यों फ़िक्र करते हो।

एक वाक़िफ़ नौ अज़ीज़म रौहान रहमान ज़फ़र साहिब ने यह सवाल किया कि जब हम ख़लीफ़तुल मसीह के लिए दुआ करते हैं तो विशेषता क्या दुआ करनी चाहिए?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : आप दुआ करें कि अल्लाह ख़लीफ़ा वक़्त को अपने फ़रायज़ की अदायगी में मदद फ़रमाए ताकि अल्लाह तआला ने ख़लीफ़ा वक़्त के कंधों पर जो ज़िम्मेदारियाँ डाली हैं वह सही तरीक़े से अदा करता हूँ। अल्लाह ख़लीफ़ा वक़्त को ताक़त और सेहत दे ताकि वह इस्लाम और अहमदियत के लिए भरपूर तरीक़ से अपने फ़रायज़ की बजा आवरी कर सके। यह दुआ करें कि ख़लीफ़ा वक़्त के ज़हन में जो भी मंसूबे होते हैं वह अल्लाह की मदद से कम से कम वक़्त और बेहतरीन तरीक़े से मुकम्मल हों। यह दुआ करो कि अल्लाह उसे मददगार अर्थात् सुलतान नसीर अता फ़रमाए, ताकि मददगारों की टीम भी ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की मदद कर सके। यह दुआ करें कि अल्लाह हमें ख़लीफ़ा वक़्त के सुलतान-ए-नसीर बनाए, कि वक़्फ़ नौ के तौर पर हम ख़लीफ़ा वक़्त के कामों, प्रोग्रामों और मन्सूबों की तकमील में ख़लीफ़ा की मदद कर के अपने फ़रायज़ भी अदा करें।

एक वाक़िफ़ नौ अज़ीज़म मशहूद अहमद ने यह सवाल किया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी किताब रिसाला अल् वसीयत में यह लिखते हैं कि जो वसीयत करता है उसे अपनी दौलत का कम से कम दसवाँ हिस्सा देना चाहिए। अगर मैं विद्यार्थी हूँ तो क्या मैं वसीयत कर सकता हूँ ?

इस पर हुज़ूर अनवर फ़रमाया : क्या आपको कुछ जेब ख़र्च मिलता है। तलबा-ए-को अपनी जेब ख़र्च से वसीयत करने की इजाज़त है। तथा अगर आपको एक सौ डालर या पच्चास डालर मिलते हैं, तो आप उस का दसवाँ हिस्सा दे सकते हैं और जब आप अपनी पढ़ाई मुकम्मल कर के अच्छी जॉब हासिल कर लें, अल्लाह आपको अच्छी नौकरी दे, फिर आप अपना चंदा अपनी तनख़्वाह के मुताबिक़ अदा करें। विद्यार्थी अपनी जेब ख़र्च से वसीयत कर सकते हैं।

एक वाक़िफ़ नौ अज़ीज़म तौफ़ीक़ ख़ालिद अहमद ने यह सवाल किया कि हुज़ूर अनवर का क्या मश्वरा है कि माली मुश्किलात में भी चंदों की अदायगी कैसे जारी रखी जाए?

इस पर हुज़ूर अनवर फ़रमाया: आप काफ़ी सेहत मंद लगते हैं आप दिन में तीन बार या कितनी बार खाते हैं। इन तीनों वक़्तों में आप इतमेनान से खाते हैं। आप मूसी भी हैं। आप काम भी कर रहे हैं। मैं आपसे आमदनी नहीं पूछना चाहता लेकिन आपको क़ुर्बानी और वसीयत का महत्त्व पता होनी चाहिए। आप अपने खाने पर रोज़ाना कितने पैसे ख़र्च करते हैं?

इस पर वाक़िफ़ नौ ने बताया कि पच्चास डॉलरज़ और हुज़ूर अनवर के पूछने पर बताया कि बाहर से भी खाता हूँ और रोज़ाना दस डालर ख़र्च करता हूँ।

इस पर हुज़ूर अनवर फ़रमाया : आप बाहर से खाए बग़ैर जी सकते हैं क्योंकि आपके घर में खाना है। तो अगर आप बाहर से जनक फ़ूड पर दस डालर ख़र्च नहीं करते हैं तो आपको रोज़ाना दस डालर की बचत होगी। तो 25 दिनों में आप 250 डॉलरज़ की बचत करेंगे और 12 महीनों में आप 3000 डालर की बचत करेंगे। इस तरह कम से कम केवल बाहर का खाना बंद करके आप सालाना 3000 डालर बचा सकते हैं। इसलिए आप फ़ैसला करें कि अल्लाह की राह में माली क़ुर्बानी आपकी ज़िंदगी में कितनी अहम है। क़ुर्बानी का मतलब है अपनी ज़ाती ख़ाहिशात को छोड़ना और अपनी पसंद की चीज़ तर्क करना ताकि अल्लाह आपको उसके बदला में प्रतिफल दे।

हुज़ूर अनवर फ़रमाया : मैंने क़ुर्बानी के बारे में यू.के में ख़ुद्दाम या अंसार के इजतेमा से ख़िताब भी किया था तो आप इस ख़िताब को सुनें। इसलिए अगर आप क़ुर्बानी के अर्थ और महत्त्व को जानते हैं तो आप यह सवाल नहीं उठा सकते कि अगर हम माली मुश्किलात में हैं तो हम चंदा कैसे अदा कर सकते हैं। आपने अपनी ज़िंदगी से रोटी का एक टुकड़ा भी कम नहीं किया तो आप कैसे कह सकते हैं कि आप माली तंगी में हैं?

शेष आगे ..

रिपोर्ट तर्बियती जलसा

तिथि 31 जुलाई 2022 ई. को जमाअत अहमदिया कोनथरकलाँ, ज़िला मोरेना एम.पी. में इंफाक फ़ी सबीलिल्लाह के शीर्षक पर एक तर्बियती जलसा आयोजित हुआ। जलसे का आरंभ तिलवात क़ुरआन-ए-करीम से हुआ। जो कि श्रीमान खालिद अहमद खान साहब ने पढ़ी। इसके पश्चात श्रीमान हामिद खान साहब ने नज़्म पढ़ी। श्रीमान हामिद खान साहब ने लोगों सुनो के ज़िनदा खुदा वह खुदा नहीं के विषय मे सम्बोधन किया। दूसरा भाषण श्रीमान हामिद खान साहिब ने इंफाक फ़ी सबीलिल्लाह के शीर्षक दिया। अंत में सोहराब खान साहब ने कुछ बातें प्रस्तुत करने के पश्चात दुआ के साथ जलसा समाप्त किया।

मोहम्मद शमशाद अली
मुबल्लिग सिल्-सिला कोनथरकलाँ

तिथि 31अगस्त 2022 ई. को जमाअत अहमदिया बानोछर, ज़िला बित्या बिहार में तर्बियती जलसा आयोजित हुआ। जलसे का आरंभ तिलवात क़ुरआन-ए-करीम से हुआ। जो कि विनीत वहीद नबी ने पढ़ी। इसके पश्चात श्रीमान दानियाल अहमद साहब ने नज़्म पढ़ी। श्रीमान कमरुल-हुदा साहब ने जलसे की सादरत की। दुआ के साथ जलसा समाप्त हुआ।

वहीद नबी
मोअल्लिम सिल्-सिला बानोछर

तिथि 16 सितंबर 2022 ई. को जमाअत अहमदिया सालेहनगर, ज़िला आगरा यू पी में तर्बियती जलसा आयोजित हुआ। जलसे का आरंभ तिलवात क़ुरआन-ए-करीम से हुआ। जो कि श्रीमान बारिक अहमद ने पढ़ी। इसके पश्चात श्रीमान रिज़वान अहमद साहब ने नज़्म पढ़ी। श्रीमान मुदस्सिर अहमद ने जलसे की प्रथम तकरीर की। अंत पर विनीत ने सम्बोधन किया। दुआ के साथ जलसा समाप्त हुआ।

सय्यद आफ़ाक अहमद
मोअल्लिम सिल्-सिला सालेहनगर, आगराह

तिथि 21 अगस्त 2022 ई. स्थान मस्जिद सलाम जमाअत अहमदिया यमनानगर, हरियाणा में नमाज़ की अहमियत के शीर्षक पर तर्बियती जलसा आयोजित हुआ। जलसे का आरंभ तिलवात क़ुरआन-ए-करीम से हुआ जो कि श्रीमान तकरीम अहमद ने पढ़ी।
हदीस हुस्नआरा साहिबा ने पढ़ी। सोनिया साहिबा ने जलसे की प्रथम तकरीर की। अंत पर विनीत ने नमाज़ की अहमियत और बकरात पर सम्बोधन किया। दुआ के साथ जलसा समाप्त हुआ।

सय्यद वहीदुद्दीन अहमद
मुबल्लिग सिल्-सिला यमनानगर हरियाणा

तिथि 21 अगस्त 2022 ई. स्थान मिशन हाऊस जमाअत अहमदिया यमनानगर, हरियाणा में अत्फ़ाल नासरात का (कूलूजमीया) एक साथ खाने का प्रबंध किया गया। इस प्रोग्राम की कुल उपस्थिति 5 की रही ।

सय्यद वहीदुद्दीन अहमद
मुबल्लिग सिल्-सिला यमनानगर हरियाणा

तिथि 28 अगस्त 2022 ई. स्थान मस्जिद सलाम जमाअत अहमदिया यमनानगर, हरियाणा में तर्बियती जलसा आयोजित किया। जलसे का आरंभ तिलवात क़ुरआन-ए-करीम से हुआ जो कि श्रीमान सुहैल अहमद ने पढ़ी।
इसके पश्चात नज़्म हुस्नआरा साहिबा ने पढ़ी। हदीस शरीफ तबस्सुम साहिबा ने पढ़ी। विनीत ने अंत पर सम्बोधन किया। दुआ के साथ जलसा समाप्त हुआ।

सय्यद वहीदुद्दीन अहमद
मुबल्लिग सिल्-सिला यमनानगर हरियाणा

तिथि 28 अगस्त 2022 ई. स्थान मिशन हाऊस जमाअत अहमदिया यमनानगर, हरियाणा में अत्फ़ाल नासरात का (कूलूजमीया) एक साथ खाने का प्रबंध किया गया। इस प्रोग्राम की कुल उपस्थिति 6 की रही ।

सय्यद वहीदुद्दीन अहमद
मुबल्लिग सिल्-सिला यमनानगर हरियाणा

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई. (भाग-8)

सय्यदना हज़रत अमीर अलमोमनेनख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामस् अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का दौरा अमरीका (सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.)

(5 अक्तूबर 2022 ई. बुधवार के दिन) शेष रिपोर्ट

वाकफ़ीन नौ की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ क्लास इसके बाद 7 बजे प्रोग्राम के मुताबिक़ वाकफ़ीन नौ की हुज़ूर अनवर के साथ क्लास शुरू हुई। 24 जमाअतों से 92 वाकफ़ीन नौ शामिल हुए।

क्लास का आग़ाज़ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ जो अज़ीज़म वलीद अहमद साहिब ने की और इस का अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद पेश किया। तिलावत का उर्दू अनुवाद अज़ीज़म लबीब अहमद ज़ाहिद ने पेश किया। इसके बाद अज़ीज़म उसामा ज़फ़र ऐवान ने आँहज़रत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस मुबारका और उसका अंग्रेज़ी अनुवाद पेश किया। हदीस मुबारका का निमंलिखित उर्दू अनुवाद अज़ीज़म अहद अहमद खान साहिब ने पेश किया।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

“जब अल्लाह तआला किसी बंदे से मुहब्बत करता है तो जिबराईल अलैहिस्सलाम को आवाज़ देता है कि अल्लाह अमुक से मुहब्बत करता है तुम भी उस से मुहब्बत करो। इसलिए जिबराईल अलैहिस्सलाम भी उस से मुहब्बत करते हैं। फिर वह आसमान में आवाज़ देते हैं कि अल्लाह अमुक से मुहब्बत करता है तुम भी उस से मुहब्बत करो। इसलिए आसमान वाले भी उस से मुहब्बत करने लगते हैं और इस तरह समस्त ज़मीन में भी उसे मक़बूलियत हासिल है।”

इसके बाद अज़ीज़म क़मर अहमद ख़ान साहिब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का निमंलिखित इक़तेबास पेश किया।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

“मुनाफ़िक़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सच्चा ताल्लुक़ न होने की वजह से आख़िर बेईमान रहे। उनको सच्ची मुहब्बत और इख़लास पैदा न हुआ। इस लिए لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ उनके काम न आया। तो उन ताल्लुक़ात को बढ़ाना बड़ा ज़रूरी काम है। यदि उनके ताल्लुक़ात को वह तालिब नहीं बढ़ाता और कोशिश नहीं करता तो इसका शिकवा और अफ़सोस बेफ़ाइदा है। मुहब्बत और इख़लास का ताल्लुक़ बढ़ाना चाहिए। जहां तक मुम्किन हो उस इंसान (मुर्शिद) के हम-रंग हो। तरीक़ों और एतेक़ाद में। नफ़्स लंबी उम्र के वादे देता है। यह धोखा है, आयु का एतबार नहीं है। जल्दी रास्तबाज़ी और इबादत की तरफ़ झुकना चाहिए और सुबह से लेकर शाम तक हिसाब करना चाहिए।”

(मल् फ़ूज़ात,भाग प्रथम, पृष्ठ 5)

इस इक़तेबास का अंग्रेज़ी अनुवाद अज़ीज़म फ़ायज़ अहमद ने पेश किया।

इसके बाद अज़ीज़म जलीस अहमद ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मंजूम कलाम

तक़्वा यही है यारो कि नख़ूवत को छोड़ दो
किबर ओ ग़रूर बुख़ल की आदत को छोड़ दो

सुंदर आवाज़ में पेश किया और इस उर्दू नज़म का अंग्रेज़ी अनुवाद अज़ीज़म आज़ीश अहमद ग़नी ने पेश किया।

इसके बाद वाकफ़ीन नौ ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की इजाज़त से सवालात किए।

एक वाक़िफ़ नौ नुमान अहमद फ़रीद ने यह सवाल किया कि मेरे ख़ुतूत के बहुत से जवाबात में हुज़ूर अनवर ने यह नसीहत फ़रमाई है कि नमाज़ में पाबंदी और तिलावत क़ुरआन-ए-करीम कामयाबी की कुंजी हैं। तो elon musk और jeff bezos जो नमाज़ नहीं अदा करते और खुदा को याद नहीं करते इतने कामयाब और दौलतमंद क्यों हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि क्या आप जानते हैं कि आपकी ज़िंदगी का उद्देश्य क्या है? अल्लाह तआला की इबादत करना है। मैंने अपने पिछले ख़ुतबा जुमा में ही इस बारे में वर्णन किया था। इन दुनियावी लोगों की ज़िंदगी का उद्देश्य एक आला दुनियावी मुक़ाम हासिल करना है। जब अल्लाह तआला ने आदम को पैदा क्या उस वक़्त शैतान ने आदम को सजदा करने से इंकार कर दिया। वजह उस का तकब्बुर और उसकी दुनियावी ख़ाहिशात थीं और फिर उसने अल्लाह को चैलेंज किया कि अक्सर लोग मेरी पैरवी करेंगे और मैं उन्हें सीधे रास्ते से भटका दूँगा और अल्लाह ने यह नहीं फ़रमाया कि तुम ऐसा नहीं कर सकते बल्कि अल्लाह-तआला ने कहा कि चंद लोग ऐसे होंगे जो नेक लोग होंगे वे मेरे अंबिया को तस्लीम करें गे जबकि वह संख्या में कम होंगे लेकिन आख़िर कार कामयाब होंगे और तुम उन पर ग़लबा नहीं पाओगे।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : आपका उद्देश्य दुनियावी ख़ाहिशात की पैरवी नहीं है, आपका उद्देश्य अल्लाह की मुहब्बत हासिल करना है और एक मोमिन मुत्तक़ी हमेशा मौत के बाद की ज़िंदगी के लिए अल्लाह की मुहब्बत हासिल करने की कोशिश करता है। क्योंकि नेक इन्सान को आख़िरत में अज्र मिलेगा और उन दुनिया दारों को दुनिया में ही अज्र मिलेगा। इसी लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उनकी दाएं आँख अंधी है, दीनी इलम की आँख अंधी है। उनकी बाईं आँख काम कर रही है ताकि वे दुनियावी विषयत में बढ़ें। इसलिए अगर आपकी ख़ाहिश केवल दुनियावी फ़ायदे की है तो निसंदेह आप अल्लाह और इस्लाम छोड़ कर जो चाहें कर सकते हैं। लेकिन अगर आपको निसन्देह है कि मौत के बाद ज़िंदगी है और वह अबदी ज़िंदगी है तो आपको अल्लाह की मुहब्बत यहां दुनिया और आख़िरत में हासिल होगी। क्या आप स्कूल नहीं जा रहे हैं? क्या आप अपनी पढ़ाई में अच्छे हैं ? क्या आपको अपनी दुनियावी ज़रूरीयात हासिल करने में किसी परेशानी का सामना है। आपको रोज़ाना का खाना मिल रहा है आप नाशता दोपहर का खाना खाते हैं और अच्छे कपड़े पहने हुए हैं इसलिए दुनिया की प्रत्येक चीज़ आप के लिए उपलब्ध है और आप दुआ कर रहे हैं।

हुज़ूर अनवर ने दरयाफ़त फ़रमाया आप भविष्य में क्या बनना चाहते हैं? इस पर वाक़िफ़ नौ ने जवाब दिया कि दिल का सर्जन। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया इसलिए अगर आपने यह लक्ष्य हासिल कर लिया है तो इस का मतलब है कि आपने अपनी दुनियावी ख़ाहिश हासिल कर ली है और इस के इलावा रोज़ाना पाँच बार अल्लाह तआला से दुआ मांगने और इसके अहकाम पर अमल करने से आपको आख़िरत में भी अज्र मिलेगा। जबकि उन लोगों को यह कभी नहीं मिलेगा इस लिए अब यह आपके हाथ में है आपको इंतेख़ाब करना है। आप दोनों अज्र चाहते हो या केवल एक, महज़ इस दुनिया के या दुनिया और आख़रत दोनों के अज्र। तो हम उन लोगों से बेहतर हैं। वे केवल दुनियावी फ़ायदे हासिल कर रहे हैं और हमें अल्लाह ने बताया है कि हमें दुनिया और आख़िरत में फ़ायदा मिलेगा। अतः हमारा उद्देश्य दुनिया नहीं है, मोमिन का उद्देश्य अल्लाह की मुहब्बत हासिल करना है। और अल्लाह की मुहब्बत हासिल करने के लिए आपको रुहानी मयार की बुलंदी और इन्सानियत की ख़िदमत के लिए भी मेहनत करनी होगी।

एक वाक़िफ़ नौ अज़ीज़म दानियाल जनजूआ ने यह सवाल किया कि वाकफ़ीन नौ को कौन से पेशों या विशेष फ़ील्ड का इंतेख़ाब करना चाहिए? क्या उन्हें अपने ज़ाती मुफ़ादात पर जमाअत के तक़ाज़ों को तर्जीह देनी चाहिए?

इसके जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : आपकी ज़ाती दिलचस्पी क्या है ? अगर आप जमाअत की मदद और मस्जिद और मिशन हाऊसज़ की तामीर के लिए और अच्छी जगह प्लाट हासिल करने के लिए रईल स्टेट एजैंट पेशा का इंतेख़ाब करते हैं तो यह आप के लिए अच्छा है।

आप वक़्फ़-ए-नो हैं तो वक़्फ़ का मतलब है कि आपको अल्लाह की राह में काम करना पड़ेगा। वक़्फ़ नौ होने के नाते आपकी अव्वलीन तर्जीह यह होनी चाहिए कि वह केरीयर चुनें जो जमाअत के लिए ज़्यादा फ़ायदामंद हो। और अगर आपको

लगता है कि आप यह फ़र्ज़ अदा नहीं कर सकते और आप वक़्फ़-ए-की इस शर्त को पूरा नहीं कर सकते तो आप जो चाहें करें लेकिन इस के लिए आपको मर्कज़ से इजाज़त लेनी पड़ेगी। मुझे लिखो फिर मैं आपको बता दूँगा। लेकिन अगर आप रियल स्टेट एजैंट बनना चाहते हैं, तो कम से कम आप दीन सीखे और अपने दीनी इलम में इज़ाफ़ा करें और दीन के बारे में मज़ीद जानें, नमाज़ पढ़ें, क़ुरआन-ए-करीम पढ़ें, क़ुरआन का मतलब सीखे और फिर इस्लाम की तब्लीग़ करें। अपने बिज़नस के दौरान भी आप तब्लीग़ कर सकते हैं काफ़ी संख्या में लोग आपके पास आएँगे। इसलिए हमेशा याद रखें कि आप बराह-ए-रास्त जमाअत के तहत काम करते हैं या बिलावास्ता जहां भी काम करें लेकिन आपका असल उद्देश्य अल्लाह के पैग़ाम की तब्लीग़ होना चाहिए। आपको अल्लाह के अहकाम की तामील करनी होगी और दीन के बारे में मज़ीद जानने की कोशिश करनी होगी। अपनी पाँच नमाज़ें पढ़ कर अल्लाह के साथ अच्छा ताल्लुक़ क़ायम करने की कोशिश करनी होगी।

एक वाक़िफ़-ए-नौ अज़ीज़म रमीज़ मिर्ज़ा ने यह सवाल पूछा कि मैं नमाज़ पढ़ने और क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत करने की पूरी कोशिश करता हूँ लेकिन ज़्यादा-तर मैं इसलिए करता हूँ कि मुझे उन चीज़ों के करने की पाबंदी है, इसलिए नहीं कि मुझे यह पसंद हैं। मैं इन चीज़ों से मुहब्बत करना और उन चीज़ों में ख़ुशी महसूस करना कैसे सीखूँ?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आप फ़ज्र की अदायगी में कितना वक़्त लगाते हैं ? क्या नमाज़ पढ़ते हुए सज्दे में कभी अल्लाह के सामने रोने का अवसर मिला है। क्या नमाज़ पढ़ते हुए आपके दिल में इतमेनान पैदा होता है। ज़रूरी नहीं कि हर वक़्त एक ही मयार की नमाज़ पढ़ो। उतार चढ़ाओ इन्सानी फ़ित्रत का हिस्सा है लेकिन अगर आप एक-बार नमाज़ पढ़ने की लज़्ज़त चख चुके हैं तो मुझे नहीं लगता कि आपको इस किस्म का सवाल उठाना चाहिए। आप कहते हैं कि आप नमाज़ पढ़ते हैं, आपने अपने सज्दे का लुतफ़ उठाया और इतमेनान महसूस किया। क्या कभी ऐसा हुआ है कि नमाज़ के बाद आपके दिल में इतमेनान पैदा हुआ। इस पर वाक़िफ़-ए-नौ ने जवाब दिया कि सुकून और इतमेनान तो है लेकिन अक्सर मुझे यह लगता है कि मैं मजबूरन कर रहा हूँ।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आप अपनी दिन की समस्त नमाज़ों के लिए ज़्यादा ज़्यादा 40-45 मिनट ख़र्च करते हैं। जबकि होमवर्क के लिए स्कूल के बाद अपनी पढ़ाई के लिए आप दिन में 2 या 3 या 4 घंटे पढ़ते हैं। इसलिए आप यह नहीं कह सकते कि आप अपनी नमाज़ों के साथ इन्साफ़ कर रहे हैं। ये एक process है। इस में वक़्त लगेगा। अगर आप नमाज़ जारी रखें तो सज्दे में अल्लाह से ये मांगें कि मेरे रुहानी दर्जात को बढ़ा दे मेरे दिल में इतमेनान अता फ़र्मा और मुझे हमेशा अपने क़रीब रख। अगर आप इस तरह अल्लाह का क़ुरब हासिल करते रहें और उस से मांगते रहते हैं तो एक दिन आप ज़्यादा इतमेनान महसूस करेंगे। ये एक process है। अंबिया को भी 25 वर्ष की उम्र में नहीं बल्कि 40 वर्ष में नबुव्वत का दर्जा मिल जाता है, इसलिए आपको साबित-क़दम रहना चाहिए। एक दिन आप महसूस करेंगे कि आपका अल्लाह से अच्छा ताल्लुक़ है और आप अल्लाह से दुआ किए बग़ैर नहीं जी सकते।

एक वाक़िफ़ नौ अज़ीज़म अब्दुल मुकीत ख़ान ने यह सवाल किया कि मुझे जामेआ की तैयारी के लिए क्या करना चाहिए ? जामिआ जाने की अपनी ख़ाहिश पर पूरा उतरने के लिए मैं कौन सी दुआएं पढ़ूं?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: । क्या आप रोज़ाना पाँच नमाज़ें पढ़ते हैं, आपको नमाज़ के अर्थ मालूम हैं, सज्दे में अल्लाह से अच्छे मुरब्बी बनने के लिए दुआ करते हैं? क्या आप क़ुरआन-ए-करीम पढ़ना जानते हैं, क्या आप रोज़ाना तिलावत क़ुरआन-ए-करीम करते हैं ? अगर नहीं तो फिर आप रोज़ाना एक या दो रूकू पढ़ें और इस के अर्थ भी जानने की कोशिश करें। इस के इलावा, क्या आपके अख़लाक़ अच्छे हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताब का कुछ हिस्सा रोज़ाना पढ़ने की कोशिश करें। essence of islam किताब से इक़्तेबासात पढ़ा करें। जिस मज़मून को आप पढ़ रहे हैं उसे जज़्ब करने और समझने की कोशिश करें। तब आपको मालूम होगा कि दीन क्या है। आपको सूरः फ़ातेहा का मतलब मालूम होना चाहिए, क़ुरान-ए-पाक पढ़ें। यह जामिआ के तालिब-इल्म के लिए बुनियादी तौर पर ज़रूरी है और आपको अहमदियत के बारे में उमूमी इलम होना चाहिए। आपको अहमदियत के बारे में मज़ीद जानने की भी कोशिश करनी चाहिए, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कब मसीह होने का दावे किया, आपने पहली बैअत कब ली, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो कब पैदा हुए। अहमदियत की तारीख़ का इलम होना चाहिए। यह दुआ भी पढ़ा करें رَبِّ اِنِّیْ لِمَاۤ اَنْزَلْتَ اِلَیَّ مِنْ خَیْرٍ فَقِیْرٌ - मुझे यह दुआ पसंद है और आपको भी पढ़नी चाहिए।

शेष पृष्ठ 20 पर

اَلْاَمْرِ بِلُزُوْمِ الْجَمَاعَةِ عِنْدَ ظُهُوْرِ الْفِتَنِ، بحوالہ حدیقۃ الصالحین مصنفہ مکرم (مولانا ملک سیف الرحمٰن صاحب مرحوم حدیث نمبر 631

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैं ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना जिसने अल्लाह तालाकी इताअत से अपना हाथ खींचा वह अल्लाह तआला से (क़ियामत के दिन) इस हालत में मिलेगा कि न उसके पास कोई दलील होगी न उज़्र। और जो शख़्स इस हाल में मरा कि उसने इमाम-ए-वक़्त की बैअत नहीं की थी तो वह जाहिलियत और गुमराही की मौत मरा। और एक रिवायत में है कि जो इस हाल में मरा कि वह जमाअत से जुदा रहा।

इमाम-ए-वक़्त की बैअत न करना और जमात से जुदा रहना यह दरअसल एक ही बात है।

पृष्ठ 2 का शेष

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍؓ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ رَاٰی مِنْ اَمِیْرِهٖ شَیْئًا یَکْرَهُهٗ فَلْیَصْبِرْ عَلَیْهِ فَاِنَّهٗ مَنْ فَارَقَ الْجَمَاعَةَ شِبْرًا فَیَمُوْتُ مِیْتَةً جَاهِلِیَّةً۔
(بخاری کتاب الفِتَن بَابُ قَوْلِ النَّبِیِّ سَتَرَوْنَ بَعْدِیْ اُمُوْرًا، بحوالہ حدیقۃ الصالحین حدیث نمبر 632)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स अपने सरदार और अमीर में कोई ऐसी बात देखे जो उसे पसंद न हो तो सब्र से काम ले क्योंकि जो शख़्स जमाअत से एक बालिशत भी दूर होता है वह जाहिलियत की मौत मरेगा।

عَنِ الْحٰرِثِ الْاَشْعَرِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ اَمَرَ یَحْیَی بْنَ زَکَرِیَّا عَلَیْهِمَا السَّلَامَ بِخَمْسِ کَلِمَاتٍ .... وَاَنَا آمُرُکُمْ بِخَمْسٍ اَللّٰهُ اَمَرَنِیْ بِهِنَّ، بِالْجَمَاعَةِ وَالسَّمْعِ وَالطَّاعَةِ وَالْهِجْرَةِ وَالْجِهَادِ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ فَاِنَّهٗ مَنْ خَرَجَ مِنَ الْجَمَاعَةِ قِیْدَ شِبْرٍ فَقَدْ خَلَعَ رِبْقَةَ الْاِسْلَامِ مِنْ عُنُقِهٖ اِلَّا اَنْ یَّرْجِعَ وَمَا دَعَا بِدَعْوَی الْجَاهِلِیَّةِ فَهُوَ مِنْ جِثَاءِ جَهَنَّمَ قَالُوْا یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَاِنْ صَامَ وَاِنْ صَلّٰی قَالَ وَاِنْ صَامَ وَاِنْ صَلّٰی وَزَعَمَ اَنَّهٗ مُسْلِمٌ فَادْعُوا الْمُسْلِمِیْنَ بِاَسْمَائِهِمْ بِمَا سَمَّاهُمُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ اَلْمُسْلِمِیْنَ الْمُؤْمِنِیْنَ عِبَادَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ۔ (مسند احمد جلد ۵ صفحہ ۱۳۰، صفحہ ۲۰۲، صفحہ ۳۴۴، بحوالہ حدیقۃ الصالحین حدیث نمبر 158)

हज़रत हसर अशरी रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने हज़रत यहया बिन ज़करीया अलैहिस्सलाम को पाँच बातों का हुक्म दिया था ... और मैं भी तुमको इन पाँच बातों का हुक्म देता हूँ जिनका अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है। (1) जमाअत के साथ रहो (2) इमाम-ए-वक़्त की बातें सुनो (3) और उस की इताअत करो (4) दीन की ख़ातिर वतन छोड़ना पड़े तो वतन छोड़ दो (5) और अल्लाह के रास्ता में जिहाद करो । अतः जो शख़्स जमाअत से थोड़ा सा भी अलग हुआ उसने इस्लाम को छोड़ दिया। सिवाए उसके कि वह पुनः निज़ाम-ए-जमाअत में शामिल हो जाएगा। और जो शख़्स जाहिलियत की बातों की तरफ़ बुलाता है वह जहन्नुम का ईंधन है। सहाबा ने अर्ज़ किया। हे अल्लाह के रसूल ख़ाह ऐसा शख़्स नमाज़ भी पढ़ता हो और रोज़ा भी रखता हो। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हाँ ख़ाह वह नमाज़ भी पढ़े और रोज़ा भी रखे और अपने आपको मुस्लमान भी समझे लेकिन हे अल्लाह जल्ल् शानहू के बंदो ये बात याद रखो कि (इस सूरत-ए-हाल के बावजूद) जो लोग अपने आपको मुस्लमान कहें उन्हें तुम भी मुस्लमान कहो। क्योंकि अल्लाह तआला ने (त्युन के लिए) इस उम्त का नाम मुस्लमान और मोमिन रखा है (इसलिए सायर को तुम हवाला बख़ुदा करो)

अतः मुंदरजा बाला अहादीस से पता चलता है कि इमाम के साथ जुड़ कर रहने और जमाअत के साथ रहने की किस क़दर हमारे प्यारे आक़ा सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ताकीद फ़रमाई है। यहां तक ताकीद है कि अगर तुम्हारे साथ नाइंसाफ़ी या ज़्यादती हो तब भी जमाअत के साथ रहना है और जमात से अलग नहीं होना है। अल्लाह तआला हमारे मुस्लमान भाईयों को तौफ़ीक़ अता फ़रमाए कि वह ख़िलाफ़त अहमदिया के साथ और जमाअत अहमदिया के साथ जुड़ कर अपनी आक़िबत संवारने वाले हों। आमीन। यह अहादीस उन अहमदियों के लिए भी है जो नाराज़ हो कर निज़ाम जमात से अलग हो जाते हैं ओर अपनी दुनिया-ओ-आक़िबत ख़राब करलेते हैं। अल्लाह तआला हमें हर हाल में निज़ाम-ए-जमाअत से मुंसलिक रहने और ख़िलाफ़त की दिल-ओ-जान से इताअत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

(मंसूर मसरूर)

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 18-25 March 2023 Issue No. 20-21

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

सदर अंजुमन अहमदिया,अंजुमन तहरीक-ए-जदीद, अंजुमन वक़्फ़-ए-जदीद कादियान में ख़िदमत की इच्छा रखने वाले ध्यान दें

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान की वैकेंसी दर्जा दोम के लिए शर्तें

(1) अभ्यर्थी की आयु 25 वर्ष से अधिक और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी की शिक्षा कम से कम 10+2 45% फ़ीसद नंबरात के साथ होनी चाहिए। (3)अभ्यर्थी उर्दू/अंग्रेज़ी कम्पोज़िंग जानता और तेज़ी 25 शब्द प्रति मिनट हो। (4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगें उन्हीं पर ग़ौर होगा। (5) निसाब परीक्षा कमीशन बराए कारकुनान दर्जा दोम निम्नलिखित है। परीक्षा के प्रत्येक भाग में सफल होना अनिवार्य है।

प्रथम भाग

★ क़ुरआन-ए-करीम नाज़रा मुकम्मल। पहला पारः अनुवाद सहित
चालीस जवाहर पारे, अरकान-ए-इस्लाम, पूर्ण नमाज़ अनुवाद सहित। (30 अंक)

द्वितीय भाग

★ कशती-ए-नूह, बरकातुद-दुआ, दीनी मालूमात
जमाअत अहमदिया के अकायद के विषय में मजमून, दुर्रे समीन से नज़्म (शान-ए-इस्लाम) (20 अंक)

तृतीय भाग

★ अंग्रेज़ी भाषा इंटरमीडीयेट के मयार के अनुसार (10+2) (20 अंक)

चतुर्थ भाग

★ हिसाब मैट्रिक के मयार के अनुसार (दफ़्तरी इमपरस्ट से संबधित प्रश्न) (20 अंक)

पंचम भाग

★ साधारण ज्ञान (G.K) (10 अंक)

(6) लिखित परीक्षा में सफल होने वाले अभ्यर्थीयों का ही इंटरव्यू होगा। (7) लिखित परीक्षा, कम्पयूटर टैस्ट और इंटरव्यू में सफलता की सूरत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल कादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल की तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे। (8) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को कादियान में अपने रहने का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। (9) सफ़र ख़र्च कादियान आना जाना अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।

(नोट : लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

ग्रेड दर्जा चहारुम बराए माली/केयरटेकर/चौकीदार/बावर्ची/नानबाई/ख़ादिम मस्जिद के लिए शर्ते

विभाग सदर अंजुमन अहमदिया, अंजुमन तहरीक-ए-जदीद, अंजुमन वक़्फ़-ए-जदीद कादियान

(1) अभ्यर्थी की आयु 40 वर्ष से ज़ायद और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी की तालीम की कोई शर्त नहीं है। (3) जन्म प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना ज़रूरी होगा। (4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगी उन्हीं पर ग़ौर होगा। (5) वही अभ्यर्थी ख़िदमत के लिए जाऐंगे जो मर्कज़ी कमेटी बराए भर्ती कारकुनान के इंटरव्यू में सफल होंगे। (6) इंटरव्यू में सफलता की सूरत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल कादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल के तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के मुताबिक़ सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे। (7) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को कादियान में अपनी रिहायश का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। (8) कादियान आने जाने का सफ़र ख़र्च अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।

(नोट : लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें।

नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान पिन कोड 143516

मोबाइल : 09682627592, 09682587713, दफ़्तर01872-501130

E-mail: diwan@qadian.in

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad